जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 44 संख्याः 59 प्रभात बीकानेर, शुक्रवार 23 सितम्बर, 2022 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

एक नए डेटा के अनुसार गत 30 वर्षों में 11 लाख से अधिक सी टर्टल्स को अवैध रुप से मारा गया है। एरिज़ोना स्टेट युनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों का अनुमान है कि, संरक्षण कानून होने के बावजूद गत एक दशक में 655 देशों में हर वर्ष 44000 कछुओं मारे गए हैं। एरिज़ोना स्टेट युनिवर्सिटी में असिस्टेंट रिसर्च प्रोफेसर तथा शोध की एक प्रमुख लेखक जैस्सी सैंको ने कहा, ''यह संख्या बहुत ही अधिक है लेकिन फिर भी वास्तविक संख्या से कम ही है। क्योंकि किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि का आकलन कर पाना आसान नहीं होता।'' संयुक्त राष्ट्रसंघ के अनुसार सी टर्टल का भोजन के लिए शिकार किया जाता है। इसके अलावा कलाकृतियां, घरेलू सज्जा और आभूषणों के लिए भी इन्हें पकड़ा जाता है। अवैध वाइल्डलाइफ मार्केट में टर्टल के अवैध व्यापार की हिस्सेदारी 23 अरब डॉलर है। टर्टल का अवैध शिकार कितना है इसे जानने के लिए शोधकर्ताओं ने विभिन्न जर्नल्स में छपे 209 आर्टिकल्स, मीडिया रिपोर्ट्स, संरक्षण संगठनों की रिपोर्ट्स आदि का अध्ययन किया तथा सभी साबुत टर्टल एवं टर्टल के बायप्रॉडक्ट्स, जैसे सिर, पूँछ, शैल आदि को भी देखा। शोध से पता चला कि 1990 से 2010 के बीच लगभग 43,000 टर्टल्स की तस्करी हुई, लेकिन यह अनुमान संभवतया मूल संख्या से फिर भी बहुत कम है। साउथ ईस्ट एशिया और मैडागास्कर सी टर्टल शिकार के ''हॉटस्पॉट'' हैं और सी टर्टल की लगभग सारी तस्करी वियतनाम से शुरु होती है। चीन व जापान सी टर्टल उत्पादों का सबसे लोकप्रिय बाजार हैं। सैंको कहते हैं, जब तक अमीर देशों में टर्टल के उत्पादों की मांग रहेगी तब तक विकासशील देश टर्टल की आपूर्ति करते रहेंगे। कई देशों में तो घरों में ''स्टफ्ड टर्टल'' रखना स्टेटस सिम्बल माना जाता है। जिन टर्टल्स का शिकार होता है उनमें 95 प्रतिशत संख्या ग्रीन टर्टल और हॉक्सबिल टर्टल की है। ओशनिक सोसायटी के अध्यक्ष रॉडरिक मास्ट ने बताया कि, ग्रीन टर्टल का मांस बेहद स्वादिष्ट माना जाता, इनका जो पल्प या मीट होता है उसे लोग बहुत पसंद करते हैं। वहीं, हॉक्सविल का उसके खूबसूरत शैल के लिए शिकार किया जाता है। ये प्रजातियां क्रमशः संकटग्रस्त व गंभीर रुप से संकटग्रस्त श्रेणी में सूचीबद्ध हैं। तथापि, रिपोर्ट से यह भी सामने आया है कि गत दस वर्षों में सी टर्टल का अवैध शिकार 28 प्रतिशत घटा है और इसका कारण है इस जीव को लगातार मिल रहा कानूनी संरक्षण।

आखिर ऊंट पहाड़ के नीचे आ ही गया

राहुल गांधी के सख्त रवैये के कारण गहलोत होश में आये और कांग्रेस अध्यक्ष के साथ-साथ राजस्थान का मु.मंत्री बने रहने की अपनी मांग को ''ड्रॉप'' किया

- गहलोत, जो गुरूवार की सुबह मुम्बई से कोच्चि पहुंचे थे, देर रात को राहुल गांधी के साथ दिल्ली लौटेंगे तथा गांधी परिवार के तीनों सदस्यों, सोनिया गांधी, राहुल गांधी व प्रियंका गांधी से बात करेंगे तथा सचिन पायलट को मु.मंत्री बनने से रोकने का अंतिम प्रयास करेंगे।
- राजस्थान के मु.मंत्री पद के लिये चल रहे संघर्ष में फिलहाल पायलट, गहलोत से कुछ कदम आगे हैं।
- गहलोत सोनिया गांधी से मिले, उससे एक दिन पहले पायलट सोनिया गांधी से मिलकर राजस्थान की राजनीतिक स्थिति पर चर्चा करके अपना पक्ष पूरी तरह समझा कर केरल चले गये थे।
- राहुल गांधी से मिलने जब गहलोत कोच्चि पहुंचे, उससे पहले पायलट को, पदयात्रा में चलते-चलते राहुल को अपनी बात समझाने का पूरा अवसर मिला।
- बसपा नेता राजेन्द्र सिंह गुढ़ा ने भी पाला बदलते हुए, साफ कहा, जिस व्यक्ति को कांग्रेस हाई कमान मु.मंत्री बनाना उचित समझता है, बसपा से कांग्रेस में आये विधायक उसी का साथ देंगे।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। आखिर ऊँट पहाड़ के नीचे आ ही गया!!

राहुल गांधी द्वारा अपनाये गये कड़े रुख के बाद, अशोक गहलोत अपने होशो-हवास में आ गये तथा उन्होंने अपनी यह माँग छोड़ दी कि उन्हें कांग्रेस अध्यक्ष बनने के साथ-साथ, मुख्यमंत्री भी बना रहने दिया जाये।

गहलोत ने आखिरकार यह कह ही दिया कि वे दोनों पदों के साथ न्याय नहीं कर सकते तथा मुख्यमंत्री पद से हट जायेंगे।

गहलोत के रुख में यह परिवर्तन उस समय आया, जब राहुल गांधी ने केरल में अपनी प्रैस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पार्टी उदयपुर चिन्तन शिविर में पारित ''एक व्यक्ति, एक पद'' के प्रस्ताव पर अमल करेगी। इसके बाद गहलोत ने हार मान ली तथा त्याग पत्र देने के लिए राजी हो गये।

लेकिन सचिन पायलट को मुख्यमंत्री की कुर्सी से दूर रखने की कोशिश अभी भी नहीं छोड़ी है।

गहलोत चाहते थे कि वे गांधी परिवार के तीनों सदस्यों से मिलकर, स्थिति पर चर्चा करें।

इसलिये, गहलोत, जो राहुल गांधी से मिलने आज सुबह मुम्बई से केरल पहुँचे थे, आज देर रात गये राहुल को दिल्ली ला रहे हैं। दिल्ली आने के बाद, आज देर रात गये तीनों गांधियों के साथ गहलोत की मीटिंग होगी।

यह सचिन पायलट को मुख्यमंत्री बनने से रोकने का गहलोत का अंतिम प्रयास होगा।

लेकिन वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह जो राहुल गांधी के पक्ष में पूरी तरह मुखर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक और भारत जोड़ो यात्रा

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। भारत जोडो यात्रा, जो अभी केरल से गुजर रही है, को मिले जन समर्थन से उत्साहित कांग्रेस ने तय किया है कि अगले वर्ष

- भारत जोड़ो यात्रा को मिले भारी समर्थन से उत्साहित कांग्रेस अगले वर्ष एक और भारत जोड़ो यात्रा का आयोजन करेगी। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता, जयराम रमेश ने कहा कि, यह यात्रा पूर्व से पश्चिम तक निकाली जाएगी।

पूर्व से पश्चिम तक इसी तरह की यात्रा आयोजित की जाएगी।

कांग्रेस प्रवक्ता जयराम रमेश ने केरल के न्जलकम जमात कान्वैंशन सैंटर में हुई एक प्रैस कॉन्फैस में कहा कि ऐसी ही एक और भारत जोड़ो यात्रा होगी जिसमें बिहार झारखंड और उत्तर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक हिजाब पर दो अलग-अलग कहानियां क्यों, कर्नाटक व तमिलनाडू में

- कर्नाटक सरकार ने स्कूल युनिफॉर्म के साथ हिजाब पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया है।
- पर, तमिलनाडू में एक हैडमिस्ट्रेस ने दो मुस्लिम छात्राओं को अपना हिजाब उतार कर, अपने बैग में रखने के आदेश दिये तो, शिक्षा विभाग ने तुरंत स्कूल व हैडमिस्ट्रेस को साफ कहा कि, छात्राएं अपने आप निर्णय ले सकती हैं, उन्हें हिजाब पहनना है या नहीं तथा स्कूल प्रशासन की इस मुद्दे पर कोई भूमिका नहीं है।
- कर्नाटक सही है या तमिलनाडू, यह तो हिजाब के मसले पर सुप्रीम कोर्ट में चल रही लम्बी सुनवायी के बाद, आने वाला सुप्रीम कोर्ट का फैसला ही निर्धारित करेगा।

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। यह कहानी हिजाब और दो राज्यों-कर्नाटक एवं तमिलनाडू की है, जहां अल्पसंख्यक समुदाय की बालिकाएं दुपट्टा या स्कार्फ पहनती हैं। हिजाब का मुद्दा इन दोनों राज्यों की सरकारों की प्राथमिकताओं की और भी संकेत करता है। कर्नाटक में स्कूलों में हिजाब पर रोक लगाने को महत्व दिया गया है, जो एक ऐसा मुद्दा बन गया है जिसमें दो समुदायों के बीच की शांति को गड़बड़ा देने की क्षमता है। वहीं इस मुद्दे पर पड़ोसी राज्य तमिलनाडू का सोच ठीक इसके विपरीत है। तमिलनाडू ने हिजाब पहनने के मामले में बालिकाओं की पसंद-नापसंद में किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप से इंकार कर दिया है।

कर्नाटक में हिजाब को लेकर काफी कुछ हुआ है। राज्य सरकार ने इस परम्परा पर सख्त रूख दिखाते हुए, इसके स्कूलों-कॉलेजों में पहने जाने पर पाबंदी लगा दी है तथा ऐसा करने के औचित्य के लिये स्कूल-कॉलेजों की यूनिफॉर्मों (जहां ये लागू हैं) से संबंधित नियमों-कानूनों का हवाला दिया है तथा अल्पसंख्यक समुदाय की तरफ से इसकी अपेक्षित प्रतिक्रिया सामने आई है। कर्नाटक के शहर और कस्बे जमीनी तनाव के साक्षी हैं तथा इसे लेकर अशोभनीय घटनाओं को रोकने के लिये सरकार को सुरक्षा व्यवस्था सख्त करनी पड़ी थी। हिजाब विवाद सर्वोच्च न्यायालय में भी पहुंच गया है।

प्रसंगवश बता दें, सर्वोच्च न्यायालय में हिजाब के विवाद लम्बी कानूनी कार्यवाही चली है तथा सभी पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद, अदालत ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'द तिरूमला गाइड'

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। इसमें कोई अचरज नहीं है कि आंध्र प्रदेश के चितूर जिले के तिरुपति बालाजी मंदिर ने भी समस्याओं से निजात पाने के लिए

- तिरूपति बालाजी मंदिर ट्रस्ट अब मंदिर में आने वाले भक्तों की आम समस्याओं को दूर करने के लिए सॉफ्टवेयर तकनीक का इस्तेमाल कर रहा है। ट्रस्ट ने ''तिरूमला गाइड'' नाम का एक मोबाइल एप बनाया है, जिससे अलग-अलग भाषाओं वाले श्रद्धालुओं को मदद मिल सकती है।

सॉफ्टवेयर तकनीक का सहारा लिया है। आंध्र प्रदेश सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में विकास के लिए जाना जाता है। तिरुमला तिरुपति देवस्थानम् ट्रस्ट जो कि वैटिकन के बाद विश्व के दूसरे सबसे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'निर्धन सवर्णों को दिया गया 10 प्रतिशत आरक्षण हर प्रदेश में अगल-अलग होगा'

- एटॉर्नी जनरल व सॉलिसिटर जनरल ने सुप्रीम कोर्ट में दलील दी कि, सरकारी नौकरी व उच्च शिक्षा में दिया गया यह आरक्षण स्थायी नहीं है, क्योंकि राज्य की आर्थिक परिस्थिति देखते हुए लागू होगा और माली हालत ठीक होने पर आरक्षण वापस भी लिया जा सकता है।
- यह भी तर्क दिया गया कि, इस आरक्षण की सुविधा में केवल निर्धन सवर्ण ही शामिल हैं और एस.सी., एस.टी. व ओ.बी.सी. नहीं, क्योंकि इन तीनों वर्गों को पहले ही 50 प्रतिशत आरक्षण प्राप्त है और ढाई-ढाई प्रतिशत आरक्षण जोड़ा गया तो, सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय 50 प्रतिशत की सीमा का उल्लंघन होगा।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। केन्द्र सरकार ने बुधवार को सुप्रीम कोर्ट को बताया कि सवर्ण जातियों के इकोनॉमिकली वीकर सैक्शन्स (ई.डब्ल्यु.एस.) के लिए आरक्षण 10 प्रतिशत तक है, जिसका मतलब है कि यह उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर राज्य दर राज्य अलग-अलग हो सकता है।

ई.डब्ल्यु.एस. को आरक्षण उपलब्ध करवाने वाले संविधान के 103वें संशोधन का पक्ष लेते हुए अटॉर्नी जनरल के.के. वेगुगोपाल के चीफ जस्टिस उदय उमेश ललित, जस्टिस दिनेश महेश्वरी, जस्टिस एस. रविन्द्र भट, जस्टिस बेला एम. त्रिवेदी और जे.बी. पारदीवाला से युक्त पांच जजों की संविधान बैंच को बताया कि ई.डब्ल्यु.एस. आरक्षण उन आर्थिक कठिनाईयों का समाधान करने के लिए है जो जनरल कैटेगरी की आबादी के 18.2 करोड़ गरीब लोगों को उच्च शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करने और सरकारी नौकरियां लेने से रोकती हैं। उन्होंने कहा कि एस.सी. और एस.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'जो फैसला हाई कमान करेगा हम उसके साथ हैं'

जयपुर, 22 सितम्बर (का.प्र.)। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने तथा उनके स्थान पर नया मुख्यमंत्री बनाए जाने की चर्चाओं के बीच राजस्थान के विधायकों के सुर बदलने लगे हैं।

अब तक मुख्यमंत्री खेमे के साथ

- बसपा नेता राजेन्द्र गुढ़ा ने राजस्थान में सरकार का तख्ता पलटने पर अपना ''स्टैण्ड'' स्पष्ट किया।

रहे और अपने बयानों को लेकर चर्चित बसपा से जीतकर कांग्रेस में शामिल होने वाले विधायकों ने भी अपना पुराना स्टैंड बदलने के संकेत दे दिए हैं और कहा है कि सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी, राहुल गांधी जिसे भी मुख्यमंत्री बनाएंगे, वह उसके साथ हैं।

सचिन पायलट या किसी दूसरे चेहरे को मुख्यमंत्री बनाने के सवाल पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'मैं किसी के नाम की न चर्चा करता हूँ न कर रहा हूँ, देखना यह है कि, कौन आए, जिससे पार्टी एकजुट रहे और सरकार रिपीट हो'

गहलोत ने यह भी कहा कि, अध्यक्ष का पद, एक व्यक्ति एक पद के दायरे में नहीं आता, लेकिन इतिहास में कोई कांग्रेस अध्यक्ष मुख्यमंत्री नहीं रहा, इसलिए फैसला करना पड़ा

- पायलट को मुख्यमंत्री बनाने के सवाल पर अशोक गहलोत ने कहा, जो हालात राजस्थान के अंदर हैं, हाई कमान स्टडी करेगा और देखेगा कि, विधायकों की क्या भावना है।
- इस बीच उप मुख्यमंत्री पद के लिए गोविंद डोटासरा और शांति धारीवाल के नाम की चर्चा शुरू हुई, वहीं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद पर ब्राह्मण चेहरा लाने की बात हो रही है।

जयपुर, 22 सितम्बर (का.प्र.)। राहुल गांधी ने गुरुवार को कोच्चि में पार्टी अध्यक्ष पद के दावेदार और राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की, पार्टी अध्यक्ष पद और मुख्यमंत्री पद, दोनों अपने पास रखने की इच्छा के विपरीत कहा कि, उदयपुर अधिवेशन में एक व्यक्ति एक पद पर हमने जो फैसला किया था, वह कायम रहेगा। दूसरी ओर सचिन पायलट के नाम पर ऐतराज होने के सवाल पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा, ''मैं किसी के नाम की न चर्चा करता हूं और न कर रहा हूं। हमें यह देखना है कि कौन आए, जिससे मैसेज जाए कि पार्टी एकजुट है और हम किसी भी कीमत पर सरकार रिपीट करें। जिससे अन्य राज्यों में भी पार्टी फिर से खड़ी हो। यह बहुत बड़ा फैसला होगा और यह सोच-समझकर लेना पड़ेगा।''

दरअसल यह सवाल इसलिए आया क्योंकि कयास लगाए जा रहे हैं कि, अशोक गहलोत के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर ब्राह्मण चेहरे के तौर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी को लाया जा सकता है। इसका कारण यह बताया जा रहा है कि, जोशी राहुल गांधी के साथ काम कर चुके हैं और उनके रहते अशोक गहलोत खेमा किसी तरह की नाराजगी नहीं जताएगा।

मुख्यमंत्री गहलोत ने एक दिन पहले ही दिल्ली पहुंचने पर कहा था कि, एक व्यक्ति एक पद वाला नियम नॉमिनेटेड पोस्ट पर लागू होता है। लेकिन पहले दिग्विजय सिंह ने कहा, फिर, गुरुवार को राहुल गांधी ने उदयपुर डैक्लरेशन के अनुसार एक व्यक्ति एक पद का फार्मूला लागू होने पर मोहर लगा दी, जिसके बाद गहलोत ने गुरुवार को कह दिया कि, अध्यक्ष का पद, एक व्यक्ति एक पद के दायरे में नहीं आता, लेकिन इतिहास में कोई कांग्रेस अध्यक्ष मुख्यमंत्री नहीं रहा, इसलिए फैसला करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, अशोक गहलोत ने यह भी कहा कि, मुख्यमंत्री को लेकर फैसला, विधायकों की मर्जी जैसी होगी वैसे होगा। हालांकि यह बात लागू इसलिए नहीं होती है, क्योंकि कांग्रेस में हमेशा विधायक दल की बैठक में फैसला आलाकमान पर छोड़ा जाता है और आलाकमान जिस नाम पर मुहर लगाता है वही मुख्यमंत्री बनता है। खुद अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बने तब भी हमेशा इसी तरह से फैसला होता रहा है। ऐसे में विधायक दल की बैठक होना मात्र औपचारिकता ही रहेगी और फैसला, जैसा गांधी परिवार चाहेगा वैसा ही होगा।

इधर कोच्चि पहुंचे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की राहुल गांधी से चर्चा हुई। वहीं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा भी कोच्चि पहुंचे और राहुल गांधी के साथ भारत जोड़ो यात्रा में शामिल हुए। राजस्थान में मुख्यमंत्री पद पर बदलाव होना तो निश्चित है, लेकिन अब राजस्थान में दो उप मुख्यमंत्री बनाए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

हिंसा के मुकाबले में लाचारी का भाव आना अहिंसा नहीं कायरता है। अहिंसा को कायरता के साथ नहीं मिलाना चाहिए। –महात्मा गाँधी

क्या हिजाब के विवाद के निराकरण का कोर्ट के अतिरिक्त अन्य विकल्प भी हो सकता है?

ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हम हिन्दू-मुसलमान हमारी गंगा जमुनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। हमें गर्व था कि संविधान ने जहाँ देश को धर्मनिरपेक्ष राज्य का दर्जा दिया, साथ ही देश के प्रत्येक नागरिक को धर्म की स्वतंत्रतता का मूल अधिकार भी दे दिया, किन्तु उसे लोक व्यवस्था, सदाचार व स्वास्थ्य के अधीन रहने दिया साथ ही धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण करने का अधिकार भी सभी व्यक्तियों को दे दिया और धार्मिक आचरण (Religious Practice) को रेगूलेट करने के बाबत राज्य को अधिकार दिया। इस प्रकार धर्म की स्वतंत्रता का मूल अधिकार सुरक्षित कर दिया। धार्मिक आचरण के बाबत सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ ने सन 1954 ही में यह निर्णय दिया कि ऐसी धार्मिक प्रेक्टिस धर्म का मुख्य भाग होना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 25 में यही संदेश दिया है तथा अनुच्छेद 29 में यह घोषणा की कि कोई धार्मिक अल्पसंख्यक जिसकी अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा है उसे उनकी संरक्षण का मूल अधिकार होगा।

प्रस्तुत विवाद कर्नाटक राज्य से है और हिजाब पहनने से संबंध रखता है। कर्नाटक हाईकोर्ट ने यह निर्णय दिया कि मुसलमान कन्या विद्यार्थियों पर हिजाब पहनने पर निषेध आदेश उचित है। राज्य ने हिजाब पर प्रतिबंध कुछ स्कूलों पर लगाया था। कर्नाटक राज्य की ओर से दलील दी गई है कि हिजाब का प्रश्न स्कूल यूनिफार्म के लिये नहीं है। सन 2021 से पूर्व हिजाब पर कोई विवाद ही नहीं था।

सुप्रीम कोर्ट की खण्डपीठ जिसके माननीय सदस्य जस्टिस हेमन्त गुप्ता व जस्टिस धूलिया हैं। इस पीठ के समक्ष 23 पिटीशन्स के बेच पर सुनवाई हो रही है इस खण्डपीठ के समक्ष दो प्रकार के केसेज हैं। एक वे हैं जो रिट पिटीशन से संबंध रखता है जिनमें मुस्लिम बालिका स्टूडेन्टस ने हिजाब पहनने के अपने अधिकार के हेतु कोर्ट से गुहार की है। दूसरे वे केसेज हैं जो एसएलपी के हैं, इनमें कर्नाटक हाईकोर्ट के 15.03.2022 के निर्णय को चुनौती दी है। कर्नाटक हाईकोर्ट ने सरकार के आदेश दिनांक 05.02.2022 को सही माना है, जिससे पिटीशनर्स जो प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेज के मुस्लिम स्टूडेन्ट्स हैं उन्हें हिजाब पहनने से निषेधित किया है। कर्नाटक हाईकोर्ट की पूर्ण पीठ ने यह करार दिया है कि हिजाब पहनना इस्लाम में Essential Religious Practice नहीं है। पूर्ण पीठ ने यह निर्णय दिया कि शिक्षण संस्थाओं में यूनिफार्म पहनना पिटीशनर्स के मूल अधिकार का अतिरेक नहीं करता। इन केसेज में सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल, सीनियर एडवोकेट प्रशान्त भूषण, सीनियर एडवोकेट आदित्य सोंधी, राजीव धवन, हुजेफा अहमदी आदि ने पक्षकारों की ओर से बहस की है। सरकार की ओर से श्री तुषार मेहता, सोलिसीटर जनरल ने बहस की है। कर्नाटक के एडवोकेट जनरल प्रभुलिंग नवादगी व एएसजी नटराजन ने राज्य की ओर से तथा कॉलेज टीचर्स की ओर से शेशाद्री नायडू व वी. मोहन ने भी बहस में भाग लिया। इनका कहना था कि यूनिफार्म के बाबत विवाद नहीं होना चाहिये। यूनिफार्म का संबंध विद्यार्थियों में समानता की भावना पैदा करना है। यहाँ अनुच्छेद 14 भी मददगार है। सीनियर एडवोकेट आर. वेंकटरमानी ने बहस में कहा कि स्कूल सभी धार्मिक तत्वों से परे होने चाहिये।

सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने यह सुझाव दिया है कि केस को संविधान पीठ को निर्णय हेतु भेजा जाना चाहिये। यह बहस भी की है कि इस केस में केवल अनुच्छेद 19 पर ही बहस सीमित नहीं है अपितु वह (Concept of qualified public space) का केस है। इसके अलावा हिजाब पहनना एक Cultural Right है जो अनुच्छेद 29 के तहत् अधिकार की सुरक्षा प्रदान करता है। सीनियर एडवोकेट प्रशान्त भूषण की बहस है कि पिटीशनर्स के लिये यह बताना आवश्यक नहीं है कि यह केस Essential Religious Practice का है, अपितु उन्हें केवल यह बतलाना है कि महिलाओं का हिजाब पहनना सदभाविक प्रेक्टिस है तथा साथ ही उनकी बहस यह भी है कि पब्लिक शिक्षण संस्थाओं द्वारा ड्रेस कोड लागू नहीं किया जा सकता। उनका यह भी कहना है कि हिजाब पर प्रतिबंध उसी समय लगाया जा सकता है जब 'पगड़ी' पर भी यह लागू हो, अन्यथा प्रतिबंध संवैधानिक नहीं है। हिजाब पहनना अनुच्छेद 25 के तहत मूल अधिकार है।

2021 से पूर्व तक हिजाब कोई विवाद था ही नहीं। ऐसी स्थिति (यदि यह सच है तो) उसे अपनाया जा सकता है तथा इस विवादास्पद प्रश्न को बिना फैसला किये आपसी सदभाव से सुलझाया जाना चाहिये। आपसी सहमति से पिटीशन विद्ड्रो की जा सकती है।

सीनियर एडवोकेट आदित्य सोंधी, अनिल धवन (Intervenor) व हुजैफा अहमदी की बहस थी कि राज्य की आज्ञा दिनांक 05.02.2022 जिससे हिजाब पर प्रतिबंध लगाया है वह संविधान में जो Fraternity का Concept दिया है उसके विरूद्ध है। अहमदी की बहस थी कि स्कूल में हिजाब की मनाई, वास्तव में मुस्लिम गर्ल विद्यार्थियों को स्कूल छोडने पर बाध्य करने वाला है। एडवोकेट अहमदी ने यह भी बहस की कि केस संविधान पीठ को भेजा जाना चाहिये। उनका यह भी सुझाव था कि Essential Religious Practice मानने का क्या टेस्ट है, यह कहीं परिभाषित नहीं है अत: संविधान पीठ को भेजा जाना चाहिये जैसे सबरीमाला वाले केस में किया गया था। जस्टिस धूलिया के पूछने पर अहमदी ने कहा सबरीमाला के केस में कोर्ट को यह निर्धारित करना था कि Essential Religious Practice के मापदण्ड क्या होने चहिये? अत: माननीय पीठ को केस के निर्णय तक इस केस की सुनवाई रोक देना अपेक्षित है।

केस में दोनों पक्षों की ओर से बहस का स्तर ऊँचा है, किन्तु मूल प्रश्न तो यही माना जावेगा कि Essential Religious Practice क्या है और क्या हिजाब की प्रेक्टिस Essential Religious Practice है। कई प्रश्न माननीय खण्डपीठ के दोनों न्यायाधीशों ने उठाये हैं।

दिनांक 20 सितम्बर 2022 को बहस का आठवां दिन था, उस दिन जस्टिस सुधांशु धूलिया ने वकीलों के समक्ष प्रश्न किया कि क्या कर्नाटक हाईकोर्ट को Essential Religious Practice धर्म का अभिन्न अंग पर सुनवाई करनी चाहिये थी? ऐसा प्रतीत होता है माननीय जस्टिस धूलिया संभवत: इस धारणा के हैं कि कर्नाटक हाईकोर्ट को इस पर सुनाई नहीं करनी चाहिये थी। सोलिसीटर जनरल तुषार मेहता ने कोर्ट के समक्ष स्वीकार किया कि उक्त प्रश्न पर हाईकोर्ट को विचार नहीं करना चाहिये। एडवोकेट धूलिया ने कहा कि पुस्तक Veild Women Hijab, Religious, AND Cultural Practice 2013 में हिजाब को एक Cultural Practice माना जा सकता है। पिटीशनर की ओर से कुरान पढकर यह भी समझाने का प्रयास किया गया कि कुरान में हिजाब का उल्लेख करने मात्र से Essential Religious Practice नहीं हो सकती। तुषार मेहता ने कहा कि हिजाब का मुद्दा (विवाद) एकाएक उठाया गया विवाद नहीं है अपितु प्रतिबंधित संगठन पीएफआई के एक षडयंत्र का परिणाम है। उन्होंने कनार्टक सरकार की पैरवी करते हुये कहा कि 2021 से पूर्व लडकियां हिजाब नहीं पहन रही थीं। उन्होंने दिनांक 05.02.2022 की राज्य की आज्ञा को उचित माना है। कई पुस्तकों में यह समझाया गया है कि सिर ढकना एक अच्छी परम्परा मात्र है जिसका महिला के लाज से संबंध है। कर्नाटक के ए.जी. ने कहा कि Essential Religious Practice का निर्णय उस धर्म की Doctrine पर आधारित होता है। मि. पाशा ने इस्लाम के पांच आवश्यक पार्ट माने हैं, किन्तु उनमें हिजाब नहीं है। सीनियर एडवोकेट दवे ने मुस्लिम पक्ष का समर्थन करते हुये कहा कि यह राज्य का मुसलमानों को अलग करने का प्रयास है। हिजाब पहनना गरिमा का प्रतीक है।

दिनांक 20.09.2022 की टीवी की न्यूज में समाचार थे "ईरान में हिजाब के विरुद्ध हिंसक प्रदर्शन"। वस्तुत: जस्टिस धूलिया ने पूछा था क्या कोई ऐसा देश है जहां मुस्लिम महिलायें हिजाब के विरूद्ध हैं इसका उत्तर था ईरान में मुस्लिम महिलायें हिजाब पर प्रदर्शन कर रही हैं।

उपरोक्त विचारों के मंथन से यह माना जा सकता है कि हिजाब धर्म का विशिष्ट व अभिन्न अंग नहीं है न इसका संबंध धर्म के आचरण से है। यह भी बहस से स्पष्ट समझ में नहीं आता है कि ड्रेस कोड से हटकर इसे पहनना क्यों कर आवश्यक है? सरकार की आज्ञा दिनांक 5.2.2022 से पूर्व कुछ एक स्कूलों में जो स्थिति थी उसके अनुसार केवल कुछ मुस्लिम कन्या विद्यार्थी स्कूल में पहुंचने तक हिजाब पहिनकर आती थीं। ड्रेस रूप में उसे हटाकर स्कूल की ड्रेस में क्लास में जाती थीं और जाते समय फिर हिजाब धारण कर लेती थीं। 2021 से पूर्व तक हिजाब कोई विवाद था ही नहीं। ऐसी स्थिति (यदि यह सच है तो) उसे अपनाया जा सकता है तथा इस विवादास्पद प्रश्न को बिना फैसला किये आपसी सदभाव से सुलझाया जाना चाहिये। आपसी सहमति से पिटीशन विद्ड्रो की जा सकती है।

दूसरा मार्ग यह होना चाहिये कि हमेशा के लिये इस प्रश्न को संविधान पीठ को भेजकर, निर्णय करा लिया जावे। राष्ट्रगान का मामला, सबरीमाला का तीन तलाक जैसे केस पुन: नहीं होने चाहिये। यह तयशुदा है कि प्रत्येक धार्मिक प्रेक्टिस धर्म का अभिन्न अंग नहीं है।

तीसरा मार्ग है, यह मान लिया जावे कि हिजाब पहिनना धर्म के आचरण का अभिन्न अंग नहीं है और अनुच्छेद 29 व 25 में यद्यपि कोई अपवाद नहीं है किन्तु दोनों धर्मों के मानने वाले धर्म गुरू व नेतागण कोई रास्ता निकालकर समस्या का हल निकाल लें। एक दूसरे को Accommodate या Adjust करना ही प्रियम्बल की FRATERNITY की भावना है और भारत की एकता व अखण्डता को बनाये रखने की सफलता की कुंजी है तथा देश के समस्त नागरिकों का पावन कर्त्तव्य है कि वे धर्म, जाति के बंधन को तोडकर संविधान के अनुच्छेद 51ए (सी) (ई) में दर्शाये मूल कर्त्तव्यों की पालना करेंगे।

उपरोक्त कथन कोर्ट में चल रही बहस पर आधारित है, अत: कोई भी यह नहीं बता सकता निर्णय क्या होगा? हमें प्रतीक्षा करनी होगी निर्णय की। निर्णय आपसी सहमति से हो वह सुबह कब आयेगी?

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय कैलीग्राफी शिविर में देश विदेश से कई नामचीन कलाकार भाग ले रहे

- शिविर में बांग्लादेश, ईरान, इजिप्ट तथा भारत के 42 कलाकार भाग ले रहे हैं
- म्यूरल आर्ट कला प्रदर्शनी का शुभारंभ आज

उदयपुर, (कासं)। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से ग्रामीण कला परिसर शिल्पग्राम में गुरूवार को 'अंतर्राष्ट्रीय कैलीग्राफी कैम्प' का दीप प्रज्ज्वलन से शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर.के. तिवारी, चेयरमेन उत्तरप्रदेश रोडवेज एवं शिव सिंह सारंगदेवोत, कुलपति, विद्यापीठ उपस्थित थे। शिविर में बांग्लादेश, ईरान, इजिप्ट तथा भारत के 42 कलाकार भाग ले रहे हैं।

इस अवसर पर मुरलीधर अरोड़ा द्वारा रचित पुस्तक नमन का विमोचन भी किया गया। यह 'अंतर्राष्ट्रीय कैलीग्राफी कैम्प' 26 सितम्बर तक चलेगा, जिसमें देश विदेश से कई नामचीन कलाकार भाग ले रहे हैं। इसके साथ ही शिल्पग्राम में ही 23 सितम्बर से लोगों के लिये कैलीग्राफी वर्कशॉप का भी आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों को कैलीग्राफी में कार्य व सृजन की जानकारी दिये जाने के साथ सृजनात्मक कार्य करवाया जायेगा। 23 सितम्बर को म्यूरल आर्ट कला प्रदर्शनी का बागोर की हवेली में शुभारंभ होगा।

केन्द्र निदेशक किरण सोनी गुप्ता ने बताया कि दृश्य कला में कैलीग्राफी एक ऐसी अनूठी विधा है जिसमें आज कई देश के कलाकार काम कर रहे हैं। कैलीग्राफी एक प्राचीन विधा है जिसे अक्षरांकन, चित्रण अथवा सुलेख एक अक्षर कला है।

इसकी सहायता से ब्रश क्रोकिल विभिन्न तरीके व स्ट्रोक के फाउण्टेन पेन व निब की सहायता से एक विशिष्ट शैली की स्वयं की लिखाई की डिजाइन प्रक्रिया को सीखा व अपनाया जाता है। आजकल का अक्षरांकन हस्तनिर्मित से लेकर कंप्यूटर के द्वारा निर्मित किया जाता है।

समकालीन कैलीग्राफी को कुछ इस तरह परिभाषित किया जा सकता है– 'संकेतों को एक अर्थपूर्ण, सुव्यवस्थित और कौशलपूर्ण तरीके से आकार प्रदान करने की कला है।' आधुनिक कैलीग्राफी के विविध परिक्षेत्र मे क्रियात्मक अभिलेखों और डिजाइन से लेकर ललित कला के वे नमूने भी शामिल है। उन्होंने बताया कि यह विधा आज भी विश्व के कई देशों में प्रचलित है किन्तु तकनीकी विकास के साथ-साथ इस कला को भुला सा दिया गया। केन्द्र द्वारा इस कला को आम जनता तक पहुंचाने के उद्देश्य से शिल्पग्राम में अंतर्राष्ट्रीय कैम्प का आयोजन किया जा रहा है।

उदयपुर के शिल्पग्राम में 'अंतर्राष्ट्रीय कैलीग्राफी कैम्प' की शुरूआत आर.के. तिवारी चेयरमैन उत्तरप्रदेश रोडवेज व एस.एस. सारंगदेवोत कुलपति विद्यापीठ ने की।

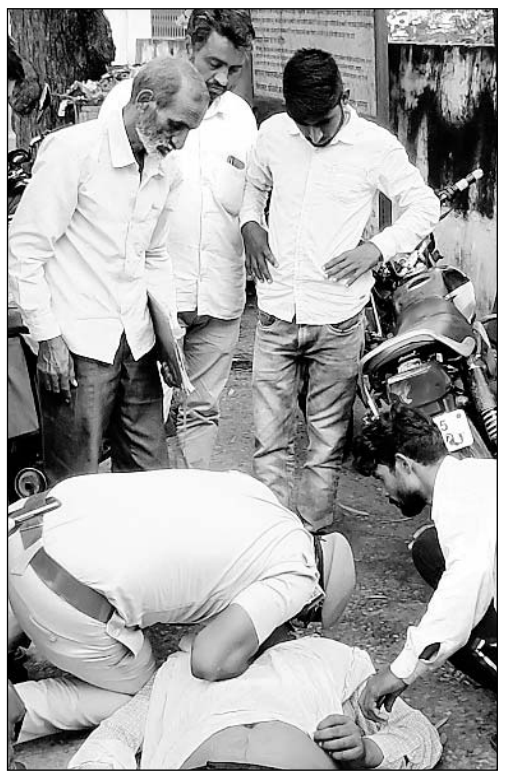

एएसआई ने सीआरपी थैरेपी देकर बचाई युवक की जान

नदबई, (निसं)। तहसील परिसर में लखनपुर पुलिस थाने पर कार्यरत एएसआई मुंशीलाल मीणा का मानवीय चेहरा नजर आया। जब, एएसआई ने अपने कार्यो को छोड़ जमीन पर गिरे बेहोश युवक की स्थिति को देखते हुए सीआरपी थैरेपी देकर युवक की जान बचाई। इतना ही नही होश आने पर एएसआई ने ई-रिक्शा की सहायता से युवक को सीएचसी पर भर्ती कराया।

एएसआई के मानवीय चेहरे की तहसील परिसर में जमकर तारीफ हो रही। नदबई क्षेत्र के गांव नगला मई निवासी जीतेन्द्र उर्फ झण्डू तहसील परिसर में घूम रहा था। इसी दौरान अचानक अचेत होकर जमीन पर गिर गया। अचानक युवक को गिरने से लोगों में अफरा-तफरी मच गई। इसी दौरान तहसील परिसर में मौजूद लखनपुर पुलिस थाने पर कार्यरत एएसआई मुंशीलाल मीणा ने मौके पर पहुंच युवक को होश में लाने का प्रयास किया। बाद में अपने बेहोश युवक को सीआरपी थेरेपी दी। करीब दस मिनिट की मशक्कत के बाद युवक को होश आया।

रेलवे ने मनाया स्वच्छ नीर दिवस, स्टेशनों पर पानी के सैंपल लिए

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर रेल मंडल द्वारा 16 सितंबर से 02 अक्टूबर तक मनाये जा रहे स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत गुरुवार को स्वच्छ नीर दिवस मनाया गया। भारतीय रेल के विभिन्न स्टेशनों पर और भिन्न-भिन्न प्रतिष्ठानों में स्वच्छता विषय पर सेमिनार आदि प्रचार कर स्वच्छता के प्रति लोगों को जागृत किया जा रहा है।

मंडल रेल प्रबंधक गीतिका पांडेय ने बताया कि गुरुवार को स्वच्छ नीर दिवस के तहत जोधपुर मंडल पर स्टेशनों, रेलवे कॉलोनियों, कार्यालयों और स्कूलों में मेडिकल टीम द्वारा पानी के नमूने लिये गये एवं क्लोरिन टेस्ट किया। स्वच्छ जागरूकता के तहत जल बचाओ जीवन बचाओ और पृथ्वी बचाओ का संदेश दिया गया। साथ ही रेलवे परिसरों, कॉलोनियों, यात्रियों एवं कर्मचारियों को स्टेशनों में जल न फैलाने के लिए जागरूक किया गया। रेलवे कार्यालयों एवं स्टेशनो पर वाटर लिकेज चैक कर उनको ठीक किया गया।

स्वच्छ नीर दिवस के क्रम में जोधपुर, मेडतारोड, नागौर, बाड़मेर, पाली मारवाड़ आदि स्टेशनो पर पानी को चैक किया गया ओर पानी के सैम्पल लिये गये। स्टेशनो पर स्थित वाटर बूथ के पानी मे क्लोरिन एवं स्वचछता जांची गई। पानी का टी.डी.एस. चैक किया गया। स्टेशन पर स्थित वाटर कूलर, वाटर बूथ, प्याऊ की गहनता से साफ सफाई की गई तथा मंडल के कर्मचारियो द्वारा श्रमदान कर गहन सफाई की गई।

''जैंडर रैस्पाँसिव गवर्नेंस'' विषय पर कार्यशाला आयोजित

- पांच राज्यों से 25 महिला विधायक पहुंचीं उदयपुर

उदयपुर, (कासं)। महिला जनप्रतिनिधि भी अपनी पूरी क्षमता और आत्मविश्वास के साथ आमजन के लिए कार्य कर सके इसलिए नेशनल जेंडर एवं चाइल्ड सेंटर (एनजीसीसी) लाबासना द्वारा राष्ट्रीय महिला आयोग के समन्वय से देश के विभिन्न राज्यों की महिला विधायकों की तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन रेडिसन ब्लू में किया जा रहा है।

यह कार्यशाला 'शी इज चेंजमेकर' प्रोजेक्ट के अंतर्गत 'जेंडर रेस्पोंसिव गवर्नेंस' विषय पर आयोजित की जा रही है जहां महिला जनप्रतिनिधियों का कौशल बढ ाने हेतु प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कार्यशाला में राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ , उडीसा, महाराष्ट्र राज्यों की 25 महिला विधायक शामिल हैं। इस कार्यशाला का उद्देश्य महिला विधायकों की क्षमता संवर्धन करना और उन्हें जागरूक करना है जिससे वे प्रभावी तौर पर अपना कर्तव्य निर्वहन कर सके।

तेलंगाना की राज्यपाल डॉ तमिलिसै सौंदरराजन द्वारा उदघाटन सत्र को संबोधित किया गया। उद्घाटन सत्र में तेलंगाना राज्यपाल सौंदरराजन ने महिला जनप्रतिनिधियों की देश निर्माण में भूमिका पर प्रकाश डाला और उन्हें महत्वपूर्ण स्तम्भ बताया। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सभी क्षेत्रों में अब आगे आना चाहिए और समाज को उन्हें सहयोग देना चाहिए। कार्यक्रम में राष्ट्रीय महिला आयोग अध्यक्ष रेखा शर्मा, दिशा पन्नू कार्यकारी निदेशक एनजीसीसी, उप निदेशक लबासना, एसोसिएट प्रोफेसर लबासना अंजली चौहान एवं संगीता बिष्ट आदि उपस्थित रहे। लबासना के निदेशक श्रीनिवास कतिकिथाला वर्चुअल तौर पर कार्यक्रम से जुड़े।

राष्ट्रीय महिला आयोग अध्यक्ष रेखा शर्मा ने कार्यशाला की महत्ता पर प्रकाश डाला एवं कहा कि हर महिला एक लीडर है बस उनमें निर्णय लेने की क्षमता, संवाद करने की क्षमता का विकास करना है। आयोग अध्यक्ष रेखा शर्मा ने महिला जनप्रतिनिधियों में लीडरशिप क्वालिटी की अहमियत पर प्रकाश डाला और महिला विधायकों से आत्मविश्वास से भरपूर रहने की बात कही।

उदयपुर में ''शी इज चेंजमेकर'' प्रोजेक्ट के अंतर्गत ''जैंडर रैस्पाँसिव गवर्नेंस'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

राशिफल शुक्रवार 23 सितम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आश्विनी मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2079, मघा नक्षत्र रात्रि 3:50 तक, सिद्ध योग प्रात: 9:55 तक, गर करण दिन 1:54 तक, चन्द्रमा सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्ध योग रात्रि 3:50 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा रात्रि 2:31 से शनिवार दिन 2:52 तक है। आज सायन तुला में सूर्य प्रवेश प्रात: 6:34 पर होगा। आज सूर्य दक्षिण गोल में प्रवेश करेगा। आज विषुव दिन है। आज प्रदोष व्रत वालियुगादि-तिथि है और युगाब्द 5:24 आरम्भ होगा। आज शरद संपात, तेरस और मघा का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:49 तक, लाभ-अमृत 7:49 से 10:49 तक, शुभ 12:19 से 1: 49 तक, चर 4:49 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:19, सूर्यास्त 6:19

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आज व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता से मनोबल बढ़ेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज मन में असंतोष और भय बना रहेगा।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटके हुए व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कुंभ
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता और योजनानुसार बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कलेक्टर ने विद्यार्थियों से संवाद कर गणित के सवाल हल कराए

बीकानेर,(कासं)। जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद कलाल गुरूवार को आंबासर के दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने मनरेगा के तहत कैटल शेड निर्माण, मॉडल आंगनबाड़ी केन्द्र, उच्च प्राथमिक विद्यालय, उप स्वास्थ्य केन्द्र तथा प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बने आवास का अवलोकन किया। उन्होंने राजीव गांधी सेवा केन्द्र में जनसुनवाई भी की।

जिला कलेक्टर ने आंबासर में सूरजादेवी बाबूलाल मेघवाल के खेत में मनरेगा के तहत 1.5 लाख रुपये की लागत से बने कैटल शेड, टांका निर्माण तथा वृक्षारोपण कार्य का अवलोकन किया। सुजासर के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों से संवाद किया तथा विद्यार्थियों से गणित के सवाल हल करवाएं। जिला कलेक्टर ने विद्यालय में बच्चों का अध्यापक बनकर उनकी अभ्यास पुस्तिका का अवलोकन किया तथा बोर्ड पर सवाल भी हल किए। जिला कलेक्टर ने मॉडल आंगनबाड़ी केन्द्र का अवलोकन किया। उन्होंने निर्देश दिए कि शत प्रतिशत पंजीकृत बच्चों को आंगनबाड़ी में लाया जाए। इस दौरान उन्होंने पोषाहार का भी निरीक्षण किया। जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद कलाल ने उप स्वास्थ्य केन्द्र में एसडीआर रजिस्टर का अवलोकन किया तथा दवा केन्द्र पर दवाईयों की स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने स्वास्थ्य केन्द्र में उपस्थित गर्भवती महिला के ब्लड प्रेशर, हीमोग्लोबिन एवं शुगर की जांच मौके पर करवाई तथा हीमोग्लोबिन 9 ग्राम पाए जाने पर हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन करने एवं आवश्यक चिकित्सकीय सलाह लेने के लिए कहा।

बीकानेर कलेक्टर भगवती प्रसाद कलाल ने आंबासर में विद्यालय निरीक्षण के दौरान बच्चों को गणित के सवाल ब्लैक बोर्ड पर हल करके समझाए।

जिला कलेक्टर ने टीकाकरण के लिए आई हुई महिला से भी उप स्वास्थ्य केन्द्र की व्यवस्थाओं के बारे में फीडबैक लिया। जिला कलेक्टर ने आंबासर में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पुष्पा पत्नी राजूराम के आवास का अवलोकन किया तथा योजना के तहत दी जाने वाली किस्तों के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने राजीव गांधी सेवा केन्द्र में जनसुनवाई की। जन सुनवाई के दौरान जिला कलेक्टर ने गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा खेल मैदान के प्रस्ताव भिजवाने के निर्देश दिए।

ग्रामीणों ने नया ट्रांसफार्मर स्थापित करवाने की मांग की, जिस पर वस्तुस्थिति रिपोर्ट उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना तथा योजना के बारे में अवगत करवाया।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत शत प्रतिशत पंजीकरण हो। उन्होंने बच्चों को नशाखोरी से दूर रखने के लिए बच्चों का खेल में एवं पौधारोपण के कार्यों में जुड़ाव करें। इस दौरान विकास अधिकारी दिनेश मिश्रा तथा मनरेगा के अधीक्षण अभियंता धीरसिंह गोदारा सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

टास्क फोर्स की बैठक आयोजित : बालश्रम रोकथाम के लिए जिले में चलाए जा रहे अभियान के तहत गठित टास्क फोर्स की गुरूवार को समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में अतिरिक्त जिला कलेक्टर (शहर) पंकज शर्मा ने अब तक हुई कार्रवाई की जानकारी ली।

शर्मा ने कहा कि टीमें औद्योगिक इकाई, होटल एवं रेस्टोरेंट का औचक निरीक्षण करें तथा जिन-जिन क्षेत्रों में निरीक्षण करें। उनकी क्षेत्रवार रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। उन्होंने पुनर्वास गतिविधि में तेजी लाने के निर्देश दिए।

> **■ मनरेगा के तहत 1.5 लाख रुपये की लागत से बने कैटल शेड, टांका निर्माण तथा वृक्षारोपण कार्य का अवलोकन किया**

उन्होंने संबंधित एजेंसियों से समन्वय करते हुए कार्य करने को कहा। बैठक में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक एलडी पंवार, सहायक निदेशक बाल अधिकारिता कविता स्वामी सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

शिविर 27 को : विशेष योग्यजन आयुक्त आपके द्वार मिशन तहसील 392 के तहत तहसील स्तर पर शिविर आयोजित होंगे। जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद कलाल ने बताया कि 27 सितम्बर को तहसील नोखा में सुबह 9.30 बजे, कोलायत में दोपहर एक बजे व बज्जू में अपरान्ह 4 बजे शिविर आयोजित होंगे। उन्होंने बताया कि 28 सितम्बर को छतरगढ़ में सुबह साढे नौ बजे, खाजूवाला में दोपहर एक बजे और पूगल में अपरान्ह 4 बजे शिविर आयोजित होंगे। 29 सितम्बर को सुबह साढे नौ बजे लूणकरनसर, दोपहर एक बजे श्रीडूंगरगढ़ व अपरान्ह 4 बजे बीकानेर में शिविर आयोजित होगा। इस दौरान विशेष योग्यजन से संबंधित कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित किया जाएगा।

जाम्भाणी साहित्य सदन का शिलान्यास कल

बीकानेर,(कासं)। बिश्नोई समाज के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक मुक्तिधाम मुकाम में 24 सितम्बर को जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा बनाये जा रहे जाम्भाणी साहित्य सदन का शिलान्यास किया जायेगा।

जांभाणी साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय प्रेस प्रभारी पृथ्वी सिंह बेनीवाल ने बताया कि नोखा विधायक बिहारीलाल बिश्नोई की अध्यक्षता में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक बिश्नोई चौ. कुलदीप बिश्नोई मुक्तिधाम मुकाम-सम्भराथल मार्ग पर बनने जा रहे जाम्भाणी साहित्य सदन का शिलान्यास करेंगे।

इसके साथ साथ राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत व अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के अध्यक्ष देवेन्द्र बूड़िया अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। महासभा उपाध्यक्ष पतराम लोहमरोड़ व जोधुपर से पूर्व जिला पार्षद समाजसेवी और उद्योगपति पप्पूराम डारा विशिष्ट अतिथि के तौर पर समारोह में भाग लेंगे। साथ ही समारोह में महंत शिवदास महाराज रूड़कली (जोधपुर), स्वामी रामानंद आचार्य मुकाम, स्वामी भागीरथदास आचार्य जाजीवाल धोरा, महंत डॉ गोवर्धन राम आचार्य सोनड़ी (बाड़मेर) महंत छगनप्रकाश सम्भराथल धोरा, महंत रामकृष्ण सम्भराथल धोरा, महंत भगवानदास जाम्भा (अगूणी), महंत प्रेमदास जाम्भा (आथूणी), प्रसिद्ध कथावाचक स्वामी राजेन्द्रानन्द (बिश्नोई सेवा आश्रम, हरिद्वार), महंत सच्चिदानंद आचार्य लालासर साथरी और महंत मनोहर दास शास्त्री महराणा धोरा (पंजाब) समारोह में उपस्थित रहकर आशीर्वाद देंगे।

सार-समाचार

सीएमएचओ डॉ पंवार का अभिनंदन

नोखा,(कासं)। गुरूवार को नोखा पहुंचे मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मोहमद अबरार पंवार का यहां बीसीएमओ कार्यालय में अभिनंदन किया गया। खण्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी कैलाश गहलोत ने साफा पहनाकर व डॉ अरविंद राजपुरोहित ने गुलदस्ता देकर उनका सम्मान किया। इस दौरान डॉ पंवार ने कहा कि फील्ड स्टाफ के साथ समन्वय स्थापित कर आमजन को सुलभ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाना और राज्य सरकार की योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन कर आमजन को लाभ दिलाना ही उनकी प्राथमिकता हैं। डॉ पंवार ने इससे पूर्व जिला चिकित्सालय का निरीक्षण कर चिकित्सा व्यवस्था हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। अभिनंदन कार्यक्रम में डॉ दिव्या गोलछा, डॉ सुभाष तरड़, बीपीएम दिनेश रंगा, बीएचएस दिनेश आचार्य, नर्सिंग ऑफिसर सहस्त्रकरण उपाध्याय, बीएनओ गणेश तालनिया, मनीष ओझा, भानीराम, विनोद खींची, दीपक शर्मा, निर्मल तेजी, सद्दाम हुसैन, हरीश पारीक, दिनेश गोदारा, शिव बिश्नोई, उमेश कुमार सहित बीसीएमओ व जिला चिकित्सालय का स्टाफ आदि मौजूद था।

टीम ने 200 किलो तंबाकू सीज किया

श्रीगंगानगर, (कासं)। राज्य सरकार की ओर से प्रतिबंधित तंबाकू का अवैध रूप से सरेआम, सरेराह बेचान कर रहे एक दुकानदार पर गुरुवार को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बड़ी कार्रवाई की। यहां से करीब दो सौ किलो खुला तंबाकू बरामद किया। जिसे विभाग ने सैंपल लेकर सीज किया। सीएमएचओ डॉ. मनमोहन गुप्ता के नेतृत्व में यह कार्रवाई डिप्टी सीएमएचओ डॉ. करण आर्य, ड्रग इंस्पेक्टर सुखदीप कौर, कोटपा प्रभारी अजय सिंह शेखावत एवं सीओआईईसी विनोद बिश्नोई ने की।

इस संबंध में विभाग को सूचना मिली कि रिको स्थित एक दुकान पर सरेआम खुला तंबाकू बेचान किया जा रहा है। इस पर विभागीय टीम ने बुधवार को रिको में जांच की तो सूचना की पुष्टि हुई। जिस पर गुरुवार को टीम ने श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ मुख्य मार्ग पर रिको स्थित चौधरी तंबाकू व हुक्का स्टोर पर दबिश दी, जहां हरियाणा निवासी दुकानदार ओम प्रकाश तंबाकू का बेचान करते हुए मिले। यहां जांच करने पर थैलियों व खुले में तंबाकू मिला। यहां से करीब 200 किलो तंबाकू मिला जिसे सीज किया। गया। विभागीय टीम ने दुकानदार को भविष्य में तंबाकू बेचान न करने के लिए पाबंद किया। विभाग की ओर से अब दुकानदार के खिलाफ कोटपा अधिनियम के तहत न्यायालय में वाद दायर किया जाएगा।

किसान को मिलेंगे यूरिया के छह थैले

अनूपगढ़, (कासं)। नई धान मंडी में गुरूवार को यूरिया खाद की नई खेप पहुंची। जैसे ही किसानों को इसकी जानकारी मिली तो बड़ी संख्या में किसान मंडी में पहुंच गए। देखते ही देखते यहां किसानों की कतार लग गई। सिंचाई विभाग के सहायक निदेशक रामनिवास चौधरी और पुलिस प्रशासन की देखरेख में यूरिया वितरित करवाई जा रही है। नई धान मंडी में राजीव कुमार-अरुण कुमार फर्म के मालिक राजीव डांग ने बताया कि आज किसानों को 10 हजार थैले यूरिया खाद के वितरित किए जायेंगे।

नहर में कटाव से लाखों रुपये की ग्वार की फसल चौपट

बीकानेर,(कासं)। इंदिरा गांधी नहर में आये कटाव को समय पर दुरूस्त नहीं करने से खाजूवाला के किसानों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। नहर का पानी खेतों में पहुंच गया, जिससे लाखों रुपये की ग्वार की फसल बर्बाद हो गई। वहीं दो किसानों के खेत में लगे ट्यूबवैल भी पूरी तरह खराब हो गए। वहीं इन किसानों को नहर विभाग से मुआवजा मिलने की उम्मीद भी कम लग रही है।

> **■ इंदिरा गांधी नहर की पूगल ब्रांच में नहर में आये कटाव को समय पर दुरूस्त नहीं करने से हुआ नुकसान**
> **■ खेत में पानी भरने से करीब पचास बीघा जमीन में लगी ग्वार की फसल पूरी तरह नष्ट हो गई**

इंदिरा गांधी नहर की पूगल ब्रांच में नहर में कटाव आया था। शुरूआत में ये कटाव छोटा था, तब किसानों ने नहर विभाग के आला अधिकारियों को सूचना कर दी। कल तक ये कटाव दो सौ फीट तक फैल गया। रात तक करीब तीन सौ फीट के कटाव से पानी खेतों में पहुंच रहा था।

शुरूआती तौर पर नहर विभाग ने काम शुरू कर दिया है लेकिन विभागीय अधिकारियों के समय पर नहीं आने से भारी नुकसान हुआ।

करीब पचास बीघा जमीन में लगी ग्वार की फसल पूरी तरह नष्ट हो गई है। इस फसल की कीमत लाखों रुपए आंकी जा रही है। दो खेतों में लगे ट्यूबवैल भी अत्यधिक पानी के कारण खराब हो गए। इन ट्यूबवैल की मोटर खराब हो गई है।

बुधवार से ही खाजूवाला के आनन्दगढ़, दंतौर और जीरो आरडी से टेल तक के किसानों को पानी मिलना था। बुधवार से शुक्रवार तक पानी की बारी थी लेकिन ये तीनों दिन पानी आगे नहीं जा सकेगा।

अब किसान तीन दिन पानी की बारी बढ़ाने की मांग कर रहे हैं ताकि इन गांवों के सैकड़ों बीघा जमीन में खड़ी ग्वार और मूंग की फसल की प्यास बुझ सके। पूर्व विधायक डॉ. विश्वनाथ मेघवाल गुरूवार को मौके पर पहुंच गए थे। इसके बाद ही तहसीलदार व अन्य अधिकारी आए। डॉ. विश्वनाथ ने विरोध दर्ज कराया कि समय रहते अगर नहर की मरम्मत हो जाती तो किसानों को इतने भारी नुकसान का सामना नहीं करना पड़ता।

सड़क हादसे में घायल की मौत

हनुमानगढ़,(कासं)। जिले के टाउन थाना क्षेत्र के 22 एनडीआर गांव के पास जीप की टक्कर लगने से बाइक सवार युवक की जयपुर में इलाज के दौरान मौत हो गई। मामले में टाउन पुलिस थाने में जीप चालक के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज हुआ है।

एएसआई रतनलाल ने बताया कि मदनलाल (48) पुत्र देवीलाल जाट निवासी चक 21 एनडीआर ढाणी ग्राम पंचायत चोटियांवाली ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसका चचेरा भाई संदीप जाट 18 सितम्बर को करीब 12 बजे अपनी बाइक से पेस्टीसाइड लेने के लिए टाउन जा रहा था। जब वह सरजीत रोझ की ढाणी के पास पहुंचा तो तेजी से आ रही जीप ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में संदीप गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद जीप चालक जसवंत शर्मा निवासी किशनपुरा घायल को हॉस्पिटल लेकर गया। हालत गंभीर होने पर संदीप को जयपुर रैफर कर दिया। जयपुर में इलाज के दौरान बुधवार सुबह संदीप की मौत हो गई।

दोस्त को मरा छोड़कर भागे युवक

श्रीगंगानगर, (कासं)। युवक की संदिग्ध मौत का मामला सामने आया। युवक के दोस्त उसे घर से बुलाकर लेकर गए थे। करीब पांच घंटे के बाद उसे मृत हालत में घर छोड़ने आये। घरवालों ने पूछा तो भाग गए।

परिजनों का आरोप है कि युवक की हत्या हुई है। पुलिस ने पोस्टमार्टम करवाकर बुधवार को शव परिजनों को सौंपा। मृतक के दोस्तों की तलाश की जा रही है। मामले की जांच सीओ एससी एसटी विक्की नागपाल को दी गई है।

गांव 41 पीएस के जगसीर सिंह पुत्र तुलसीर सिंह ने पुलिस में मामला दर्ज करवाया है। रिपोर्ट में बताया कि उसका भाई सुरेश मंगलवार शाम अपने परिचित युवक गांव 42 पीएस के हरजीत सिंह पुत्र भगवंत सिंह, गुलशन पुत्र दर्शन सिंह और सोनू पुत्र संतोख के साथ कार में गया था। रात करीब पौने ग्यारह बजे हरजीत और गुलशन उसे घर लेकर आये और घर में रखी

> **■ परिवार ने हत्या का आरोप लगाया, बोले दोस्त घर से बुलाकर लेकर गए थे**

चारपाई पर डाल दिया। जब जगसीर ने उनसे सुरेश की इस हालत के बारे में पूछा तो उन्होंने इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी और मौके से फरार हो गए।

परिवार के लोगों ने युवक को संभाला तो वह मृत था। इस पर पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव सरकारी अस्पताल की मोर्चरी में ररखवा दिया। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। परिजनों का आरोप है कि युवक की हत्या हुई है। गुरुवार रात समेजा कोठी थाने में हत्या का मामला दर्ज करवाया। जांच सीओ नागपाल को सौंपी।

हौद में गिरने से ढाई और डेढ़ साल के मासूम भाईयों की मौत

बीकानेर,(कासं)। घर के आंगन में खेल रहे दो भाईयों की हौद में डूबने से मौत हो गई। हादसे के दौरान मां बाथरूम में थी और पिता काम पर गए थे। मां ने जब बेटों को ढूंढा तो नहीं मिले। हौद में जाकर देखा तो दोनों बेटों की लाश तैर रही थी।

मामला देशनोक थाना क्षेत्र में गुरुवार सुबह करीब 11 बजे की है। जानकारी के अनुसार शिवलाल खुद सुबह छह बजे मजदूरी पर चला गया था। सुबह उसकी पत्नी नहाने गई और वापस आई तो दो बेटे विष्णु (ढाई साल) और हरिओम (डेढ़ साल) नजर नहीं आये। काफी देर इधर-उधर ढूंढने के बाद उसकी नजर घर के आंगन में बने कुंड पर पड़ी जो खुला था। अंदर

> **■ मां नहाने गई तो आंगन में खेलते हुए दोनों हौद में जा गिरे**

झांककर देखा तो मां का कलेजा ही बैठ गया। दोनों बच्चों की लाश पानी में तैर रही थी। उसने पड़ौसियों को बुलाया तो बच्चों को बाहर निकाला गया। बच्चों की लाश देखकर मां बेसुध हो गई। शिवलाल को पड़ौसियों ने ही फोन करके बुलाया। तुरंत बच्चों को अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। काफी देर तक बच्चे इस कुंड में रहे। ऐसे में उनकी मौत हो गई। घटना के बाद पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिए हैं।

दरअसल ये हादसा लापरवाही के कारण हुआ। घर के आंगन में ही हौद बना हुआ है। हौद का गेट है लेकिन वो खुला पड़ा था। ऐसे में ढाई व डेढ़ साल के बच्चे खेलते हुए वहां पहुंच गए। एक के बाद एक दोनों इस हौद में गिर गए। घटना की जानकारी मिलने के बाद कस्बे में शिवलाल के घर के आगे भीड़ जमा हो गई है। शिवलाल के दो ही बेटे थे और दोनों की इस दर्दनाक हादसे में मौत हो गई। मां को बार-बार पानी छिड़ककर उठाया जा रहा है तो पिता शिवलाल खुद बदहवास सा इधर से उधर घूम रहा है।

मतदाता सूची पर आपत्ति 27 तक

बीकानेर,(कासं)। नगर निगम के रिक्त हुए वार्ड संख्या 5 के उपचुनाव की मतदाता सूची पर आपत्तियां 27 सितम्बर तक दर्ज करवाई जा सकेगी।

नगर निगम निर्वाचक पंजीयन अधिकारी पंकज शर्मा ने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 1 जनवरी 2022 के अनुसार मतदाता सूची, मतदान केन्द्रों पर रखी जा चुकी है। उन्होंने बताया कि मतदाता किसी प्रविष्टि पर दावा, आपत्ति दर्ज करवाने के लिए वार्ड 5 के मतदान केन्द्र जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय भीनासर, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गंगाशहर, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय भीनासर में दोपहर 2 से 5 बजे तक व विशेष अभियान के तहत 25 सितम्बर को बीएलओ के समक्ष 10 से 5 बजे तक उपस्थित हो सकते हैं।

गैंगरेप के दो आरोपी गिरफ्तार

हनुमानगढ़,(कासं)। पुलिस ने गैंगरेप के दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों ने महिला को ऑनलाइन काम दिलवाने के नाम पर पंजाब से बुलाकर वारदात को अंजाम दिया था। आरोपियों ने पुलिस पूछताछ में गैंपरेप की बात कबूल कर ली है।

सीओ सिटी प्रशांत कौशिक ने बताया कि पंजाब की रहने वाली महिला ने पुलिस थाने में गैंगरेप का मामला दर्ज कराया था। महिला ने पुलिस को बताया कि रामकुमार नाम के व्यक्ति से उसकी जान-पहचान काफी समय पहले हुई थी। आरोपी रामकुमार ने ऑनलाइन काम दिलवाने के नाम पर महिला को हनुमानगढ़ बुलाया और बस स्टैंड से अपने साथी मनी के साथ 19 सितम्बर को हिरणावाली के पास खेत में ले जाकर दोनों ने गैंगरेप किया।

मामले में पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो दोनों ने गैंगरेप की बात कबूल कर ली। जिसके बाद पुलिस ने गुरूवार को दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

वहीं नाबालिग स्कूली छात्रा से छेड़छाड़ करने और जातिसूचक शब्दों से अपमानित करने के मामले में महिला थाना पुलिस ने गुरूवार को एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। वहीं दूसरे आरोपी की तलाश में पुलिस जगह-जगह दबिश दे रही है। छात्रों ने 24 अगस्त को 2 युवकों के खिलाफ नामजद मामला दर्ज कराया था। जांच अधिकारी एससीएसटी सेल सीओ प्रहलाद राय ने बताया कि गांव मुण्डा निवासी 17 वर्षीय स्कूली छात्रा ने 24 अगस्त को महिला पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया था।

रिपोर्ट में बताया कि उसके गांव के मुकेश भाट पुत्र हनुमान भाट और प्रेम भाट स्कूल जाते समय उसके साथ छेड़छाड़ करते हैं।

विरोध करने पर जातिसूचक गालियां देते हैं। इस मामले में आरोपी प्रेम कुमार भाट निवासी मुण्डा पीएस हनुमानगढ़ टाउन को गिरफ्तार किया गया है। इस मामले में दूसरा आरोपी मुकेश भाट फरार चल रहा है। उसकी गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दी जा रही है।

Form No. 14 [See Regulation 33(2)]
Notice Under Rule 2 of Second Schedule to the Income Tax Act 1961
DEBTS RECOVERY TRIBUNAL, JAIPUR
First Floor, Sudharma-II, Lal Kothi Shopping Centre, Tonk Road, Jaipur-302015
Dispatch No. DRT/JP/5341 Date: 12.09.2022
R.C. No. 457/2022 12/09/22 Next Date:
Punjab National Bank ...Certificate Holder
Versus
M/s Choudhary Gum and Derivatives & Ors. ...Certificate Debtor
DEMAND NOTICE

To,1. M/s. Choudhary Gum and Derivatives, through its Partners Om Prakash Tarar & Amandeep Tarar, Shop No. 26-B, Old Dhan Mandi, Sadulsahar, Sri Ganganagar, Rajasthan. And also at-Plot No. 57 to 60, RIICO Industrial Area, Sadulshahar, Sri Ganganagar (Raj.)
2. Shri Om Prakash Tarar, S/o Shri Gopi Ram (Partner) 3-H16, Jawahar Nagar, Sri Ganganagar (Raj.) Also at- Ward No. 9, Near OBC Bank (Now PNB) Sadulshahar, Sri Ganganagar (Raj.) And also at- Near Gupta Medical Store, Sadulshahaar, Sri Ganganagar (Raj.) 335062
3. Shri Amandeep Tarar, S/o Shri Om Prakash Tarar (Partner) 3-H-16, Jawahar Nagar, Sri Ganganagar (Raj.) Also at-Ward No 9, Near OBC Bank (Now PNB) Sadulshahar, Sri Ganganagar (Raj.)
4. Choudharay Buildmart Pvt. Ltd, (through its Directors Om Prakash Tarar & Amandeep Tarar), 404, 4th Floor, KJ City Tower, Ashok Marg, C-Scheme, Jaipur (Raj.) 302001 And also at-6th Floor, Office No. 9 & 10, CGR Mall, Chahal Chowk, Sri Ganganagar (Raj.) 335001.
5. Smt. Sunita Devi Choudhary W/o Shri Amandeep Tarar, Ward No. 9, Near OBC Bank (Now PNB) Sadulshahar, Sri Ganganagar (Raj.). And also at-3-H-16, Jawahar Nagar, Sri Ganganagar (Raj.)

In view of the Recovery Certificate issued in **O.A. No. 394/2021** passed by the Presiding Officer, DRT-Jaipur for an amount of **Rs. 17,53,87,425/- (Rupees Seventeen Crore Fifty Three Lakhs Eighty Seven Thousand Four Hundred Twenty Five Only)** and interest thereon as per Recovery Certificate is due against you. **1.** You are hereby called upon to deposit the above sum within 15 days of the receipt of the notice, failing which the recovery shall be made as per rules. **2.** You are, hereby ordered to appear before the undersigned on **30.09.2022** at **11:00 AM. 3.** In additions to the sum aforesaid you will be liable to pay: **(a)** Such interest as is payable for the period commencing immediately after this notice of the execution proceedings. **(b)** All costs, charges and expenses incurred in respect of the service of this notice and other process that may be taken for recovering the amount due.

DETAILS OF AMOUNT IN THE RECOVERY CERTIFICATE DUE AGAINST YOU

(1) Certificate Dues	Rs. 17,53,87,425/-
(2) Cost of the Suit	Rs. 1,52,085/-
(3) Interest from 05.08.2021 to 31.08.2022 @10.00% p.a. Simple Interest	Rs. 1,88,36,129/-
(4) Less Recovery (if any)	Rs. 2,67,25,937/-
(5) Total Dues	Rs. 16,76,49,702/-
(6) Charges	Rs. 11,93,000/-
(7) Grand Total	Rs. 16,88,42,702/-

Seal
Recovery Officer-I
Debt Recovery Tribunal, Jaipur

माहेश्वरी खेल महोत्सव 28 से

बीकानेर,(कासं)। माहेश्वरी समाज की खेल प्रतिभाओं को मंच उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन बीकानेर में किया जायेगा। प्रदेशाध्यक्ष बाबूलाल मोहता, उपाध्यक्ष श्यामसुंदर पेड़ीवाल व संगठन मंत्री बलदेव मूंधड़ा ने बताया कि उत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में 28 से 31 अक्टूबर तक आयोजित होने वाली इस स्पर्द्धा में देश भर से समाज की क्रिकेट, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम बोर्ड, शतरंज आदि खेल की टीमें हिस्सा लेगी। क्रिकेट व वॉलीबॉल केवल पुरुषों की टीम के मध्य होंगे व शेष खेल महिला व पुरूष दोनों टीमों के होंगे।

भाजपाईयों ने लम्पी से बचाने के लिए गायों को आयुर्वेदिक औषधि युक्त लापसी खिलाई

बीकानेर,(कासं)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर भाजपा द्वारा 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर के मध्य आयोजित किए जा रहे 15 दिवसीय सेवा पखवाड़ा कार्यक्रमों के अंतर्गत गुरूवार को शहर भाजपा किसान मोर्चा, ओबीसी मोर्चा और पंचायती राज प्रकोष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा नोखा रोड स्थित नंदी गौशाला में गौवंश को पौष्टिक आहार और आयुर्वेदिक औषधि युक्त लापसी खिलाकर तथा देशी दवाईयां देते हुए सैनिटाइज कर सेवा कार्य किया गया।

किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष एडवोकेट श्यामसुन्दर चौधरी ने बताया कि मोर्चा कार्यकर्ताओं ने वर्तमान में गौमाता पर कहर बनकर टूटी लम्पी बीमारी के विकट दौर में अपने सामाजिक सरोकारों को समझते हुए सेवा पखवाड़ा कार्यक्रमों में इस महत्वपूर्ण सेवाकार्य को सम्मिलित किया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार की अकर्मण्यता, प्रशासन की

बीकानेर में सेवा सप्ताह पखवाड़ा के तहत भाजपा कार्यकर्ताओं ने गौवंश को आयुर्वेदिक औषधि युक्त लापसी खिलाकर सेवा की।

नाकामी, पशु चिकित्सा विभाग में संसाधनों और दवाईयों के अभाव के चलते इस रोग ने महामारी का रूप ले लिया है। लम्पी रोग से हुए गौवंश के भारी नुकसान, हजारों की संख्या में अकाल मृत्यु के कारण पशु आधारित अर्थव्यवस्था चरमरा गई है। ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष राजाराम सींगड़ ने कहा कि कांग्रेस की राज्य सरकार के द्वारा गौमाता के साथ जिस प्रकार से घिनौना कृत्य किया जा रहा है, वह अति निंदनीय है। प्रदेश के मुखिया गौ-माता का अपमान करने से भी नहीं झिझक रहे हैं

> **■ सेवा पखवाड़ा में भाजपा कार्यकर्ताओं ने की गौवंश की सेवा**

और उनकी अकर्मण्यता का ही परिणाम है कि प्रदेश में लाखों गाएं अकारण काल का ग्रास बन चुकी है। पंचायती राज प्रकोष्ठ सह संयोजक विकास कौशिक कौशिक ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता मोदी जी के आव्हान के अनुसार सदैव सेवा और समर्पण कार्य को ही सर्वोपरि मानते हैं और इस संकटकाल में भी पार्टी कार्यकर्ता पूर्ण मनोयोग से गौवंश की सेवा करेंगे । गौवंश सेवाकार्य में जिला मंत्री और पखवाड़ा कार्यक्रम सहसंयोजक प्रोमिला गौतम, किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष और पखवाड़ा कार्यक्रम सहसंयोजक श्यामसुंदर चौधरी, रामचंद्र सोनी सहित आदि मोर्चा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पिस्तौल तान की लूटपाट

हनुमानगढ़,(कासं)। जिले के संगरिया थाना क्षेत्र के हरीपुरा गांव में एक युवक के साथ लूट का मामला सामने आया है। बाइक पर सवार होकर आए 3 नकाबपोश बदमाशों ने मोबाइल, रुपए और बाइक लूट लिए और मौके से फरार हो गए। पुलिस ने लूट का मामला दर्ज कर तीनों लुटेरों की तलाश शुरू कर दी है।

एएसआई शिशपाल ने बताया कि सत्यपाल (33) पुत्र हेतराम कुम्हार निवासी हरीपुरा ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि वह मंगलवार को बाइक लेकर डबवाली गया हुआ था। वह रात को वापस अपने गांव हरीपुरा आ रहा था। रात करीब साढ़े 9 बजे जाखड़ों की डिग्गी के पास पहुंचा तो 3 अज्ञात लोग पीछे से बाइक पर सवार होकर आए। तीनों ने अपना मुंह कपड़े से ढका था। बदमाशों ने लात मारकर उसकी बाइक गिरा दी। जिसकी वजह से उसका एक पैर बाइक के नीचे दब गया। एक बदमाश ने पिस्तौल निकालकर उसकी कनपटी पर तान दी और जेब से पर्स और मोबाइल छीन लिया।

कार्यालय नगरपालिका रायसिंहनगर, जिला श्रीगंगानगर(राज.)
Web Site:http//urban//.rajasthangov.in@ulbraisinghnagar Phone/FaxNo.01507-221023 E-mail nagarpalikarsnr@gmail.com,nagarpalika.rsnr.@Yahoo.in
क्रमांकः न.पा.रा/भूमि/राजस्व/2022-23/2406 दिनांकः-19.9.2022

आपत्ति सूचना

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री बलजीत सिंह पुत्र श्री मन्शा सिंह जाति-जटसिख निवासी-वार्ड नं.08, रायसिंहनगर के द्वारा निर्धारित प्रारूप में प्रार्थना पत्र के साथ शपथ-पत्र, किराया जमा रसीद, शपथ-पत्र बाबत हक त्याग, मृत्यु प्रमाण-पत्र, न्यायालय अपर जिला न्यायाधीश, रायसिंहनगर,द्वारा जारी उतराधिकार प्रमाण-पत्र व नक्शा आदि दस्तावेज प्रस्तुत कर तहबाजारी दुकान सं.614 साईज 10'X20' का नगरपालिका द्वारा तहबाजारी किराये पर दी गई व्यवसायकि सम्पतियों का नियमन करने हेतु आवेदन किया है। उक्त दुकान किराये पर श्री मन्शा सिंह पुत्र श्री सोहन सिंह जाति -जटसिख के नाम से आवंटन थी। प्रस्तुत मृत्यु प्रमाण -पत्र अनुसार श्री मन्शा सिंह पुत्र श्री सोहनसिंह की मृत्यु दिनांक 26.11.2018 को हुई। प्रस्तुत न्यायालय अपर जिला न्यायाधीश, रायसिंहनगर द्वारा जारी उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र दिनांक 11.09.2018 अनुसार श्री मन्शा सिंह पुत्र श्री सोहनसिंह के निम्नांकित जायज वारिस है :-1.श्रीमती सुरेन्द्र कौर-पत्नि 2.श्री बलजीत सिंह -पुत्र 3.श्री लखवीरसिंह -पुत्र 4.सुखवीर कौर-पुत्री। कुल4 जायज वारिस है। प्रस्तुत नोटेरी से तस्दीक शपथ-पत्र बाबत हक त्याग दिनांक 16.6.2022 अनुसार उक्त दुकान सुरेन्द्र कौर पत्नि श्री मन्शा सिंह , लखवीरसिंह, सुखवीर कोर सन्तान श्री मन्शा सिंह ने अपना 3/4 हिस्सा अपने पुत्र व भाई श्री बलजीत सिंह पुत्र श्री मन्शा सिंह के हक में छोडा है। उक्तानुसार प्रस्तुत श्री बलजीतसिंह पुत्र श्री मन्शा सिंह जाति-जटसिख निवासी वार्ड नं.08 रायसिंहनगर के नाम से व्यावसायिक दुकान का नियमन कर फ्री-होल्ड लीज डीड जारी करने में यदि किसी भी हितबन्ध व्यक्ति को आपत्ति/एतराज हो तो नगरपालिका की ई-मेल आईडी nagarpalikarsnr@gmail.com अथवा लिखित में अपनी आपत्ति/एतराज मय सबूत/दस्तावेज 7 दिवस में निम्नहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत करें। अन्यथा नियमन कर पट्टा जारी करने की कार्यवाही सम्पादित कि जायेगी और बाद गुजरने मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी तथा उक्तानुसार प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर पट्टा जारी कर दिया जावेगा। सूचित रहें।

अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका रायसिंहनगर

राजगढ़ एवं आस-पास के क्षेत्रों में दिन भर चली मूसलाधार बारिश

जनजीवन अस्त व्यस्त, सड़कें बनी दरिया

अलवर के राजगढ़ कस्बे में बरसात के बाद भरा पानी।

राजगढ़, (निसं)। अलवर राजगढ़ कस्बे सहित आस-पास के क्षेत्रों में गुरुवार को दिनभर चली मूसलाधार बारिश से जनजीवन अस्त व्यस्त रहा। तेज बारिश के कारण सड़कें दरिया बन गई वहीं ना लें और नाले ओवर फ्लो होने लगे। इससे पूर्व गुरुवार को सुबह से ही चालू हुआ वर्षा का दौर दिनभर चलता रहा जिसके चलते आम जनजीवन प्रभावित रहा। कस्बे में साईं काल 5:से 6:बजे तक आई तेज बारिश से पानी सड़कों पर बहने लगा वही नाले भी ओवरफ्लो होगे। इधर लगातार 3 दिन से हो रही बारिश के चलते मौसमी बीमारियों एवं वर्षा जनित रोगों के फैलने की संभावना बन गई है। कस्बे के बस स्टैंड एवं विद्युत वितरण निगम परिसर सहित अनेक जगह में पानी भर गया।

हिमाचल में बर्फबारी से बदला मौसमः शहर में बारिश हुई

- जोधपुर शहर में कई स्थानों पर हल्के मध्यम दर्जे की बारिश
- दक्षिणी राजस्थान के कुछ जिलों में मानसून अभी सक्रिय

जोधपुर, (कासं)। दक्षिण पश्चिमी मानसून लगभग विदा हो चुका है। जोधपुर और बीकानेर संभाग में मानसून की विदाई हो चुकी है। मगर प्रदेश के दक्षिणी हिस्सों में अब भी मानसून सक्रिय है। जिससे बारिश का दौर बना हुआ है। जोधपुर शहर में आज दोपहर में अचानक से घिरी घटाओ ने मौसम में बदलाव ला दिया। कई स्थानों पर हल्के मध्यम दर्जे की बारिश हुई।

इधर हिमाचल प्रदेश में बुधवार को ताजा बर्फबारी के बाद अब मौसम में बदलाव देखने का मिलेगा। सर्दी के जल्द आने के आसार बन पडे है। ताजा बर्फबारी से संकेत है हवाएं सर्द होने वाली है। दीपावली तक गुलाबी ठंड का असर शुरू हो जएगी। इस बार सर्दी भी कड़ाके की होने की संभावना बनी है। लंबे समय तक चला मानसून का दौर इस बार सर्दी में बढोतरी लाएगा।

जोधपुर शहर में आज दोपहर में घिर आई काली घटाओं से बारिश हुई। शहर के कुछेक स्थानों पर हल्की मध्यम दर्जे की बूंदाबांदी हुई। शहर की सडकें गीली हो गई। आसमां में फिलहाल बादल छाए हुए है और उमस भी बनी है। ऐसे में बारिश की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। मौसम विभाग की मानें तो दक्षिण पश्चिम मानसून पश्चिमी राजस्थान से विदा ले चुका है। दक्षिणी राजस्थान के कुछ जिलों में यह अभी सक्रिय है।

मुथूट फाइनेंस कंपनी के ऑफिस में लगी आग

फर्नीचर, इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस सहित डॉक्युमेंट जले

मुथूट गोल्ड फाइनेंस कंपनी के ऑफिस में प्रातः अचानक लगी आग पर काबू पाते दमकमल।

डूंगरपुर, (निसं)। शहर में कॉलेज रोड पर स्थित मुथूट गोल्ड फाइनेंस कंपनी के ऑफिस में गुरुवार सुबह अचानक आग लग गई। आग लगने से ऑफिस के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, फर्नीचर और कुछ डॉक्युमेंट जल गए। हालांकि समय पर आग बुझा देने से बड़ा हादसा टल गया।

नगर परिषद के फायर ऑफिसर बाबूलाल चौधरी ने बताया कि कॉलेज रोड पर एक कॉम्प्लेक्स की दूसरी मंजिल पर संचालित मुथूट फाइनेंस कंपनी के ऑफिस से धुआं निकलने की सूचना मिली। इस पर फायर ब्रिगेड की 2 गाडिया, कोतवाली थाना पुलिस ओर फाइनेंस ऑफिस के कर्मचारी भी मौके पर पहुंचे। ऑफिस से धुआं उठता देख मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

- दो फायर ब्रिगेड ने पाया काबू
- कॉम्प्लेक्स के ग्राउंड फ्लोर पर बैंक और उपभोक्ता बाजार होने से हो सकता था बड़ा हादसा

फायर कर्मचारियों ने ऑफिस का दरवाजा तोड़ा और पानी की सहायता से आधे घंटे में आग पर काबू पा लिया लेकिन तब तक ऑफिस का फर्नीचर कुछ दस्तावेज और पंखे समेत कुछ इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जल गए थे।

बाबूलाल चौधरी ने बताया कि कॉम्प्लेक्स के ग्राउंड फ्लोर पर एक बैंक और एक उपभोक्ता बाजार है। वहीं पडौस में कपडे की दुकान है। ऐसे में अगर आग बुझाने में थोडी भी देरी हो जाती तो बड़ा हादसा हो सकता था। प्रथम दृष्टया आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है। फिलहाल मुथूट फाइनेंस की ओर से आग से हुए नुकसान का आंकलन करवाया जा रहा है।

ओटीपी पूछ महिला के खाते से एक लाख उड़ाये

हनुमानगढ़, (कासं)। जिले के रावतसर थाना इलाके में कोरियर की डिलीवरी के नाम पर ठगी का मामला सामने आया है। आरोपी ने कोरियर की डिलीवरी के नाम पर ओटीपी पूछकर एक महिला के बैंक खाते से एक लाख रुपये की ठगी कर ली। मामले में रावतसर थाने में ठगी का मामला दर्ज किया गया है।

रावतसर थाना प्रभारी रविन्द्र सिंह नरुका ने बताया कि निर्मला देवी (41) पत्नी कैलाश चन्द्र मेघवाल निवासी वार्ड 26, रामपुरा रोड रावतसर ने रिपोर्ट दर्ज करवाते हुए बताया कि रावतसर के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में उसका बचत खाता है। उसके मोबाइल नम्बर पर 3 अगस्त को सुबह एक नम्बर से किसी का फोन आया। फोन उसकी बेटी ने उठाया। फोन करने वाले ने कहा कि आपका कोरियर एसबीआई से आना है वह रास्ते में अटका हुआ है। साथ ही कहा कि वह उन्हें एक लिंक भेज रहा है। वे उस पर 5 रुपए भेजे ताकि उनका कोरियर उन तक पहुंच सकें। उसकी बेटी ने लिंक पर पांच रुपये भेज दिए।

इसके कुछ देर बाद अन्य मोबाइल नम्बर से एक और लिंक आया। यह लिंक अन्य मोबाइल नम्बर पर भेजने को कहा। जब उसकी बेटी ने यह लिंक भेजा तो इसके अगले दिन 4 अगस्त को सुबह कुल एक लाख रुपए उसके खाते से निकाल लिए गए। बैंक से पता लगा कि यह राशि आईसीआईसीआई बैंक के खाता संख्या 309017991704 में जमा हुई है।

युवक की हत्या को लेकर दिन भर अस्पताल में माहौल रहा गरम

किशनगढ़बास, (निसं)। अलवर-भिवाड़ी हाईवे पर किशनगढ बास से करीब 4 किलोमीटर दूर गांव माचा के 35 वर्षीय ड्राइवर युवक का शव नजदीक के गांव ओदरा मोड़ पर मिला ।अस्पताल में एकत्रित परिजनों व घटना की खबर से पहुंचे दलित समाज के लोगों के इकट्ठा होने की सूचना पर एसडीएम गंगाधर मीणा डी एसपी अतुल अग्रे थाना अधिकारी अमित चौधरी भी अस्पताल पहुंचे। पुलिस प्रशासन की समझाइश व आश्वासन के बाद भी परिजन और समाज के लोग मुआवजे की मांग को लेकर देर शाम 7 बजे तक अडे रहे।

युवक के पिता बुधराम ने किशनगढ बास में रह रही एक महिला पर शंका जाहिर करते हुए नामजद लिखित में शिकायत दी गई है। मर्डर से पहले युवक अशोक के फोन पर महिला का फोन आया है। युवक के पिता का कहना था कि मुझे भी फोन पर कुछ दिन पहले धमकी दी गई थी कि लडके को समझा ले वरना ठीक नहीं होगा। मृतक युवक अशोक के भाई सुनील ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया है कि 21 सितंबर साय 5 बजे अशोक के फोन पर दो तीन बार फोन आने पर अशोक मोटरसाइकिल लेकर घर से जाने लगा तो

- युवक के भाई ने गांव बाझोट की किशनगढ़बास में रह रही महिला पर जताई शंका

मेरे चचेरे भाई मोनू ने कहा जा रहा है तो उसने महिला का नाम लिया और कहां फोन आया है कोई जरूरी काम है। इसके बाद करीब 7:30 बजे खुर्शीद एडवोकेट वह इलियास पूर्व सरपंच का मेरे पास फोन आया कि जल्दी आ ओदरा मोड पर तेरा भाई लहूलुहान हालत में पडा है। परिवार के लोग पहुंचे तो देखा की अशोक मृत पडा है।

एसडीएम गंगाधर मीणा ने कहा परिजनों की ओर से की गई मुआवजे, नौकरी एवं एसआईटी टीम से जांच कराए जाने व परिवार को सुरक्षा दिलाए जाने की मांग को लेकर जिला कलेक्टर को पत्र भेजा है। युवक का पोस्टमार्टम मेडिकल बोर्ड से कराया गया है तथा परिवार को सुरक्षा दिलाए जाने वे एसआईटी टीम से जांच कराए जाने के लिए डीएसपी को कहा गया है। डीएसपी अतुल अग्रे ने बताया कि एसआईटी टीम गठित किए जाने की मांग को लेकर अधिकारियों को अवगत करा दिया है नामजद आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

युवक ने की लिव इन रिलेशन में रहने वाली युवती की हत्या

सुजानगढ़, (निसं)। क्षेत्र के सांडवा में लिव इन रिलेशन में रहने वाली युवती की साथ रहने वाले युवक ने हत्या कर दी। सांडवा थानाधिकारी हंसराज लूणा ने बताया कि मृतका नंदिनी की मां बेबी कंवर की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर आरोपी राजेश स्वामी पुत्र जेठदास स्वामी उम्र 30 वर्ष को गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी से वारदात के कारणों के बारे में गहनता से पूछताछ की जा रही है।

थानाधिकारी ने बताया कि आरोपी राजेश स्वामी पहले से शादीशुदा है, जिसका एक साल पहले तलाक हो चुका है। मृतका नंदिनी (18) आरोपी के साथ विगत सात महीनों से लिव इन में रह रही थी। आरोपी मृतका को बुधवार को सुजानगढ से लेकर आया था। रात में बीयर की बोतल फोड कर उसके टुकडे से आरोपी राजेश ने गला काट कर व तार से गला घोंटकर कर नंदिनी की हत्या कर दी। पुलिस ने मेडिकल बोर्ड से मृतका का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया।

सुजानगढ़ पुलिस की गिरफ्त में हत्या का आरोपी।

थाना प्रभारी हंसराज ने बताया कि चूरू से आई एफएसएल टीम ने वारदात स्थल का बारीकी से मुआयना कर साक्ष्य जुटाए हैं।

12वीं कक्षा की छात्रा से दुष्कर्म

डूंगरपुर, (निसं)। धंबोला थाना इलाके में 12 वीं कक्षा की नाबालिग स्टूडेंट से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। नाबालिग स्कूल पढ़ने गई थी। वहीं, से आरोपी उसे भगाकर ले गया और दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया। धमकियों से डरकर पीड़िता ने किसी को नहीं बताया, लेकिन आरोपी ने पीडिता के भाई के मोबाइल पर लडकी के साथ के फोटो भेजे तो मामला खुल गया। इसके बाद परिजनों ने मामला दर्ज कराया।

धंबोला थानाधिकारी ने बताया की घटना को लेकर नाबालिग पीड़िता के पिता की ओर से रिपोर्ट दी गई है। पिता ने बताया की उसकी नाबालिग बेटी गांव के एक सरकारी स्कूल में 12 वीं क्लास में पढ़ाई करती है। 3 सितंबर को वह स्कूल पढने के लिए गई थी, आरोपी लालसिंह पुत्र रायचंद डामोर निवासी कंकोडी थाना धंबोला बाइक लेकर आया। उसकी बेटी को बहला-फुसला कर जबरन बाइक पर बैठाकर ले गया। आरोपी उसे सुनसान जगह ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। इसके बाद आरोपी लालसिंह उसे वापस स्कूल के सामने छोड़कर फरार हो गया। आरोपी की धमकियों की वजह से बेटी ने घर आकर किसी को घटना के बारे में नहीं बताया। लेकिन 17 सितंबर को आरोपी जितेंद्र ने लडकी के साथ के फोटो उसके भाई के मोबाइल पर पोस्ट कर दिए। इसके बाद पूरे मामले का खुलासा हुआ। पीड़िता ने इसके बाद घटना के बारे में अपने परिजनों को बताया। पिता की रिपोर्ट पर धंबोला थाना पुलिस ने आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया है। वहीं, नाबालिग पीड़िता की गुरुवार को डूंगरपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मेडिकल जांच करवाई गई। आरोपी जितेंद्र फरार चल रहा है, जिसकी पुलिस तलाश कर रही है।

- आरोपी के पीड़िता के भाई के मोबाइल पर लडकी के साथ के फोटो भेजने से खुला मामला

जिले का एक और बेटा शहीद

झुंझुनूं, (निसं)। जिला कलेक्टर लक्ष्मण सिंह कुडी ने बताया कि जिले के बगड निवासी शहीद हवलदार नरेश नंबर 13627560छ गुरुवार 22 सितम्बर को चौकीबल (जम्मू कश्मीर) में ड्यूटी के दौरान शहीद हो गए हैं। शहीद का पार्थिव देह 24 सितंबर को सुबह 10:30 बजे बगड पहुंचेगा। शहीद का दाह संस्कार पैतृक गांव बगड में पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा।

बीए पार्ट तृतीय का परिणाम घोषित

अजमेर, (कासं)। महर्षि दयानंद सरस्वती विवि. अजमेर ने 2021-22 का बीए पार्ट तृतीय का परिणाम का जारी कर दिया है। परिक्षा नियंत्रक प्रो सुब्रतो दत्ता ने बताया कि बीए पार्ट तृतीय परीक्षा में कुल 62407 विद्यार्थी उपस्थित हुए थे, जिनमें से 44447 विधार्थी पास हुए है। परीक्षा परिणाम 71.22 प्रतिशत रहा। जिसमें प्रथम श्रेणी में 8367, द्वितीय श्रेणी में 29812, एवं तृतीय श्रेणी में 6282 विद्यार्थी पास हुए एवं 5170 विद्यार्थी सप्लीमेंट्री रहे।

युवक के अपहरण के बाद मारपीट कर चलती गाड़ी से फेंका

लालसोट, (निसं)। उपखंड मुख्यालय स्थित बस स्टैंड से खुद के गांव डॉब हरिपुरा जाने के लिए एक गाड़ी में लिफ्ट लेकर बैठे युवक विमल सैनी को उस गाड़ी में सवार अज्ञात बदमाशों द्वारा अपहरण कर युवक के साथ जमकर मारपीट करने व लूटपाट के बाद चलती गाड़ी से फेंक कर फरार हो गए।

घटना बुधवार शाम की है जब पीड़ित युवक विमल सैनी खुद की दुकान को बंद कर खुद के गांव रोज की तरह डॉब हरिपुरा थाना क्षेत्र रामगढ़ पचवारा के लिए बस स्टैंड पर युवक वाहन का इंतजार कर रहा था इसी दौरान वहां गुजर रही एक मारुति ओमनी वैन में उसके द्वारा लिफ्ट ली गई । जहां डूंगरपुर युवकों तथा लेकिन गाड़ी को नहीं रोकने के बाद युवक द्वारा विरोध किया गया । जहां उस गाड़ी में पहले से ही सवार तीन चार अज्ञात बदमाशों द्वारा गाड़ी के अंदर ही युवक विमल से जमकर मारपीट की गई। बदमाश युवकों द्वारा युवक के पास से नगदी भरा पर्स छीन लिया गया। इस दौरान

- अज्ञात बदमाशों के खिलाफ मामला हुआ दर्ज

मौका पाकर पीड़ित युवक द्वारा खुद के मोबाइल से उसके साथ घटित घटना की जानकारी तुरंत दी गई।

इस घटना का पता परिजनों को पड़ने के बाद परिजनों द्वारा पुलिस कंट्रोल रूम सहित आसपास इलाके में इसकी सूचना देने के बाद पुलिस के बढ़ते दबाव को देखकर बदमाशों द्वारा पीड़ित युवक के मोबाइल से सिम निकाल कर युवक को दोसा स्थित कृष्णा हॉस्पिटल के पीछे कच्चे रास्ते में पटक कर वहां से रफूचक्कर हो गए। इस मामले को लेकर पीड़ित युवक विमल सैनी द्वारा लालसोट थाने में अज्ञात बदमाशों के खिलाफ अपहरण व मारपीट कर लूटपाट का मुकदमा दर्ज कराया गया है।

पिता और दो मासूम बच्चों की संदिग्ध हालात में मौत

- पुलिस ने मौके से साक्ष्य जुटाने के साथ एफएसएल व एमओबी टीम को भी बुलाया
- झंवर के परिहारों की ढाणी की घटना

जोधपुर, (कासं)। निकटवर्ती झंवर स्थित धवा गांव में परिहारों की ढाणी में बुधवार की देर रात पिता और दो मासूम बच्चों की संदिग्ध हालात में मौत पर आज पुलिस ने तीनों शवों का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाया। प्रथम दृष्टया मामला हत्या के बाद आत्महत्या किए जाने का लगा।

एक बच्चे का रस्सी से गला घोंटने और दूसरे का मुंह दबाने की आशंका जताई जा रही है। मौत की वजह पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही साफ हो पाएगी। पुलिस ने आज सुबह मौके पर पहुंच फिर से साक्ष्य जुटाने के साथ एफएसएल टीम के साथ एमओबी टीम को भी बुलाया। बच्चों के बडे पिता की तरफ से मर्ग की रिपोर्ट पुलिस में दी गई है। बडे पिता ने किसी पर कोई शकसुबह जाहिर नहीं किया है। मृतक की पत्नी अभी बदहवाश स्थिति में है इस लिए पुलिस उससे ज्यादा कुछ पूछताछ नहीं कर पाई।

झंवर थानाधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि आरंभिक पड़ताल में सामने आया कि रूपाराम की पत्नी खेत पर गई हुई थी। शाम को वह खेत से लौटी तब उसके दो बच्चें दस साल का रामाराम एवं आठ साल का कृष्णा अचेतावस्था में खाट पर पड़े मिले। उनके मुंह से खून रिस रहा था। तब वह चिल्लाते हुए बाहर आई आस -पास के लोगों की मदद से दोनों बच्चों को तत्काल एम्स अस्पताल ले जाया गया। यहां पर डॉक्टर ने बच्चों के पिता के बारे में पूछा तो घरवाले उसकी तलाश में लगे। बाद में पता लगा कि रूपाराम का शव पशुओं के बाडे में छपरे में फंदे पर लटका मिला। तब उसे भी फंदे से उतारा गया।

थानाधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि शवों का आज दोपहर में मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाया गया है। प्रथम दृष्टया बच्चों की हत्या के बाद पिता द्वारा फंदा लगाने की संभावना ज्यादा है। बच्चों की मौत की वजह पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही साफ हो पाएगी। घटना में अब मृतक रूपाराम पटेल के बडे भाई कोजाराम की तरफ से मर्ग की रिपोर्ट दी गई है।

तीन ट्रेन में बढ़ाये अतिरिक्त कोच

जोधपुर, (कासं)। रेलों में प्रतीक्षा सूची को देखते हुए यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे ने तीन जोड़ी रेलसेवाओं में डिब्बों की अस्थाई बढोतरी की जा रही है। मंडल रेल प्रबंधक, जोधपुर सुश्री गीतिका पांडेय के अनुसार गाडी संख्या 20943/20944, बान्द्रा टर्मिनस-भगत की कोठी-बान्द्रा टर्मिनस हमसफर एक्सप्रेस रेलसेवा में बान्द्रा टर्मिनस से 06 से 27 अक्टूबर तक एवं भगत की कोठी से 07 से 28 अक्टूबर तक 01 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढोतरी की जा रही है।

इसी प्रकार गाड़ी संख्या 14646/14645, जम्मूतवी-जैसलमेर-जम्मूतवी रेलसेवा में जम्मूतवी से 26 सितंबर से 10 नवम्बर तक एवं 17 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक तथा जैसलमेर से 28 सितंबर से 12 नवम्बर तक एवं 19 अक्टूबर से 12 नवम्बर तक 01 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढोतरी की जा रही है। दूसरी तरफ गाड़ी संख्या 14662/14661, जम्मूतवी-बाड़मेर-जम्मूतवी रेलसेवा में जम्मूतवी से 28 सितंबर से 11 नवम्बर एवं 19 अक्टूबर से 11 नवम्बर तक तथा बाड़मेर से 30 सितंबर से 13 नवम्बर एवं 21 अक्टूबर से 13 नवम्बर तक 01 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढोतरी की जा रही है।

मोक्षधाम जाने के लिए भी रास्ता नहीं

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के जहाजपुर उपखंड क्षेत्र भंडारिया ग्राम में मोक्षधाम जाने के लिए रास्ता सुगम न होने के कारण अंतिम संस्कार के लिए भी ग्रामीणों को परेशान होना पड़ रहा है। गुरूवार को भी महिला के अंतिम संस्कार में जाने के लिए लोगों को शव को पानी से होकर गुजरना पड़ा। लोगों का कहना है कि ग्रामीणों को आये दिन इस समस्या से सामना करना पड़ रहा है पर पंचायत व उपखंड प्रशासन ने अब तक सुनवाई नहीं की है।

- रास्ते में 4 फिट तक भरे पानी से शव को ले जाने की मजबूरी

आजादी के 75 वर्ष होने के बाद भी भंडारिया ग्राम में मोक्षधाम का रास्ता सही न होने तथा क्षतिग्रस्त पुलिया के कारण रास्ते में 4 फीट तक भरे पानी से शव को लेकर नहीं गुजर पाने से लोगों में आक्रोश व्याप्त है। इन लोगों ने कहा है कि चुनाव में वोट के लिए सभी प्रयास किये जाते हैं पर ऐसे मामले में सुनवाई नहीं हो रही है। ग्रामीणों ने प्रशासन से क्षतिग्रत पुलिया एवं बीच रास्ते में भरे पानी की निकासी की मांग की है।

महिला को अंतिम संस्कार के लिए ले जाते ग्रामीण।

किसानों को छह घंटे बिजली दो, अन्यथा इस सरकार का सर्वनाश होगा : रामप्रताप कासनियां

'गांवों में 15 पावर के ट्रांसफार्मर पर 100 कनेक्शन कर रखे हैं, बल्ब भी दीये की तरह जलता है'

-विधानसभा संवाददाता-

- कासनियां ने कहा ''सरकार विधानसभा में कहती तो है कि 72 घंटे में ट्रांसफार्मर बदल देंगे, लेकिन 15-15 दिन तक ट्रांसफार्मर नहीं बदले जाते। काश्तकार खुद जला हुआ ट्रांसफार्मर लेकर निजी खर्चे पर बदलवाता फिरता है।''
- बूंदी के केशोरायपाटन में बाढ़ से 15 दिन तक बिजली बंद रही। बारिश आने पर इलाके में 8-8 घंटे बिजली कटौती होती है, कौन जिम्मेदार है : चंद्रकांता मेघवाल

जयपुर। प्रदेश में बिजली संकट के मुद्दे पर विधानसभा में चर्चा के दौरान बीजेपी विधायकों ने गहलोत सरकार को जमकर घेरा। सूरतगढ़ विधायक रामप्रताप कासनियां ने कहा "4 साल में सब लोग लाइट की स्थिति को लेकर रो रहे हैं। चाहे सारे कारखानों की लाइट बंद कर दो, कुछ भी करो। लेकिन किसानों की पूरी 6 घंटे लाइट देने का काम सरकार करेगी, तो बचेगी, वरना इस सरकार का सर्वनाश होगा। बिजली के मामले में ध्यान नहीं दिया, तो चेतावनी देता हूं कि बिजाई का समय है, लोग आंदोलित हो उठेंगे।"

विधायक कासनियां ने कहा कि राज्य सरकार के पास बिजली सरप्लस है तो गई कहां, उसको कौन खा गया? कहां चोरी हो रही है पकड़ो। चोरी तो हो रही है ये बात आप दबी जबान से मानते हो, लेकिन उसे पकड़ों तो सही। हर गांव में एक ट्रांसफार्मर 15 पावर का है, उस पर कनेक्शन 100 हैं। 100 से ज्यादा लोड होते ही वो ट्रांसफार्मर काम करना बंद कर देता है। दीये की तरह बल्ब जलता है। क्योंकि 150 आदमियों ने कुंडी डाल ली। कुंडी डालने की बात डिपार्टमेंट से छिपी हुई नहीं है।

कासनियां बोले मुझे किसानों के बारे में ज्यादा बोलना नहीं चाहिए। पर हम भी बख्शते नहीं है। मौका लगे 2 फेस मिल जाए तो पुर्जा लगाकर फिर ट्यूबवेल चला लेते हैं। इस तरह की घटनाएं भी होती है। इस पर रोकथाम लगानी चाहिए। बार-बार कहने के बावजूद ठेकेदारी प्रथा चल रही है। गांव के अंदर बड़ा फाल्ट हो जाए तो सरकारी फॉरमेन तो सुधार करते नहीं है। लाइनमैन ठेके वालों के आने की बात कहते हैं। वो 10-10 दिन तक नहीं आते हैं। सरकार यहां कहती तो है कि 72 घंटे में ट्रांसफार्मर बदल देंगे। लेकिन 15-15 दिन तक ट्रांसफार्मर नहीं बदले जाते हैं। काश्तकार खुद जला हुआ ट्रांसफार्मर लेकर शहर में जाता है, नया आने पर भी खुद के खर्चे से ट्रांसफार्मर खेत पर लाता है। सरकार इसका पैसा वसूल करती है। काश्तकार पर डबल मार हो रही है। उसे निजी वाहन से ट्रांसफार्मर पहुंचाना पडता है। बाद में नया ट्रांसफॉर्मर आने पर ले जाने में भी खर्चा करना पडता है, काश्तकार से दोहरी लूट हो रही है। बूंदी के केशोरायपाटन से बीजेपी विधायक चन्द्रकांता मेघवाल ने कहा मेरे विधानसभा क्षेत्र में डिस्कॉम के पास 132 केवी जीएसएस के 5 प्रस्ताव आए हुए हैं। बाढ़ की वजह से मेरे क्षेत्र में 15 दिन बिजली बंद रही। 132 केवी के सारे जीएसएस सेंक्शन किए जाएं। 33 केवीए की लाइन डालने के प्रस्ताव भी सेंक्शन किए जाएं। पिछले 3 साल से बिजली की व्यवस्था नहीं हो पा रही है। बारिश आने पर इलाके में 8-8 घंटे बिजली बंद रहती है।

मेघवाल ने सदन में कहा प्रदेश में बिजली की कुल उत्पादन क्षमता 8880 मेगावाट है, लेकिन केवल 4545 मेगावाट बिजली पैदा कर पा रहे हैं। सूरतगढ़ ओ एंड एम की 1 यूनिट बंद है। सूरतगढ़ सुपर क्रिटिकल की 660 मेगावाट की 1 यूनिट बंद है। कोटा में 3 नम्बर यूनिट बंद है। छबड़ा में 4 नम्बर यूनिट 6 महीने से बंद है। उत्पादन निगम 50 प्रतिशत ही बिजली प्रोडक्शन कर पा रही है। अघोषित बिजली कटौती और लोड शेडिंग के नाम पर जनता को रात-दिन भरी बारिश में भी परेशानी हो रही है। जालौर से बीजेपी विधायक जोगेश्वर गर्ग बोले- 20 साल से ज्यादा वक्त हो गया, जब इसी पवित्र सदन में राजस्थान स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड को भंग करके 5 कंपनियां बनाईं। यह तय किया कि 20 साल बाद फिर से विचार करेंगे कि यह प्रयोग सफल हुआ या नहीं। अब फिर से विचार करने का वक्त आ गया है। जिस समय का विघटन हुआ, उस वक्त तीनों डिस्कॉम कंपनियों का घाटा 600 करोड़ रुपए घाटा था। बाद में घाटा बढ़ता गया। जिसमें ट्रांसमिशन लॉस बड़ा कारण था। 5 साल पहले इन बिजली कंपनियों का घाटा 80 हजार करोड़ रुपए तक पहुंच गया था। तब बीजेपी की सरकार थी और वसुंधरा सरकार सीएम थी। वसुंधरा राजे ने 60 हजार करोड़ रुपए सरकारी खजाने से देकर कंपनी को घाटे से उबारने की कोशिश की थी। अब 5 साल बाद वापस 80 हजार करोड़ से ज्यादा घाटा हो गया है। अब आपका वक्त आ गया है सरकारी खजाने से राजस्थान सरकार 80 हजार करोड़ के घाटे की भरपाई करे। चुनावी साल आने वाला है कई लॉलीपॉप देने होंगे। ये फ्री, वो फ्री, तो सरकार अभी से व्यवस्था करे।

स्थानीय लोगों को जोड़ कर पर्यटन को विकसित करें : राज्यपाल

- मिश्र ने इंडियन हेरिटेज होटल्स एसोसिएशन के 9वें वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन किया

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने पर्यटन में स्थानीय लोगों की भागीदारी बढ़ाते हुए इसे जन उद्योग के रूप में विकसित किए जाने का आव्हान किया है। उन्होंने पर्यटन को अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण घटक बताते हुए इससे रोजगार के अधिकाधिक सृजन की संभावनाओं पर कार्य किए जाने की आवश्यकता जताई।

राज्यपाल मिश्र गुरुवार दोपहर जयपुर जिले के बिशनगढ़ स्थित अलीला फोर्ट में इंडियन हेरिटेज होटल्स एसोसिएशन (आईएचएचए) के 9वें वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पर्यटकों के आने से होटल उद्योग को ही लाभ नहीं होता बल्कि दूसरे उद्योगों, हस्तशिल्प और परिवहन से जुड़े स्थानीय लोगों को भी आजीविका मिलती है। इसके महत्व को देखते हुए ही विकसित राष्ट्र भी पर्यटन को अपनी अर्थव्यवस्था में प्राथमिकता से स्थान देते हैं। उन्होंने कहा कि कोविड के दौर में पर्यटन उद्योग को सबसे अधिक नुकसान झेलना पड़ा था, ऐसे में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए और अधिक प्रभावी प्रयास किये जाने चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि राजस्थान में पर्यटकों के स्वागत और आवभगत की अनूठी संस्कृति है। प्राचीन धरोहर, स्मारकों, किले-महलों के रूप में जो पर्यटन सम्पदा राजस्थान में है, उतनी किसी और प्रदेश में नहीं है। उन्होंने कहा कि यहां की समृद्ध पर्यटन विरासत और विविधता के प्रचार- प्रसार के लिए सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोकप्रिय पर्यटन केन्द्रों के साथ ही कम प्रचलित पर्यटन स्थलों, हेरिटेज से जुड़े स्मारकों, किले-महलों को पर्यटन मानचित्र में पहचान दिलाई जाए। राज्यपाल मिश्र ने कहा कि हेरिटेज होटल्स पर्यटकों के आकर्षण का बड़ा केन्द्र होते हैं। इन हेरिटेज होटल्स के साथ उस स्थान-विशेष की संस्कृति से भी यहां आने वाले पर्यटकों को जोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अलग-अलग कलाओं से जुड़े लोक कलाकारों को भी हेरिटेज होटल्स द्वारा कला प्रदर्शन के अधिकाधिक अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

पंजाब के पूर्व राज्यपाल वी.पी. सिंह बदनौर ने राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत की चर्चा करते हुए इसके संरक्षण की दिशा में समन्वित प्रयास किए जाने पर बल दिया।

राजस्थान विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष राव राजेंद्र सिंह ने कहा कि राजस्थान की विश्व में पर्यटन को लेकर एक अलग पहचान है। भारत में आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान जरूर आता है।

आईएचएचए के अध्यक्ष रणधीर विक्रम सिंह मंडावा ने कहा कि देश में हेरिटेज पर्यटन को प्रोत्साहन देने के साथ ही भारतीय विरासत को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से इस दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया है। आईएचएचए के अध्यक्ष (एमेरिटस) और जोधपुर के पूर्व महाराजा गज सिंह ने विरासत पर्यटन के विकास, संभावनाओं और चुनौतियों के बारे में विचार व्यक्त किए।

लम्पी रोग से हिंगोनिया में गौवंश की हालत बेहद दयनीय

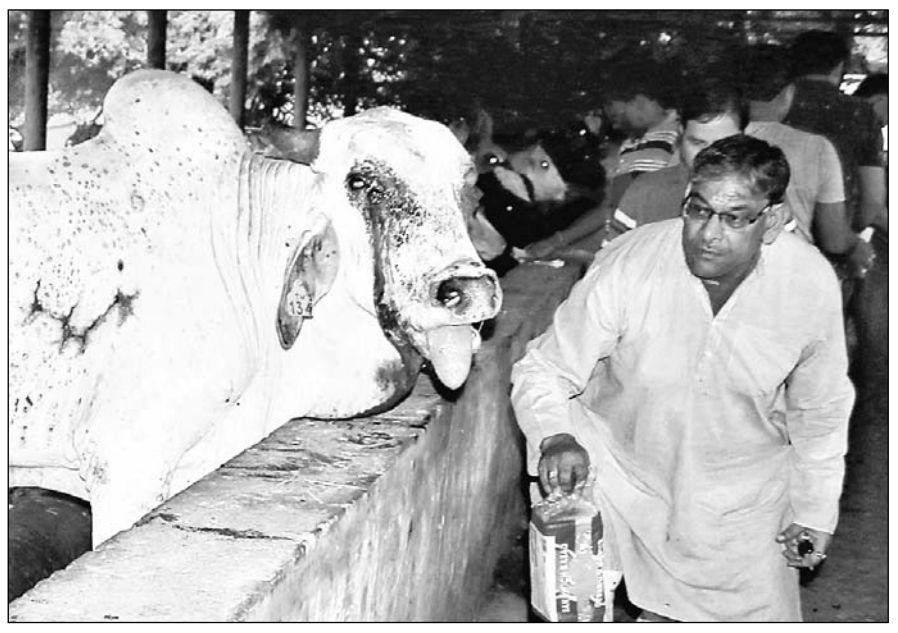

लम्पी रोग से पीड़ित गौवंश की हिंगौनिया गौशाला में हालात बेहद अधिक दयनीय है। यहां महापौर व अफसर जब निरीक्षण करने जाते हैं तो उन्हें स्वस्थ अथवा कम बीमार गौवंश दिखाया जा रहा है, जबकि बाड़ों में गौवंश की हालत ज्यादा बदतर है। हालांकि समाजसेवी और गौ-प्रेमी अपनी टीम के साथ लम्पी ग्रसित गायों को आयुर्वेदिक दवाएं भी दे रहे हैं। सामाजिक कार्यकर्ता नितेश खंडेलवाल अपनी टीम के साथ लंपी ग्रसित गायों को हिंगोनिया गौशाला में डॉक्टर द्वारा बताई विधि अनुसार प्रतिदिन 4000 से ज्यादा आयुर्वेदिक लड्डू पहुंचा रहे हैं।

'वनभूमि पर पट्टा जारी करने वाले अधिकारियों की जानकारी दें'

- नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल की भोपाल बेंच ने नाहरगढ़ वाइल्ड लाइफ सेंचुरी की वन भूमि पर पट्टा काटने के मामले में नाराजगी जताई है

जयपुर, (का.सं.)। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल की भोपाल बेंच ने नाहरगढ़ वाइल्ड लाइफ सेंचुरी की वन भूमि पर पट्टा काटने के मामले में नाराजगी जताई है। एनजीटी ने वन विभाग की भूमि के खसरा नंबर बांटने और पट्टा जारी करने वाले अधिकारियों की जांच कर उसकी जानकारी एनजीटी में पेश करने को कहा है। वहीं अधिकरण ने पट्टा ट्रांसफर के संबंध में सभी जानकारी एक माह में पेश करने को कहा है। अधिकरण ने पीसीसीफ, स्थानीय कलेक्टर और जेडीए आयुक्त को कहा है कि वे एक साथ मिलकर अतिक्रमण के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करें। अधिकरण ने यह आदेश राजेन्द्र तिवारी के प्रार्थना पत्र पर दिए।

सुनवाई के दौरान अधिकरण के आदेश की पालना में जेडीए आयुक्त और पीसीसीएफ वीसी के जरिए पेश हुए। जेडीसी ने माना कि नाहरगढ़ अभयारण्य की जमीन पर अतिक्रमण है और उस पर नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है। प्रार्थना पत्र में कहा गया कि नाहरगढ़ वाइल्ड लाइफ सेंचुरी के खसरा नंबर 6445 पर स्थित पिलर नंबर 361 से 366 की भूमि पर बहुमंजिला होटल का निर्माण किया जा रहा है। वन विभाग ने भी 21 जुलाई 2021 को माना था कि वन भूमि पर अतिक्रमण कर निर्माण हो रहा है। मामले की सुनवाई करते हुए न्यायिक सदस्य न्यायाधीश एसके सिंह और विशेषज्ञ सदस्य अरुण कुमार वर्मा की बेंच ने कहा कि भूमि से अतिक्रमण हटाने की नियमानुसार कार्रवाई के साथ बताया जाए कि आखिर कब किस अधिकारी के कार्यकाल में पूरी प्रक्रिया हुई है। इसी के साथ मामले में जवाब देने के लिए जेडीए सहित अन्य पक्षकारों ने एक माह का समय मांगा।

वन भूमि पर बसे अतिक्रमियों के पुनर्वास का कोई प्रावधान नहीं : हेमाराम चौधरी

- माइनिंग करने वाले या बड़े औद्योगिक प्लांट लगाने वाले लोग तो आसानी कन्वर्जन करवा लेते हैं, लेकिन आम आदमी ऐसा नहीं कर पा रहा है। ऐसे में सरकार को ही चाहिए कि वो पहल कर इस दिशा में कदम उठाए : अध्यक्ष
- इस पर मंत्री हेमाराम चौधरी ने कहा, ''अगर ग्राम पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम या फिर कोई ऐसी एजेंसी उन्हें लिखित शिकायत दे तभी वो इस दिशा में कुछ कर सकेंगे''

जयपुर (वि.सं.)। राजस्थान के वन एवं पर्यावरण मंत्री हेमाराम चौधरी ने आज विधानसभा में कहा कि वन भूमि से अतिक्रमियों को हटाए जाने के बाद उनके पुनर्वास का वर्तमान में कोई प्रावधान नहीं है।

चौधरी ने प्रश्नकाल में विधायक बाबूलाल नागर के प्रश्न पर कहा कि पर वन भूमि से अतिक्रमण हटाने के लिए विभाग द्वारा नियमानुसार कार्रवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 तथा वन्य जीव संरक्षण अधिनियम- 1972 के तहत अतिक्रमियों के खिलाफ कारावास और जुर्माने का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि वन भूमि पर अतिक्रमण करने वालों के लिए पुनर्वास का कोई प्रावधान नहीं है। चौधरी ने कहा कि केवल जनजाति क्षेत्र में वन अधिकार अधिनियम के तहत पट्टे दिये जाने का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि वन भूमि को किसी और उपयोग में काम नहीं लिया जा सकता है।

स्पीकर ने वन भूमि क्षेत्र में निवास करने वालों की समस्याओं पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि माइनिंग करने वाले या बड़े औद्योगिक प्लांट लगाने वाले लोग तो आसानी कन्वर्जन करवा लेते हैं, लेकिन आम आदमी ऐसा नहीं कर पा रहा है। ऐसे में सरकार को ही चाहिए कि वो पहल कर इस दिशा में कदम उठाए। इस पर मंत्री हेमाराम चौधरी ने कहा कि अगर ग्राम पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम या फिर कोई ऐसी एजेंसी उन्हें लिखित शिकायत दे तभी वो इस दिशा में कुछ कर सकेंगे।

'वेद अध्यापकों की नियमित भर्ती एक माह में शुरू होगी'

- मंत्री ने माना कि संस्कृत विवि.एवं संस्कृत कॉलेतों में वेदों का अध्यापन के लिए व्याख्याता व प्रोफेसर की नियमित भर्ती नहीं की गई है

जयपुर, (वि.सं.)) राजस्थान के संस्कृत शिक्षा मंत्री डॉ. बी डी कल्ला ने आज विधानसभा में आश्वस्त किया प्रदेश के संस्कृत महाविद्यालयों एवं जगदगुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में आगामी एक महीने में वेदों के अध्यापन के लिए वेद अध्यापकों के सेवा नियम तथा रोस्टर प्रणाली लागू कर नियमित भर्ती प्रक्रिया शुरू कर दी जायेगी।

डॉ. कल्ला ने प्रश्नकाल में विधायकों के पूरक प्रश्नों के जवाब में कहा कि यह सही है कि संस्कृत विश्व विद्यालय एवं संस्कृत महाविद्यालयों में वेदों का अध्यापन कराने के लिए व्याख्याता, एसोसिएट प्रोफेसर, सहायक प्रोफेसर एवं प्रोफेसर की नियमित भर्ती नहीं की गई है लेकिन संस्कृत शिक्षा एवं वेदों का अध्ययन प्रभावित नहीं हो इसके लिए हमने विद्या सम्बल योजना के तहत लेक्चरर को 20 हजार रूपये, एसोसिएट प्रोफेसर को 40 हजार रूपये एवं प्रोफेसर को 50 हजार रूपये मासिक दिये जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यह सही है कि संस्कृत शिक्षा एवं वेदों के अध्धयन के लिए सेवा नियम 1978 में बने थे, लेकिन उसके बाद आज तक इस क्षेत्र में कोई कार्य नहीं हुआ है।

डॉ. कल्ला ने कहा कि संस्कृत शिक्षा एवं वेदों का हमारे समाज में महत्वपूर्ण स्थान है और हम वेदों के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए हर सम्भव प्रयास सुनिश्चित करेंगें। उन्होंने यह भी आश्वस्त किया कि संस्कृत महाविद्यालयों में रिक्त पदों को राजस्थान लोकसेवा आयोग के माध्यम से भरा जायेगा।

उन्होंने कहा कि संस्कृत महाविद्यालय सेवा नियम प्रक्रियाधीन है तथा सेवा नियम जारी होने पर महाविद्यालय के रिक्त पदों को भरा जा सकेगा।

ग्यारह आतंकियों के विरुद्ध आरोप पत्र पेश

जयपुर, (का.सं.)। एनआईए मामलों की विशेष अदालत में गुरुवार को एनआईए ने चितौड़गढ़ के निम्बाहेड़ा में विस्फोटक बरामदगी के मामले में 11 आरोपियों के विरुद्ध आरोप पत्र पेश किया है। वहीं मामले में अग्रिम जांच भी जारी रखी गई है। एनआईए ने अपनी जांच में इमरान खान, आक्रिफ़, अमीन खान, मोहम्मद अमीन पटेल, सैफुल्ला खान, अल्तमश खान, जुबेर खान, मजहर खान, फिरोज खान, मोहम्मद यूनुस साकी और इमरान को आरोपी माना है।

जानकारी के अनुसार निम्बाहेड़ा में एक कार से विस्फोटक पदार्थ बरामद हुआ था। शुरुआत में निम्बाहेडा पुलिस थाने में मामला दर्ज हुआ था। वहीं बाद में इसे एनआईए को भेज दिया गया। जहां एनआईए ने प्रकरण फिर से दर्ज कर जांच आरंभ की। जांच में पता चला की मुख्य साजिशकर्ता इमरान खान व अन्य आरोपी सूफा आतंकवादी संगठन के सदस्य थे और उन्होंने आतंकी घटना को अंजाम देने के लिए साजिश रची थी। आरोपी आईएसआईएस के प्रेरित थे। एनआईए को अनुसंधान में पता चला कि आरोपी इमरान अपने खेत मे अन्य सह आरोपियों को आईईडी बनाने और असेम्बल करने की ट्रेनिंग देता था आरोपी इमरान के निर्देश पर ही अन्य आरोपी स्थानीय बाजार से रसायन और अन्य सामग्री खरीदकर लाते थे और विस्फोटक तैयार करते थे।

केसावत की जमानत अर्जी खारिज

जयपुर। शहर की निचली अदालत ने मारपीट और हत्या का प्रयास करने के आरोप में जेल में बंद पूर्व राज्यमंत्री गोपाल केसावत की जमानत अर्जी को खारिज कर दिया है। अदालत ने कहा कि आरोपी पर गंभीर प्रकृति का आरोप है। इस स्तर पर यह नहीं माना जा सकता कि उसे मामले में झूठा फंसाया गया है। ऐसे में आरोपी को जमानत पर रिहा करना उचित नहीं है। जमानत अर्जी में कहा गया था कि उसे प्रकरण में झूठा फंसाया गया है। इसके अलावा वह काफी दिनों से जेल में बंद है। यदि वह लंबे समय तक जेल में रहा तो उसके परिवार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

आईयूआरसी व ग्रेटर निगम में एमओयू

जयपुर। इंटरनेशनल अर्बन एंड रीजनल कार्पोरेशन (आईयूआरसी) के साथ नगर निगम ग्रेटर ने एमओयू किया है। इसके तहत चयनित शहरों को अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट में सपोर्ट किया जाएगा। नगर निगम आयुक्त महेंद्र सोनी और आईयूआरसी के इंडियन कॉर्डिनेटर पेनगोयटिस ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस दौरान महापौर सौम्या गुर्जर भी मौजूद रही।

पूनिया ने आचार्य धर्मेन्द्र को श्रद्धांजलि दी

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने आज संतों की नगरी विराटनगर पहुंचकर आचार्य धर्मेन्द्र महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि, भगवान श्रीराम मंदिर से लेकर जनजागृति के लिए आचार्य धर्मेन्द्र के योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता, उनकी दिव्य प्रेरणा सदैव हमें मिलती रहेगी। दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पंचखण्ड पीठाधीश्वर आचार्य धर्मेन्द्र के निधन पर गहरा शोक जताते हुए उनके पुत्र भाजपा नेता प्रणवेन्द्र शर्मा को पत्र भेजकर संवेदनाएं व्यक्त की है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने शोक संदेश में कहा भगवान श्री राम में अटूट श्रद्धा रखने वाले श्रीमद् पंचखण्ड पीठाधीश्वर आचार्य धर्मेंद्र का जीवन समाज और राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित रहा।

'जिस तरह सांड लाल कपड़े को देखकर आपा खो देता है, उसी प्रकार आप धारीवाल को देखकर खड़े हो जाते हैं'

स्पीकर डॉ.सी.पी.जोशी ने विधायक मदन दिलावर को जमकर फटकार लगाई

जयपुर, (वि.सं.)। विधानसभा में बीजेपी विधायक मदन दिलावर को अध्यक्ष सीपी जोशी ने लताड़ लगाई। स्पीकर ने कहा कि जिस तरह से सांड लाल कपड़े को देखकर अपना आपा खो देता है, ठीक वैसे ही आप भी मंत्री शांति धारीवाल को देखकर खड़े हो जाते हैं।

दरअसल, सदन में सिरोही में प्रशासन शहरों के संग अभियान के तहत आबूरोड में पेंडिंग कामों पर उठे सवाल का मंत्री शांति धारीवाल जवाब दे रहे थे। इसी बीच अचानक बीजेपी विधायक मदन दिलावर खड़े हो गए। इस पर स्पीकर जोशी नाराज हो गए और उन्होंने बीजेपी विधायक को जमकर फटकार लगाई। स्पीकर सीपी जोशी ने मदन दिलावर से कहा कि आप सार्वजनिक जीवन में किस तरह का उदाहरण पेश करना चाहते हैं। इसके बाद दिलावर बैठ गए। विधानसभा में मदन दिलावर उग्र तेवर अपनाते रहते हैं, स्पीकर पहले भी उन्हें फटकार लगा चुके हैं। लोढ़ा ने प्रशासन शहरों के संग अभियान में पट्टे बांटने में आबूरोड नगरपालिका की खराब प्रदर्शन को लेकर मंत्री और विभाग पर सवाल उठाए। इस दौरान लोढ़ा की स्पीकर से हल्की नोकझोंक भी हुई।

धारीवाल ने कहा कि सिरोही जिले में प्रशासन शहरों के संग अभियान के तहत 19 फरवरी तक 30559 प्रकरणों में से 26381 प्रकरणों का निस्तारण किया गया है। मात्र 4 हजार 188 प्रकरण शेष रहे हैं। उन्होंने कहा कि सिरोही जिले में सात नगर पालिकाएं हैं। जिस भी नगरपालिका में अधिक संख्या में प्रकरण बाकी रह गए हैं, वहां विशेष टीम बनाकर भेजी जाएगी तथा अभियान चलाकर लम्बित प्रकरणों का निस्तारण किया जाएगा। स्पीकर जोशी ने मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालवीय के विभाग को लेकर भी सवाल किया। जिसका जवाब देते हुए मंत्री ने कहा कि डैम पंचायत राज विभाग में ट्रांसफर हो चुके हैं। इस पर स्पीकर ने कहा कि जब इरिगेशन विभाग ने ज्यादातर डैम पंचायती राज विभाग को ट्रांसफर कर दिए हैं तो फिर यह काम जानने वाले लोगों को भी ट्रांसफर करना चाहिए था। उन्होंने कहा कि जब विभाग ने डैम ही ट्रांसफर कर दिया तो फिर विभाग को मैन पावर भी ट्रांसफर करनी चाहिए थी।

प्रदेश में 70 नए करोना संक्रमित मिले गुरूवार को

- इस बीच, राज्य में नए संक्रमितों के मुकाबले में दोगुना से ज्यादा मरीज ठीक हुए हैं।
- जयपुर जिले में पिछले चौबीस घंटों में 15 नए संक्रमित मिले हैं।

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रदेश में गुरूवार को नए करोना संक्रमितों की संख्या में और गिरावट आई है। इस दौरान केवल 70 नए संक्रमित मिले हैं। वहीं इस बीच दोगुना से ज्यादा मरीज ठीक होने से एक्टिव केस घटकर एक हजार से भी कम रह गए हैं।

प्रदेश में करोना संक्रमण का दायरा सिमटता जा रहा है। इसके चलते पिछले चौबीस घंटों में 16 जिलों में 70 नए संक्रमित मिले हैं। इससे पहले बुधवार को इनकी संख्या 96 रही थी। इधर राजधानी जयपुर में आज 15 नए संकमित मिले हैं। इसके अलावा अलवर में 11, अजमेर में 8, उदयपुर में 6, टोंक, बीकानेर, चितौड़गढ़ व जोधपुर में 4-4, राजसमंद, कोटा व धौलपुर में 3-3 तथा सिरोही, सीकर, हनुमानगढ़, बूंदी व भरतपुर में एक-एक नया मरीज मिला। इस बीच राज्य में जांच के लिए 12 हजार 591 सैम्पल लिए गए हैं।

प्रदेश में गुरूवार को नए संक्रमितों के मुकाबले दोगुना से अधिक रिकवरी हुई है। इस दौरान 177 मरीजों के ठीक होने से एक्टिव केस घटकर 938 रह गए हैं। जयपुर में भी आज 47 रोगियों के स्वस्थ होने से 218 मामले बाकी रह गए हैं। प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालांकि अब तक राज्य में इस बीमारी से 9637 लोगों की मौत हो चुकी है।

उधर, जयपुर में गुरूवार को 13 स्थानों पर नए संक्रमित मिले हैं। इनमें बस्सी और मानसरोवर में 2-2 तथा अजमेर रोड, आमेर, बनीपार्क, चौमूं, जगतपुरा, झोटवाड़ा, कालवाड़, रेलवे स्टेशन, सांगानेर और सोड़ाला में में 1-1 नया संक्रमित मिला है। इस बीच एक संक्रमित का पता गलत मिला है।

किसानों को शुष्क बागवानी में प्रवर्धन तकनीक का प्रशिक्षण दिया

बीकानेर, (कासं)। केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान में भारत सरकार द्वारा संचालित एससीएसपी योजना के अंतर्गत तीन दिवसीय शुष्क क्षेत्रीय फलों एवं सब्जियों में प्रवर्धन तकनीक पर प्रशिक्षण का दिया गया।

प्रशिक्षण में बीकानेर जिले के खींचिया गांव एवं आसपास की ढाणियों के 23 किसानों 20 से 22 सितम्बर तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण संयोजक डॉ. महेन्द्र चौधरी ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान अनुसूचित जाति के किसानों को संस्थान द्वारा विकसित उन्नत स्थानीय फल वृक्षों की प्रवर्धन तकनीक और बेर, आंवला, खेजड़ी, शहतूत, लसोड़ा, नींबू वर्गीय फल, करोंदा, अनार, अंजीर, बील, इत्यादि की नर्सरी तैयार करने का प्रशिक्षण दिया गया।

समापन सत्र में योजना के अध्यक्ष और प्रधान वैज्ञानिक डॉ. मुकेश कुमार जाटव ने शुष्क फल एवं सब्जी फसलों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की महत्ता पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. अनीता मीणा ने मृदा प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य और तकनीक पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने मृदा की जांच के नमूने लेने की विधा पर भी चर्चा की। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. धुरेन्द्र सिंह किसानों की आमदनी को दोगुनी करने में सहायक पोषण की महत्वता पर विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि यदि पोषण पर उचित ध्यान दिया जाए तो उत्पादन अधिक होगा और आय बढ़ेगी। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बालूराम चौधरी, द्वारा सब्जियों की नवीन तकनीकी एवं उनमें रोग नियंत्रण तथा संरक्षित खेती की तकनीक के बारे में प्रशिक्षण दिया।

प्रधान वैज्ञानिक डॉ. दीपक कुमार सरोलिया ने पौधशाला प्रबंधन एवं डॉ. रामकेश मीणा ने पौधशाला स्थापना की विभिन्न तकनीक की जानकारी दी। डॉ. पवन सिंह गुर्जर ने खेजड़ी के मूलवृंत तैयार करने एवं बीज बोने की तकनीक पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. हनुमान राम ने प्रो-ट्रे में सब्जी की पौध तैयार करने एवं उन्हें खेत में लगाने की विधियों को समझाया। डॉ. रूपचंद बलाई ने फसलों में आवश्यक खाद एवं उर्वरकों के प्रयोग और लाभ के बारे जानकारी दी।

प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एस. के. माहेश्वरी ने पौधशाला में होने वाली बीमारियों एवं उनके उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराई। प्रशिक्षण के समापन के अवसर पर किसानों को डीएपी खाद और शुष्क बागवानी फलों के पौधे निशुल्क वितरित किए।

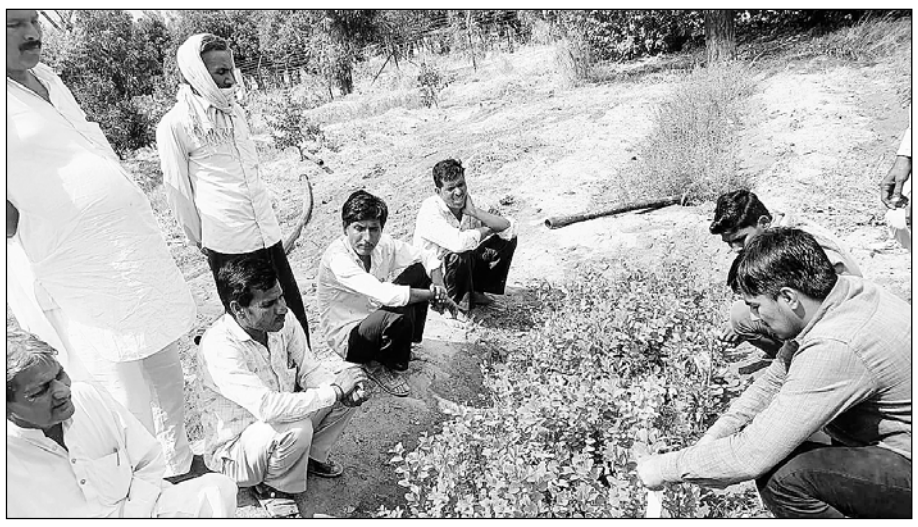

शुष्क बागवानी संस्थान ने किसानों को शुष्क क्षेत्रीय फल एवं सब्जियों में प्रवर्धन तकनीक का प्रशिक्षण दिया।

■ शुष्क फल एवं सब्जी फसलों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की महत्ता पर विस्तार से जानकारी दी

जल संचय कार्य पूर्ण करने के निर्देश : श्रीगंगानगर में वर्षा जल के अधिकतम संग्रहण, संरक्षण और उपलब्ध जल का न्यायोचित उपयोग करने तथा उद्देश्यों को पूर्ण करने के परिपेक्ष में वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा 146 के अनुसार राजीव गांधी जल संचय योजना- द्वितीय चरण प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया है।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर सतर्कता कमला अलारिया ने बताया कि ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के प्रमुख शासन सचिव द्वारा जारी पत्र के अनुसार उक्त योजना के द्वितीय चरण में सम्पादित होने वाले कार्यों, योजना के उद्देश्यों, जिला स्तरीय समिति के गठन, जिला स्तरीय समिति की बैठकों को आहूत करने, उक्त समिति को प्रदत्त कार्यों की पूर्ति एवं योजना के द्वितीय चरण हेतु तैयार की गई टाइम लाइन के अनुसार समस्त कार्य करवाये जाने हेतु संबंधित विभागों से समन्वय कर आवश्यक अग्रिम विभागीय कार्यवाही करने के लिये संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया गया है।

भाजपा 25 को कमलोत्सव मनायेगी

बीकानेर, (कासं)। जनसंघ के संस्थापक सदस्य और राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं एकात्मक मानवतावाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल दयाल उपाध्याय की 103 वी जयंती के अवसर पर 25 सितम्बर को कमलोत्सव के रूप में मनाया जायेगा।

जिला अध्यक्ष अखिलेश प्रताप सिंह ने आज पार्टी कार्यालय में मण्डल अध्यक्ष की बैठक में कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया। इस अवसर जिला अध्यक्ष अखिलेश प्रताप ने बताया कि कमलोत्सव कार्यक्रम जिले के सभी 395 बूथ पर आयोजित किये जायेंगे। कार्यकर्ता प्रात: 11.00 बजे प्रधानमंत्री के मन की बात के कार्यक्रम को अपने-अपने बूथ अध्यक्ष के साथ सुनेंगे। इसके बाद बूथ क्षेत्र में आयोजित बूथ सम्मेलन में कार्यकर्ता कार्यक्रम को उत्सव का स्वरूप देते हुए पंडित दीनदयाल के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करेंगे।

कमलोत्सव आयोजन के अंतर्गत कार्यकर्ता अपने घरों में पार्टी का ध्वज भी फहरायेंगे व उसकी सेल्फी को सोशल मीडिया में शेयर करेंगे। पार्टी द्वारा प्रत्येक बूथ के लिये एक प्रभारी तय किया गया है जो मुख्य वक्ता की भूमिका में रहेगा। सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के सह संयोजक श्यामसुंदर चौधरी ने बताया कि कमलोत्सव कार्यक्रम हेतु पश्चिम विधानसभा के लिए विजय उपाध्याय व पूर्व के लिए लक्ष्मण मोदी को नियुक्त किया ।

सार-समाचार

मुआवजा की मांग उठाई

श्रीगंगानगर, (कासं)। गंगानगर विधायक राजकुमार गौड़ ने राजस्थान विधानसभा में विधानसभा की प्रक्रिया तथा कार्य संबंधी नियम 295 के अंतर्गत इस वर्ष मानसून में श्रीगंगानगर विधानसभा क्षेत्र में अतिवृष्टि के कारण आमजन को हुए नुकसान का मुआवजा देने की मांग उठाई। विधायक गौड़ ने कहा कि जुलाई माह में श्रीगंगानगर विधानसभा क्षेत्र में बरसात ने पिछले 50 वर्षों का रिकॉर्ड तोड़ दिया। 2 दिन में करीब 355 एमएम वर्षा हुई, जिसने भयंकर तबाही मचाई। लोगों के मकान टूट गए। घरों में पानी भरने के कारण उनका घरों व दुकानों में रखा हुआ सामान खराब हो गया। राज्य सरकार को बाढ़ की समस्या से निपटने के लिए सेना को भी बुलाना पड़ा। अनेकों परिवारों को घर छोड़कर दूसरी जगह शरण लेनी पड़ी तथा उनका घर में रखा हुआ सामान बर्बाद हो गया। उन्होंने बताया कि इसके साथ ही शहर की सड़कें बारिश का पानी भरा रहने से टूट गईं। इसलिए विशेष उल्लेख प्रस्ताव के माध्यम से गौड़ ने राजस्थान सरकार से निवेदन किया कि श्रीगंगानगर विधानसभा क्षेत्र का सर्वे के अनुसार जिन-जिन परिवारों को नुकसान हुआ है, उसका उन्हें सरकार की तरफ से मुआवजा दिया जाए। साथ ही आपदा राहत के अंतर्गत विशेष पैकेज देकर क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत करवाई जाए ताकि आमजन को राहत मिल सके।

दो दिन बाद आज खुलेगा बाजार

सूरतगढ़, (कासं)। नगर पालिका एसआई व जमादार को एपीओ करने सहित 3 सूत्री मांगों को लेकर व्यापारियों का बुधवार को महाराणा प्रताप चौक पर व्यापारियों का चल रहा धरना बुधवार को देर शाम नगर पालिका के कर्मचारियों के स्थानांतरण अन्य मांगें पूरी हो जाने के बाद समाप्त हो गया। दिन भर चली वार्ताओं के बाद शाम को एसडीएम कार्यालय में एडीएम अरविंद जाखड़ की अध्यक्षता में नगरपालिका अध्यक्ष ओमप्रकाश कालवा ,पूर्व विधायक गंगाजल मील व पुलिस उप अधीक्षक शिवरतन गोदारा विकी नागपाल व व्यापारिक संगठनों के बीच करीब 2 घण्टे चली वार्ता के बाद नगरपालिका के एसआई सुशील शर्मी व सफाई कर्मचारी मनिंदर के स्थानांतरण के आदेश के बाद व्यापरियों ने सहमति जताई वही वार्ता में नगरपालिका ने व्यापरियों को 7 दिन में नालों पर से अतिक्रमण हटाने का की बात कही जिस पर व्यापरियों ने सहमति जताई। वहीं मामले को लेकर नगरपालिका के चेयरमैन ओमप्रकाश कालवा ने कहा कि पूरे शहर में अतिक्रमण हटाने का कार्य लगातार जारी रहेगा। व्यापरियों के सहमति बनने के बाद देर शाम व्यापरियों ने धरना उठा लिया और जाम रास्ते को खोल दिया।धरना उठाने के बाद प्रशासन ने राहत की सांस ली।

दीक्षांत समारोह का आयोजन

बीकानेर, (कासं)। महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बीकानेर में विश्वकर्मा जयंती पर दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। अधीक्षक महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान मोनिका गोदारा ने बताया कि समारोह में संस्थान की सुश्री खुशबू रामचंदानी एवं सुश्री मीनाक्षी रामावत को स्टेनों हिन्दी व्यवसाय में कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर में शीघ्र लिपिक के पद पर नियुक्त होने एवं सुश्री दक्षा अरोड़ा (कोपा व्यवसाय), उर्मिला स्वामी (स्वीइंग टेक्नोलॉजी) को संभाग स्तर पर आयोजित राजस्किल प्रतियोगी परीक्षा 2022 में क्रमश प्रथम एवं तृतीय स्थान प्राप्त होने के साथ-साथ संस्थान की कुल 38 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में बीकानेर पॉलिटेक्निक कॉलेज की प्रोफेसर श्रीमती इंदु बाला शर्मी, वाई. बी. माथुर, श्रीमती कमलप्रीत एवं प्राविधिक शिक्षा क्षेत्रीय कार्यालय बीकानेर के उपनिदेशक प्रखर चतुर्वेदी उपस्थित रहे। सुश्री मोनिका गोदारा ने आभार व्यक्त किया । कार्यक्रम का संचालन कनिष्ठ सहायक श्रीमती हिमांशु उत्तरेजा ने किया।

बेघरों को घर की मांग

श्रीगंगानगर, (कासं)। बेघरों को मकान के लिए जमीन आवंटन की मांग पर इंटरनेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को कलेक्ट्रेट पहुंचकर विरोध जताया। इन लोगों ने कलेक्ट्रेट के पास सेंट्रल जेल के सामने की तरफ ढफली बजाकर विरोध प्रदर्शन किया। इन लोगों का कहना था कि संगठन कार्यकर्ताओं ने कुछ माह पूर्व बेघरों को मकान की मांग पर जयपुर में अधिकारियों से बातचीत की थी। इस संबंध में बनी सहमति पर अब तक कार्रवाई नहीं हुई है। उन्होंने अधिकारियों और पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच बनी सहमति को लागू करने की मांग की। आईडीपी के कार्यकर्ता सुबह कलेक्ट्रेट के लिए निकले। प्रशासन ने इन लोगों से वार्ता कर इन्हें सेंट्रल जेल के सामने विरोध जताने का आग्रह किया। इन लोगों ने कलेक्ट्रेट के पास स्थित जेल के सामने की तरफ विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। अठारह लोग उपवास पर बैठ गए। इस दौरान प्रशासन और संगठन कार्यकर्ताओं के बीच वार्ता भी हुई। शाम को संगठन कार्यकर्ताओं को उनकी मांगों पर शीघ्र कार्रवाई करने का आश्वासन दिया गया। शाम तक संगठन कार्यकर्ता उपवास पर थे। संगठन के राजेश भारत ने बताया कि जिला प्रशासन की ओर से लिखित आश्वासन का इंतजार किया जा रहा है।

छात्रों का धरना खत्म

अनूपगढ़, (कासं)। सेठ बिहारी लाल छाबड़ा राजकीय महाविद्यालय में 5 सूत्री मांगों को लेकर लगाया धरना प्राचार्य के आश्वासन के बाद समाप्त हो गया। गौरतलब है कि राजकीय कॉलेज में रिक्त पदों और स्टूडेंट्स की सुविधाओं की मांग को लेकर कई बार ज्ञापन दिए गए। लेकिन कार्रवाई नहीं होने पर विद्यार्थियों ने कॉलेज के बाहर धरना लगा दिया था। विद्यार्थियों ने प्राचार्य के सामने एक बार फिर अपनी मांगों को रखा। छात्रसंघ अध्यक्ष योगेश भांभू ने बताया कि पार्षद सन्नी धायल, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष मनीष सिहाग, उपाध्यक्ष अजय सरसवा, महासचिव भवदीप वर्मी, छात्र नेता दिनेश भाम्भू, भवदीप शामिल थे। अध्यक्ष के अनुसार प्राचार्य ने अवगत करवाया कि महाविद्यालय में विद्या संबल योजना के अंतर्गत पांच आचार्य को महाविद्यालय में लगाया गया है। जिनमें दो शिक्षक गुरूवार को ही ज्वाइन कर लेंगे। उक्त शिष्टमंडल ने विद्यार्थियों के समक्ष प्राचार्य की बात रखकर संतोष प्रकट करते हुए धरना उठा लिया। पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष सिहाग और पार्षद धायल ने छात्र व छात्राओं को विश्वास दिलाया कि छात्र हितों के हनन की बात आयेगी तो वह छात्र-छात्राओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनके हितों की लड़ाई लड़ेंगे।

गायों को लम्पी से बचाने वाले गौसेवक सम्मानित

नोखा, (कासं)। देश भर में फैली लम्पी स्कीन बीमारी के कारण नोखा क्षेत्र के गौवंश भी अधिक संख्या में ग्रसित हुई है। बीमारी के दौरान क्षेत्र के गौसेवकों द्वारा गौवंश की अपार सेवा कर जीवन पथ पर पुन: लाने का काम करने वाले गौसेवकों को सम्मानित किया।

इस सेवा कार्य के लिए 180 गौसेवकों को पालिका द्वारा प्रशस्ति-पत्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया। सम्मान देने की घोषणा पालिका अध्यक्ष नारायण झंवर द्वारा नगर पालिका नोखा द्वारा 95 वें नोखा स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित विराट कवि सम्मेलन में की गई थी। जिसके अनुसार दोपहर 3 बजे नगर पालिका टाउन हॉल में गौसेवकों को सम्मानित करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर क्षेत्र के गौसेवकों के साथ उपस्थित पालिका पार्षदगण एवं पालिका अधिकारियों एवं कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए पालिका अध्यक्ष नारायण झंवर ने पालिका द्वारा स्थापित एवं सेवा समिति द्वारा संचालित नन्दीशाला में विभिन्न व्यवस्थाओं एवं नन्दीयों एवं निराश्रित पशुओं के लिए हरसंभव प्रयास किये जा रहे हैं। जिसके लिए पालिका द्वारा प्रति पशु प्रतिदिवस निर्धारित अनुदान दिया जा रहा है। पालिका अध्यक्ष झंवर द्वारा गंगा गौशाला द्वारा गौसेवा के क्षेत्र में किये जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की।

इसके साथ ही पालिका क्षेत्र की अन्य गौशाला एवं विभिन्न सेवा संस्थाओं द्वारा गौसेवकों द्वारा इस बीमारी के दौरान गौसेवकों ने विभिन्न प्रकार की दवाईयों, आयुर्वेदिक पद्धतियों के साथ इम्यूनिटी पावर बढ़ाने हेतु विभिन्न तरह के प्रोडेक्ट बनाकर गौवंश को खिलाकर उनका इम्यूनिटी पावर एवं स्वास्थ्य सुधार करवाने का कार्य किया गया। जिसकी जितनी सरहना की जाए उतनी कम है।इस अवसर पर पालिका उपाध्यक्ष निर्मल कुमार भूरा मौजूद थे।

नोखा पालिका अध्यक्ष नारायण झंवर ने गौसेवकों को प्रशस्ति-पत्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया।

संगीत काव्य संध्या 25 को

बीकानेर, (कासं)। राजश्री कला मंदिर व अमन कला केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में नेत्र रोग विशेषज्ञ एवम कवि कथाकार गायक डॉ दिनेश शर्मा के रचनात्मक व्यक्तित्व पर आधारित एक मनोरंजक संगीत काव्य संध्या का आयोजन रविवार सायं 25 सितम्बर शाम 7:30 बजे रेलवे ऑडिटोरियम में आयोजित किया जायेगा।

अमन कला केन्द्र के अध्यक्ष एम. रफीक कादरी ने बताया कि कार्यक्रम में डॉ दिनेश के कला आयामों पर आधारित कविताओं व फिल्मी तथा गैर फिल्मी गीतों लोकगीतों आदि की मनोरंजक प्रस्तुतियां दी जायेगी। राजश्री कला मंदिर के संस्थापक तरुण गौड व वरिष्ठ रंगकर्मी दयानंद शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ जयश्री मुरली मनोहर होंगे तथा डॉ कल्पना जैन डॉ अंजू कोचर तथा वरिष्ठ रंगकर्मी प्रदीप भटनागर विशिष्ट अतिथि होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ नाट्य निर्देशक संगीतकार लक्ष्मी नारायण सोनी करेंगे। कार्यक्रम में सहयोगी के रुप में वरिष्ठ गायक एम रफीक कादरी, जीत सिंह व गोपीका, सोनी, दीपिका प्रजापत गायन में साथ निभायेंगे। मंच संचालन दयानंद शर्मा तथा डॉ अंशु राजपुरोहित करेंगे।

कार से सात लाख रुपये से भरा थैला उड़ाया

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिले के श्रीबिजयनगर में किसान की कार में रखे सात लाख रुपये लेकर नाबालिग फरार हो गया। वारदात दोपहर करीब दो बजे के आसपास हुई।

किसान के बैंक में प्रवेश करने के समय से ही नाबालिग उसका पीछा कर रहा था। वह किसान के पीछे-पीछे बैंक से निकला। उसने किसान पर नजर रखी। किसान कार में रुपये रखकर बैंक से करीब आधा किलोमीटर दूर सब्जी मंडी में एक दुकान पर गया। वह जब दुकान से वापस लौटा तो रुपए गायब थे। इस बारे में पुलिस को सूचना दी गई है। शाम तक इस संबंध में मामला दर्ज नहीं हुआ था। कार बिना लॉक किए रखे रुपये गांव आठ एसटीबी का किसान दलवीर कुलड़िया बुधवार को रुपये निकलवाने के लिए श्रीबिजयनगर की धानमंडी स्थित पंजाब नेशनल बैंक ब्रांच में आया।

उसने कैश काउंटर से रुपए निकलवाए। वहां से रुपये थैले में रखकर वह कार में बैठा। बैंक से ही एक नाबालिग ने उसका पीछा करना शुरू कर दिया। नाबालिग बैंक से निकला और किसान का पीछा करने लगा। किसान दलवीर वहां से करीब आधा किलोमीटर दूर सब्जी मंडी में किसी काम से एक दुकान पर गया।

■ नाबालिग बैंक से ही पीछा कर रहा था, कार का शीशा लॉक नहीं कर सब्जी मंडी में गया तो पीछे से बैग पार किया

इस दौरान उसने सात लाख रुपए से भरा थैला कार की पिछली सीट के फुटरेस्ट के पास छोड़ दिया। उसने कार के शीशे लॉक नहीं किए और सब्जी मंडी की दुकान पर कुछ मिनट रुका। इसी दौरान नाबालिग ने कार से सात लाख रुपए से भरा थैला चुराया और फरार हो गया। घटना के तुरंत बाद इस संबंध में श्रीबिजयनगर पुलिस को सूचना दे दी गई। पुलिस ने बैंक की सीसीटीवी फुटेज खंगालनी शुरू कर दी है। शाम तक इस संबंध में कोई मामला दर्ज नहीं किया गया था।

गायों के लिए बच्चों ने दिए 22,200 रुपये

नोखा, (कासं)। लम्पी बीमारी से पीड़ित गौवंश की मदद के लिए सामाजिक संस्थाओं के साथ अब स्कूली बच्चे भी आगे आ रहे हैं। इसी कड़ी में नोखा की लव फन लर्न स्कूल के बच्चों ने लम्पी महामारी से ग्रसित गायों के लिए 22200 रुपए एकत्रित किये।

प्रधानाचार्या मीनू सिंह ने बताया कि 15100 रुपए नोखा स्थित गंगा गौशाला को और 7100 रुपए की राशि श्री श्याम मित्र मंडल नोखा को भेंट की गई। स्कूल चेयरमैन नारायण बाहेती, स्कूल हैड बॉय शिवम राठी, अहिंसा हाउस कैप्टन रजत भूरा, कक्षा चार के विद्यार्थी शिवम बाहेती और मंत्र जैन ने यह राशि गंगा गौशाला के अध्यक्ष निर्मल भूरा और सतीश झंवर तथा श्री श्याम मित्र मंडल के राजेन्द्र राठी और आसकरण भट्टड़ को भेंट की।

दोनों संस्थाओं द्वारा विद्यालय को धन्यवाद दिया गया। स्कूल चेयरमैन नारायण बाहेती ने कहा कि सभी जिलों में गायों में फैल रही लम्पी नामक बीमारी अपने उग्र रूप में है। इस बीमारी से रोजाना हजारों गौवंश की मौत हो रही है।

इस विकट स्थिति में पिछले दो महीने से नोखा की अनेक संस्थाओं के लगभग 180 लोग दिन रात गौ माता की सेवा में लगे हुए हैं।

इंदु ठाकुर देगी गानों की प्रस्तुति

बीकानेर, (कासं)। अप्रतिम क्लब अपने सहयोगी रेडियो पार्टनर 92.7 बिग एफ.एम. के साथ रेलवे ओडिटोरियम बीकानेर में आयोजित किया है जिसमें पुन: दिल्ली की सुरीली गायिका अपनी आवाज में फिल्मी गानों की प्रस्तुति देंगी।

कार्यक्रम संयोजक मुनीन्द्र प्रकाश अग्निहोत्री ने बताया कि इंदु ठाकुर म्यूजिक शो का आयोजन सायं 6 बजे से 9 बजे तक रखा गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता एडीआरएम बीकानेर निर्मल कुमार शर्मा करेंगे। मुख्य अतिथि डीआईजी बीएसएफ पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़ होंगे। समाजसेवी माणक कोचर, रामदेव अग्रवाल, अरविन्द मिड्ढा, अल्का डाली पाठक विशिष्ठ अतिथि होंगे।

नोखा में फल सब्जी मंडी खोलने की मांग उठाई

नोखा, (कासं)। राजस्थान विधानसभा में नोखा विधायक बिहारीलाल बिश्नोई ने राजस्थान कृषि उपज मंडी (संशोधन) विधेयक 2022 की चर्चा में भाग लिया और नोखा में फल सब्जी मंडी खोलने सहित विभिन्न मांगें सरकार के सामने रखी।

विधायक बिश्नोई ने कहा कि नोखा में फल सब्जी मंडी नहीं है। नोखा में फल सब्जी मंडी खोलने का प्रावधान किया जाए और नोखा में फल सब्जी मंडी के लिए जगह चिन्हित नहीं है। इसलिए जगह चिन्हित करके फल सब्जी मंडी खोली जाए।

■ नोखा विधायक बिश्नोई ने ये मांग उठाई

विधायक बिश्नोई ने कहा कि यह संशोधन किसानों के लिए काला कानून है और स्वामीनाथन आयोग की अनुशंसा के विरुद्ध है। जिस घोषणा पत्र को लेकर कांग्रेस चुनाव लड़ी यह उसके भी खिलाफ है यह संशोधन। इस विधेयक में पहले संशोधन किया उसकी भावना के खिलाफ है। जिन किसानों को मंडी की चारदीवारी से मुक्त कर दिया, उनको वापस मंडी की दीवारों में कैद किया जा रहा है और जो नौजवान मंडी में लाखों रुपए की दुकान नहीं खरीद सकता और नया व्यापार करना चाहे उसकी उम्मीदों पर पानी फेरा जा रहा है। अब ये विधेयक लाकर मंडी का दायरा बढ़ाकर मार्केट को शामिल कर लिया है, जिससे इंस्पेक्टर राज लागू करके व्यापारियों को परेशान करने का रास्ता खोला जा रहा है।

विधायक बिश्नोई ने कहा कि इससे अच्छा मंडी की अन्य समस्याओं का संशोधन लेकर आते, जिन मंडियों में पर्याप्त यार्ड नहीं है वहां यार्ड बनाते।

सीएमएचओ ने अस्पताल में भर्ती रोगियों के उपचार की जानकारी ली

बीकानेर, (कासं)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मोहम्मद अबरार पंवार ने गुरूवार को नोखा जिला अस्पताल का औचक निरीक्षण किया और यहां भर्ती रोगियों के उपचार के संबंध में चिकित्सकों से चर्चा की। उन्होंने चिकित्सालय के विभिन्न वार्डों का निरीक्षण किया और रोगियों को दिए जा रहे उपचार के बारे में फीड बैक लिया और चिकित्सकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि निरीक्षण के दौरान वर्तमान में चिकित्सालय में वायरल बुखार से पीड़ित रोगी भर्ती है, जिनका नि:शुल्क उपचार किया जा रहा है। वायरल बुखार के रोगियों के स्वास्थ्य में निरन्तर सुधार हो रहा है। उन्होंने बताया कि चिकित्सालय में एक भी रोगी मलेरिया व डेंगू का भर्ती नहीं है। गत सप्ताह तीन मलेरिया के रोगी भर्ती हुए थे, जिसकी जांच करने पर कोई भी रोगी मलेरिया पॉजिटिव न होकर वायरल बुखार से पीड़ित थे।

सीएमएचओ डॉ. अबरार पंवार ने नोखा चिकित्सालय का निरीक्षण कर मरीजों से फीडबैक लिया।

उन्होंने बताया कि नोखा के भूरा चौक निवासी मलेरिया पीएफ भर्ती हुआ था, जो अब स्वस्थ है। उन्होंने बताया कि इस रोगी के घर के सदस्यों और आस-पास के घरों में रहने वालों के रक्त की जांच करवाई थी, जो सभी नेगेटिव मिले।

मुख्य चिकित्सा एवं अधिकारी ने बताया कि नोखा जिला अस्पताल में प्रतिदिन एक हजार का आउटडोर है तथा प्रतिदिन 6 से 7 डिलेवरी हो रही है। उन्होंने प्रसूता वार्ड का निरीक्षण कर, महिलाओं से बातचीत की और उन्हें दिए जा रहे उपचार के बारे में जानकारी ली। उन्हें बताया गया कि अस्पताल में

■ वार्डों का निरीक्षण कर रोगियों को दिए जा रहे उपचार के बारे में फीडबैक लिया और चिकित्सकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए

भर्ती सभी रोगियों को चिरंजीवी योजना में नि:शुल्क उपचार मिल रहा है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पंवार ने बताया कि मुकाम मेला के मद्देनजर मुकाम में एक 108 और एक एडवांस लाइफ सेविंग एम्बुलेंस तैनात की गई। साथ ही शुद्ध के लिए युद्ध अभियान के तहत नोखा व मुकाम में खाद्य सामग्री की गुणवत्ता की जांच के लिए खाद्य निरीक्षक को लगाया गया है।

लम्बित आवेदनों को जल्द निस्तारित करने के निर्देश दिए

श्रीगंगानगर,(कासं)। जिला कलेक्टर रूक्मणि रियार सिहाग की अध्यक्षता में सामाजिक न्याय एवं अधिकारित विभाग की विभिन्न गठित समितियों की बैठक गुरूवार सुबह आयोजित की गई।

सहायक निदेशक सुरेन्द्र कुमार पूनिया ने बताया कि सर्वप्रथम अनुसूचित जाति/ जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 के तहत गठित जिला स्तरीय मॉनिटरिंग समिति की बैठक हुई। बैठक अनुसूचित जाति/जनजाति योजना के तहत लम्बित आवेदनों पर चर्चा गई। जिला कलक्टर द्वारा पुलिस विभाग एवं जिला कार्यालय पर लम्बित आवेदनों का जल्द ही निस्तारण कर सहायता राशि प्रदान करने हेतु निर्देशित किया। गत तीन माह में स्वीकृत प्रकरणों को कमेटी द्वारा अनुमोदन करवाया गया।

उन्होंने बताया कि इसके उपरान्त नवजीवन योजना के तहत जिला कार्यकारी समिति की बैठक आयोजित की गई बैठक में सदस्य सचिव द्वारा बताया गया कि राज्य सरकार द्वारा नवजीवन योजना के अन्तर्गत 17 जातियों को जोड़ा गया है। इस हेतु निदेशालय स्तर से सर्वे बाबत विज्ञप्ति जारी की गई।

जिसमें नवजीवन योजना के तहत सर्वे को लेकर प्रस्ताव आमंत्रित किये गये। जिले में 15 संस्थाओं द्वारा सर्वे हेतु आवेदन किया गया है। सर्वे कार्य आवंटित करने हेतु कलेक्टर द्वारा जिले की संस्थाओं को प्राथमिकता देने हेतु निर्देश प्रदान किये। इसके अलावा गत वर्ष में किये गये सर्वे की द्वितीय चरण में नवजीवन योजना के तहत चिन्हित परिवारों के सदस्यों को विभिन्न टेट्डो में प्रशिक्षण करवाने एवं उन्हें प्रशिक्षण बैंकों से ऋण दिलवाने हेतु कायर्योजना बनाने हेतु निर्देशित किया गया। उन्होंने बताया कि राजस्थान राज्य ट्रांसजेंडर जिला स्तरीय समिति की बैठक भी आयोजित की गई।

गंगानगर कलेक्टर रूक्मणि रियार सियाग ने कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय मॉनिटरिंग समिति की बैठक को संबोधित किया।

मेरा मानना है कि दोनों भारतीय टीम में जगह के हकदार है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दोनों विकेटकीपर हैं। उनकी बल्लेबाजी इतनी दमदार है। पंत मध्यक्रम में और कार्तिक फिनिशर के तौर पर काफी खतरनाक हो सकते हैं। - रिकी पोंटिंग

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान, ऋषभ पंत और दिनेश कार्तिक को लेकर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — **बजरंग पूनिया**

ओलंपिक पदक विजेता भारतीय पहलवान बजरंग पूनिया विश्व चैम्पियनशिप के क्वार्टर फाइनल में अमेरिका के जॉन माइकल दियाकोमिहालिस के खिलाफ मुकाबले के दौरान सिर की चोट के लिए चिकित्सकों के द्वार इस्तेमाल किये गये 'कठोर टेप' से नाराज है। विश्व कप में अपना पहला खिताब जीतने की कोशिश में लगे बजरंग को बेलग्रेड में अपने शुरुआती मुकाबले के पहले ही मिनट में क्यूबा के एलेजांद्रो एनरिक व्लादेस टोबियर के खिलाफ सिर में चोट के कारण खून निकलने लगा था। वहां मौजूद चिकित्सकों ने उनकी चोट के ऊपर 'कठोर टेप' लगाया था।

क्या आप जानते हैं ?... जिम्बाब्वे के तातेदु ताएब ने मई 2004 में श्रीलंका के विरुद्ध अपनी टीम की कप्तानी करके सबसे कम उम्र का टेस्ट कप्तान बनाने का रिकॉर्ड अपने नाम किया।

डेथ ओवरों के सवाल का जवाब ढूंढेगा भारत

भारत-ऑस्ट्रेलिया में दूसरा टी-20 आज

नागपुर, 22 सितंबर। भारतीय टीम तीन मैचों की शृंखला में 0-1 से पिछड़ने के बाद शुक्रवार को दूसरे टी20 में जसप्रीत बुमराह की वापसी से डेथ ओवरों में अपनी गेंदबाजी सुधारना चाहेगी। भारत पहले मैच में 209 रन के विशाल लक्ष्य की रक्षा नहीं कर सका और उसे चार विकेट से हार मिली। ऑस्ट्रेलिया से पहले पाकिस्तान और श्रीलंका भी भुवनेश्वर कुमार के 19वें ओवर में जमकर रन बटोर चुके हैं, जो भारत के लिये चिंता का विषय है।

गेंदबाजों के निराशाजनक प्रदर्शन के कारण दूसरे मैच में बुमराह के खेलने की उम्मीदें ज्यादा हैं, हालांकि उनके स्वास्थ्य पर अब भी संशय है। बुमराह पीठ की चोट के कारण इंग्लैंड दौरे के खत्म होने के बाद से ही खेल से बाहर है।

लगातार महंगे साबित हो रहे युजवेंद्र चहल की गेंदबाजी पर भी सवालिया निशान खड़े हो रहे हैं, मानो उन्होंने बल्लेबाजों को परेशान करने की अपनी क्षमता खो दी हो। चोटग्रस्त रवींद्र जडेजा की जगह टीम में आये अक्षर पटेल ने हालांकि मोहाली में 17 रन के बदले तीन विकेट झटककर सीधे तौर पर अपनी काबिलियत साबित कर दी है। बल्लेबाजी में रोहित और विराट कोहली पिछले मैच में की गयी गलतियों को ठीक करना चाहेंगे। के एल राहुल, सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पांड्या अपनी विस्फोटक फॉर्म को जारी रखने का प्रयास करेंगे। विश्व कप के करीब आने के साथ टीम प्रबंधन दिनेश कार्तिक या ऋषभ पंत को परख सकता है। कार्तिक को फिनिशर की भूमिका निभाने के लिये कई मौके नहीं मिले हैं, और अगर शुक्रवार को उन्हें मौका मिलता है तो वह अपना लोहा मनवाना चाहेंगे।

सिर्फ भारतीय ही नहीं बल्कि ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी की स्थिति भी चिंताजनक रही है। नेथन एलिस के अलावा सभी ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों ने सात से अधिक की इकॉनॉमी रेट से रन लुटाये। कैमरन ग्रीन और पैट कमिंस ने मोहाली में अंतिम पांच ओवरों में 67 रन दिए। बल्लेबाजी में हालांकि ऑस्ट्रेलिया डेविड वॉर्नर, मिचेल मार्श और मार्क्स स्टॉयनिस की अनुपस्थिति में भी बेहद मजबूत दिखी। ऑलराउंडर कैमरून ग्रीन ने अपने दूसरे टी20 में ही वॉर्नर की कमी को पूरा किया और ओपनिंग करते हुए विस्फोटक अद्धर्शतक जड़ा।

मैथ्यू वेड ने अंत में ऑस्ट्रेलिया की पारी को संभाला और 21 गेंदों में नाबाद 45 रन की मैच जिताऊ पारी खेली। अनुभवी आरोन फिंच और ग्लेन मैक्सवेल की मौजूदगी ऑस्ट्रेलिया को और भी खतरनाक बना देती है। भारत और ऑस्ट्रेलिया ने मोहाली में कुल 400 से अधिक रन बनाए थे, लेकिन विदर्भ क्रिकेट एसोसिएशन की पिच धीमी दिखती है। बुमराह की अगुवाई में भारतीय आक्रमण इसका इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करना चाहेगा। कप्तान रोहित शर्मा और मुख्य कोच राहुल द्रविड़ के नेतृत्व में भारतीय थिंक टैंक रविचंद्रन अश्विन को गेंदबाजों के अनुकूल ट्रैक पर आजमा सकता है। हर्षल पटेल शुक्रवार की भिड़ंत में विशेष योगदान दे सकते हैं।

बुमराह तैयार, चिंता की कोई बात नहीं : सूर्यकुमार

नागपुर, 22 सितंबर। भारतीय बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने जसप्रीत बुमराह की फिटनेस संबंधी चिंताओं को खारिज करते हुए कहा कि ' चिंता की कोई बात नहीं है' और यह तेज गेंदबाज पीठ की चोट से उबर कर मैदान पर उतरने के लिए पूरी तरह से तैयार है। बुमराह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शुरुआती टी20 अंतरराष्ट्रीय में अंतिम एकादश का हिस्सा नहीं थे। चोट से वापसी कर रहे इस गेंदबाज को टीम प्रबंधन ने थोड़ा और समय देने का फैसला किया था। बुमराह इंग्लैंड दौरे के बाद से भारतीय टीम का हिस्सा नहीं है। दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय से पहले सूर्यकुमार से ऑनलाइन संवाददाता सम्मेलन में जब बुमराह की फिटनेस और टी20 टीम में उमेश यादव को लेकर योजना के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, '' मुझे किसी खिलाड़ी पर टीम की योजना को लेकर कोई जानकारी नहीं है। यह मेरा विभाग नहीं हैं। इस सवाल का जवाब फिजियो और टीम प्रबंधन दे सकता है।'' उन्होंने कहा, '' टीम में हालांकि माहौल अच्छा है और सभी खिलाड़ी फिट और दूसरे मैच के लिए तैयार हैं।'' उन्होंने बुमराह के बारे में दोबारा पूछे जाने पर कहा, '' वह पूरी तरह से तैयार है, चिंता की कोई बात नहीं।'' बुमराह की गैरमौजूदगी में भारतीय टीम 208 रन के लक्ष्य का बचाव करने में विफल रही थी। तेज गेंदबाजों ने 150 से अधिक रन लुटाये। सूर्यकुमार ने गेंदबाजों का बचाव करते हुए कहा, '' वास्तव में पिछले मैच के बाद हमने कोई चर्चा नहीं की लेकिन मैदान में ओस थी। आपको ऑस्ट्रेलिया को श्रेय देना होगा, वे आक्रामक क्रिकेट खेले।''

भारत-ए ने न्यूज़ीलैंड-ए को 7 विकेट से हराया

चेन्नई, 22 सितंबर। भारतीय एकदिवसीय टीम के संभावित खिलाड़ियों से बनी भारत-ए ने न्यूजीलैंड-ए को पहले अनाधिकारिक वनडे में गुरुवार को सात विकेट से मात दी। न्यूजीलैंड-ए पहले बल्लेबाजी करते हुए 167 रन पर ऑलआउट हो गयी, जिसके बाद भारत-ए ने 168 रन का लक्ष्य 31.5 ओवर में ही हासिल कर लिया। कप्तान संजू सैमसन ने टॉस जीतकर कीवी टीम को बल्लेबाजी के लिये बुलाया और गेंदबाजों ने उनके फैसले को सही साबित किया।

शार्दुल ठाकुर ने चैड बोवेस (10), डेन क्लीवर (04), और रॉबर्ट ओ डॉनेल (22) को आउट किया, जबकि कुलदीप सेन ने रचिन रविंद्र (10), जो कार्टर (01) और टॉम ब्रूस (शून्य) का विकेट लिया। कुलदीप यादव ने भी मौका मिलने पर लोगन वैन बीक को पवेलियन भेजा। न्यूजीलैंड-ए के 74 रन पर आठ विकेट गिरने के बाद माइकल रिपन ने जो वॉकर के साथ मोर्चा संभाला और 89 रन की बहुमूल्य साझेदारी की। रिपन ने 104 गेंदों पर चार चौके लगाते हुए 61 रन बनाये, जबकि जो वॉकर ने तीन चौकों और एक छक्के के साथ 49 गेंदों पर 36 रन बनाकर कीवी टीम को 40.2 ओवर में 167 रन तक पहुंचाया।

भारतीय टीम के लिये 168 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पृथ्वी शॉ और रुतुराज गायकवाड़ ने धीमी शुरुआत की। गायकवाड़ ने चौथे ओवर में अपने हाथ खोलते हुए सोलिया की गेंद पर छक्का जड़ा। शॉ हालांकि अपने आक्रामक रूप में नजर नहीं आये और सिर्फ एक छक्के के साथ 24 गेंदों पर 17 रन बनाकर पवेलियन लौट गये। गायकवाड़ (41) और राहुल त्रिपाठी (31) ने दूसरे विकेट के लिये 56 रन की साझेदारी की।

कप्तान संजू सैमसन (29 नाबाद) और रजत पाटीदार (45 नाबाद) ने तीसरे विकेट के लिये 69 रन जोड़कर भारत को लक्ष्य तक पहुंचाया।

भारत में आईपीएल खेलने का अनुभव काम आया : टिम डेविड

नागपुर, 22 सितंबर। सिंगापुर में जन्मे आस्ट्रेलियाई खिलाड़ी टिम डेविड ने बृहस्पतिवार को कहा कि आईपीएल के दौरान भारतीय हालात में खेलने के अनुभव से उन्हें पहले टी20 मैच में दबाव में संयम बनाये रखने में मदद मिली। डेविड ने पिछले साल चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के लिये आईपीएल में पदार्पण किया था। इसके बाद उन्हें मुंबई इंडियंस ने खरीद लिया जिसके लिये इस साल उन्होंने आठ मैच खेले।

डेविड ने वर्चुअल प्रेस कांफ्रेंस में कहा ,'' मुझे लगता है कि भारत में पहले खेलने का अनुभव काफी काम आया। मुझे पता था कि हम वह रन बना लेंगे। डेविड ने अपने पदार्पण मैच में 14 गेंद में 18 रन बनाये और मैथ्यू वेड (45) के साथ 62 रन की साझेदारी करके आस्ट्रेलिया को चार विकेट से जीत दिलाई। उन्होंने कहा ,'' भारत में खेलने के अनुभव से हमें पिचों के बारे में और दबाव के बारे में अच्छा अनुमान हो गया।

भारतीय हालात में लक्ष्य का पीछा करना फायदेमंद होता है। आस्ट्रेलियाई टीम में अपनी भूमिका के बारे में उन्होंने कहा ,'' मेरा काम मध्यक्रम में बल्लेबाजी करना है यानी मैं बहुत ज्यादा गेंदों का सामना करने नहीं जा रहा। मेरी जिम्मेदारी फिनिशर की है और मैं अपने स्वाभाविक शॉट्स खेलूंगा।''

निशानेबाजी जूनियर विश्व चैम्पियनशिप : भारत की झोली खाली

ओसियेक (क्रोएशिया), 22 सितंबर। भारतीय जूनियर ट्रैप टीम यहां आईएसएसएफ विश्व शॉटगन चैम्पियनशिप में पदक नहीं जीत सकी। जूनियर पुरूष वर्ग में शपथ भारद्वाज और महिला वर्ग में भव्या त्रिपाठी ने सात भारतीय निशानेबाजों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। शपथ दो दिन क्वालीफाइंग दौर के 111 के स्कोर के साथ 15वें और भव्या 103 स्कोर के साथ 14वें स्थान पर रही। जूनियर पुरूष ट्रैप के आर्य वंश त्यागी और शारदुल विहान क्रमशः 32वें और 37वें स्थान पर रहे। जूनियर महिला वर्ग में सबीरा हैरिस 19वें, प्रीति रजक 22वें और आद्या त्रिपाठी 32वें स्थान पर रही।

सानिल शेट्टी उलटफेर से बचे, मिश्रित युगल में शीर्ष वरीय बाहर

सूरत, 22 सितंबर। पूर्व राष्ट्रीय चैम्पियन और तीसरी वरीयता प्राप्त सानिल शेट्टी उलटफेर का शिकार होने से बच गए जबकि शीर्ष वरीयता प्राप्त जी साथियान और दूसरी वरीयता प्राप्त अचंत शरत कमल अपने अपने मैच जीतकर 36वें राष्ट्रीय खेलों की टेबल टेनिस स्पर्धा में तीसरे दौर में पहुंच गए। स्थानीय मिश्रित युगल टीम मानव ठक्कर और फिलजाह फातिमा कादरी ने शीर्ष वरीयता प्राप्त महाराष्ट्र के सानिल शेट्टी और आर टेनिसन को हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। पुरूष एकल में शेट्टी उत्तर प्रदेश के दिव्यांश श्रीवास्तव से हार से बच गए। उन्होंने करीबी मुकाबले में 11.5, 7.11, 9.11, 77.8, 11.9, 7.11, 11.9 से जीत दर्ज की। साथियान ने हरियाणा के वेसले डो रोसेरियो को हराया जबकि शरत ने महाराष्ट्र के रविंद्र कोटियान पर जीत दर्ज की। मानव ठक्कर ने उत्तर प्रदेश के सार्थ मिश्रा को हराया जबकि हरमीत देसाई ने तेलंगाना के मोहम्मद अली को मात दी।

कपूर ने चीनी ताइपे में आठ अंडर के स्कोर के साथ बढ़त बनायी, संधू चौथे पायदान पर

लिंकोऊ, 22 सितंबर। भारतीय गोल्फर शिव कपूर यांगडर टीपीसी चैम्पियनशिप के पहले दिन गुरुवार को यहां आठ अंडर 64 के शानदार कार्ड के साथ तालिका में शीर्ष पर पहुंच गये। कपूर ने एक ईगल और आठ बर्डी लगाये। उन्होंने इस दौरान दो बोगी भी किये। कोविड-19 के कारण तीन साल तक स्थगित होने के बाद एशियाई टूर पर इस टूर्नामेंट की वापसी हुई है। एशियाई टूर पर चार बार के विजेता कपूर के पास दो शॉट की बढ़त है। अजितेश संधू ने यहां पांच अंडर 67 का कार्ड खेला और वह संयुक्त चौथे स्थान पर है। टूर्नामेंट में भाग ले रहे अन्य भारतीयों में राशिद खान (68) संयुक्त 11वें, आदिल बेदी (69) और एस चिक्कारंगप्पा (69) संयुक्त 19वें स्थान पर है। मनु गंडास, राहिल गंगजी, वीर अहलावत और अमन राज 70-70 के एक समान स्कोर के साथ संयुक्त 35वें पायदान पर है। उदयन माने और हनी बैसोया ने 71-71 के स्कोर से संयुक्त-51वें स्थान पर है। कट में जगह बनाने के लिए खलिन जोशी (73) संयुक्त 84वें के अलावा करणदीप कोचर (74), एम धर्मा (75), एसएसपी चौरसिया (75) और विराज मडप्पा (75) दूसरे दौर में काफी अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

मोईन का अर्द्धशतक, पाक के सामने 200 रन का लक्ष्य

कराची, 22 सितंबर। इंग्लैंड ने मोईन अली (55) बेन डकेट (43) और हैरी ब्रूक (31) की विस्फोटक पारियों की बदौलत पाकिस्तान के सामने दूसरे टी20 मैच में गुरुवार को 200 रन का लक्ष्य रखा। इंग्लैंड ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए आक्रामक शुरुआत की और फिलिप सॉल्ट (26) एवं डेविड मलान (शून्य) का विकेट गंवाने के बावजूद पावरप्ले में 48 रन जोडे। शाहनवाज दहानी ने हेल्स और मलान को लगातार दो गेंदों पर आउट करके इंग्लैंड की पारी पर लगाम लगानी चाही, लेकिन चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने आये डकेट ने ऐसा नहीं होने दिया। डकेट ने 22 गेंदें खेलकर सात चौकों के साथ 43 रन बनाये। उनका साथ देते हुए सलामी बल्लेबाज फिलिप सॉल्ट ने भी 30(27) रन जोड़े। इन दोनों के आउट होने के बाद हैरी ब्रूक और मोईन अली ने पांचवें विकेट के लिये 27 गेंदों पर 59 रन की साझेदारी की। ब्रूक 19 गेंदों पर 31 रन बनाकर पवेलियन लौट गये, लेकिन मोईन ने अपना अद्धर्शतक पूरा करते हुए 23 गेंदों पर चार चौकों और चार छक्कों की बदौलत 55 रन बनाये।

आईसीसी अध्यक्ष पद मेरे हाथ में नहीं : सौरव गांगुली

कोलकाता, 22 सितंबर। बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली ने आईसीसी का अध्यक्ष बनने की अटकलों पर विराम लगाते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि आईसीसी अध्यक्ष पद उनके हाथ में नहीं है।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने जुलाई में अगला अध्यक्ष नवंबर महीने में चुनने को मंजूरी दी थी। बर्मिंघम में हुई बैठक के बाद यह तय किया गया कि ग्रेग बार्कले का कार्यकाल इस साल खत्म होने के बाद चुनाव सामान्य बहुमत से कराये जायेंगे और अगले अध्यक्ष का कार्यकाल एक दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2024 के बीच होगा।

उसके बाद से गांगुली के नाम की अटकलें लगाई जा रही है। उनसे इस बारे में पूछने पर उन्होंने कहा ,'' आईसीसी अध्यक्ष पद मेरे हाथ में नहीं है।'' आईसीसी बोर्ड ने तय किया है कि अब अध्यक्ष के चुनाव के लिये दो तिहाई बहुमत की जरूरत नहीं है। नये सुझाव के तहत उम्मीदवार को 51 प्रतिशत मतों की जरूरत है। भारतीय टीम पिछले कुछ अर्से से फॉर्म में नहीं है और गांगुली ने स्वीकार किया कि बड़े टूर्नामेंटों में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाना चिंता का विषय है। उन्होंने कहा ,'' रोहित शर्मा का जीत का प्रतिशत 80 के करीब है। भारत ने पिछले तीन चार मैच हारे हैं लेकिन उससे पहले 35.40 मैचों में से पांच या छह ही गंवाये।''

उन्होंने कहा ,'' मुझे यकीन है कि रोहित और राहुल द्रविड़ इसे लेकर चिंतित होंगे कि हमने बड़े टूर्नामेंटों में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। इस पर बात की जायेगी। विराट कोहली के शतक के बारे में उन्होंने कहा ,'' यह अच्छी बात है कि विराट ने एशिया कप में अच्छा खेला और उम्मीद है कि वह लय कायम रखेगा।''

महिला तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे और आखिरी वनडे के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहने जा रही है। गांगुली ने उन्हें 'लीजैंड' बताते हुए कहा ,'' झूलन लीजैंड है। बीसीसीआई अध्यक्ष के तौर पर पिछले तीन साल में हमारे बेहतरीन संबंध रहे हैं। उनका कैरियर शानदार रहा और वह महिला क्रिकेट में रोलमॉडल रहेंगी।''

पुराने प्रारूप में लौटेगा आईपीएल

मुंबई, 22 सितंबर। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का 2023 सीज़न अपने पुराने प्रारूप में खेला जायेगा, एक टीम लीग स्टेज के आधे मुकाबले घरेलू मैदान पर और बाकी मुकाबले विरोधी टीमों के मैदान पर होंगे। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली ने राज्य संघों को लिखे गये पत्र में यह खुलासा किया। ईएसपीएन ने गुरुवार को गांगुली के संदेश के हवाले से कहा, पुरुष आईपीएल का अगला सत्र होम और अवे प्रारूप में खेला जायेगा। सभी 10 टीमें अपने घरेलू मैच निर्दिष्ट स्थानों पर खेलेंगी। कोरोना महामारी के कारण आईपीएल 2020 संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में दुबई, शारजाह और अबू धाबी सहित तीन मैदानों पर आयोजित किया गया था।

न्यायालय ने आईओए संविधान में संशोधन के लिए पूर्व न्यायाधीश नागेश्वर राव को नियुक्त किया

नयी दिल्ली, 22 सितंबर। उच्चतम न्यायालय ने भारतीय ओलंपिक संघ के संविधान में संशोधन और निर्वाचक मंडल तैयार करने के लिए गुरुवार को शीर्ष अदालत के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव को नियुक्त किया। न्यायमूर्ति डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि शीर्ष अदालत के पूर्व न्यायाधीश राव देश में ओलंपिक के भविष्य को लेकर निष्पक्ष और विकास परक रवैया सुनिश्चित करेंगे। न्यायालय ने न्यायमूर्ति राव से कहा कि वह संविधान में संशोधन और 15 दिसंबर 2022 तक चुनाव कराने के लिए खाका तैयार करें। शीर्ष अदालत ने इसके साथ ही आईओए के मौजूदा महासचिव राजीव मेहता और उपाध्यक्ष आदिल सुमरिवाला को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति की 27 सितंबर को होने वाली बैठक में भाग लेने की अनुमति भी प्रदान की।

पीठ ने कहा,'' युवा मामले और खेल मंत्रालय के संयुक्त सचिव न्यायमूर्ति राव को तमाम व्यवस्था सुलभ कराएंगे जिस की प्रतिपूर्ति आईओए करेगा।'' पीठ में न्यायमूर्ति हिमा कोहली भी शामिल थी। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने आठ सितंबर को आईओए को अंतिम चेतावनी जारी करते हुए कहा था कि वह शासन से जुड़े अपने मुद्दों को सुलझाए और दिसंबर तक चुनाव संपन्न करें। इनमें विफल होने पर विश्व संस्था भारत पर प्रतिबंध लगा देगी। आईओसी के कार्यकारी बोर्ड की स्विजरलैंड के लुसाने में हुई बैठक में नरिन्दर बत्रा के भारतीय ओलंपिक संघ के अध्यक्ष पद से हटने के बाद किसी कार्यवाहक या अंतरिम अध्यक्ष को मान्यता नहीं देने का फैसला भी किया गया था। उसने कहा था कि वह किसी भी विषय पर बात करने के लिए महासचिव राजीव मेहता से संपर्क करेगा।

परगट सिंह ने मेलबर्न कप ट्रॉफी का अनावरण किया

मेलबर्न, 22 सितंबर। भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान और विधायक ओलंपियन परगट सिंह ने गुरुवार को पहले मेलबर्न हॉकी कप की विजेता ट्रॉफी का अनावरण किया। इस अवसर पर पाकिस्तान हॉकी टीम के पूर्व कप्तान वसीम अहमद और 1980 के मास्को ओलंपिक खेलों में भारतीय हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व करने वाली ओलंपियन हरप्रीत शेरगिल विशेष रूप से उपस्थित थीं।

परगट सिंह ने मेलबर्न हॉकी कप के प्रायोजकों का शुक्रिया अदा किया और कहा कि उनके सहयोग के बिना ऑस्ट्रेलिया में इतना बड़ा टूर्नामेंट आयोजित करना संभव नहीं होता। वसीम अहमद ने कहा कि हॉकी पंजाबियों के खून में है इसलिए हॉकी प्रेमी एक साथ आगे आए हैं और वे सभी बधाई के पात्र हैं। ओलंपियन हरप्रीत शेरगिल ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि लंबे समय के बाद उन्हें हॉकी परिवार का हिस्सा बनने पर गर्व है। उन्होंने कहा कि वह हॉकी का मैदान छोड़ चुकी थीं लेकिन इस टूर्नामेंट ने उन्हें फिर से हॉकी से जोड़कर एक नया जीवन दिया है। मेलबर्न कप का आयोजन ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न शहर के मेलबर्न स्पोर्ट्स सेंटर पार्कविले में 23 से 25 सितंबर तक किया जायेगा।

टी-20 टिकट बिक्री : भगदड़ में छह लोग घायल

हैदराबाद, 22 सितंबर। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच उप्पल के राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में रविवार को होने वाले तीसरे टी20 मैच की टिकटों की बिक्री के दौरान गुरुवार को जिमखाना मैदान में भगदड़ हुई, जिसमें दो महिलाओं सहित कम से कम छह प्रशंसक मामूली रूप से घायल हो गए।

पुलिस ने यहां बताया कि घायलों को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने बताया कि हैदराबाद क्रिकेट एसोसियेशन (एचसीए) को टिकटों की बिक्री के लिये आठ से 10 काउंटर लगाने थे, लेकिन उन्होंने सिर्फ दो काउंटर खोले।

पुलिस ने यह भी कहा कि हैदराबाद क्रिकेट एसोसिएशन (एचसीए) के कुप्रबंधन के कारण जिमखाना मैदान में भगदड़ की घटना हुई। तेलंगाना के खेल मंत्री वी श्रीनिवास गौड़ ने इस घटना पर कड़ा रुख अपनाते हुए चेतावनी दी कि टी20 के लिए कालाबाजारी में टिकट बेचने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। मंत्री ने मैच की व्यवस्था को लेकर एसोसिएशन के सदस्यों के साथ समीक्षा बैठक की। साथ ही उन्होंने टिकटों की बिक्री एवं स्टेडियम में दर्शकों के इंतजाम संबंधी रिपोर्ट तलब की।

इससे पहले एचसीए ने एक विज्ञिप्त जारी कर कहा था कि 22 सितंबर को जिमखाना ग्राउंड में टिकट ऑफलाइन खरीदारी के लिए पूर्वाह्न 10:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक उपलब्ध होंगे। लोग आज सुबह से ही टिकट खरीदने के लिए कतार में लग गए हैं। पेटीएम ऐप के जरिए 15 सितंबर को ऑनलाइन टिकटों की बिक्री मिनटों में ही खत्म हो गयी थी।

खिताब और वाटिका के बीच बस एक मैच, रेंजर्स परास्त

नयी दिल्ली, 22 सितंबर। वाटिका एफसी ने गुरुवार को प्रीमियर लीग के 19वें मैच में में रेंजर्स क्लब को 2-0 से परास्त किया और अब वह खिताब से बस एक मैच दूर है। लगातार बारिश के बीच नेहरू स्टेडियम में खेले गए मैच का पहला हाफ तेज गति से खेला गया। पहला गोल मैन ऑफ द मैच विजोय गुसाईं ने लंबी दूरी के नपे तुले शॉट से चौथे मिनट में किया। 40वें मिनट में नाइजीरियन फ्रांसिस ओकेचुकू ने स्कोर 2-0 किया।

इंद्रजीत का शतक, दक्षिण ने बनायी बढ़त

कोयंबटुर, 22 सितंबर। दक्षिण क्षेत्र ने बाबा इंद्रजीत (118) के शानदार शतक और रविश्रीनिवासन साई किशोर (86/5) के पंजे की बदौलत पश्चिम क्षेत्र के खिलाफ दलीप ट्रॉफी फाइनल के दूसरे दिन गुरुवार को 48 रन की बढ़त बना ली।

दक्षिण ने दिन का खेल शुरू होते ही पश्चिम को 270 रन पर ऑलआउट कर दिया, और स्टंप्स तक सात विकेट के नुकसान पर 318 रन बनाये। साई किशोर ने हेत पटेल के रूप में दिन का पहला विकेट लिया जो अपना शतक बनाने से चूके और 98 रन बनाकर पवेलियन लौट गये। पटेल ने 198 गेंदों की पारी में छह चौके और एक छक्का लगाया। साई किशोर ने कुछ देर बाद चिंतन गज (10) के रूप में अपना पांचवां विकेट लेकर पश्चिम को ऑलआउट किया, जबकि उनडकट 47 रन बनाकर नाबाद रहे। दक्षिण ने 270 रन के जवाब में मयंक अग्रवाल (09), रोहन कुन्नुमल (31) और कप्तान हनुमा विहारी (25) के विकेट 101 रन पर गंवा दिये। इसके बाद इंद्रजीत ने मनीष पांडे (48) के साथ मिलकर चौथे विकेट के लिये 105 रन की साझेदारी की। पांडे ने 69 गेंदें खेलते हुए चार चौके और दो छक्के भी जड़े।

दूसरी ओर, इंद्रजीत ने गेंदबाजों के लिये मददगार विकेट पर पारंपरिक शॉट लगाते हुए आक्रामक पारी खेली। 112 गेंदों पर शतक पूरा करने वाले इंद्रजीत ने आउट होने से पहले 125 गेंदें खेलकर 14 चौकों के साथ 118 रन बनाये। उन्होंने और मनीष ने दूसरे सत्र में स्पिन गेंदबाजों पर खुलकर रन बटोरे। पांडे ने तनुष कोटियान को पहले दो लगातार चौके जड़े, जिसके बाद उन्होंने ऑफ-स्पिनर को कवर पर एक चौका और एक छक्का लगाया। इंद्रजीत ने भी अपनी बाहें खोलते हुए शम्स मुलानी की गेंदों पर दो चौके जमाए। कोटियान और मुलानी ने दूसरे सत्र में 19 ओवर फेंककर 109 रन दिये।

तीसरे सत्र के पहले ओवर में इंद्रजीत का विकेट गिरने के बाद पश्चिम क्षेत्र की कुछ उम्मीदें जगी थीं, लेकिन कृष्णप्पा गौतम ने 55 गेंदों पर तीन चौकों और तीन छक्कों की बदौलत 43 रन की पारी खेलकर दक्षिण के लिये 48 रन की बढ़त सुनिश्चित की। दिन का खेल खत्म होने तक दक्षिण ने 318 रन बनाये और टी रवि तेजा (26) और साई किशोर (06) क्रीज पर मौजूद हैं।

लावेर कप में युगल में साथ खेलेंगे फेडरर और नडाल

लंदन, 22 सितंबर। रोजर फेडरर और रफेल नडाल लावेर कप में शुक्रवार को युगल मुकाबला साथ खेलेंगे और यह फेडरर के सुनहरे कैरियर का आखिरी मैच भी होगा। बीस बार के ग्रैंडस्लैम चैम्पियन फेडरर और लंबे समय से कोर्ट पर उनके प्रतिद्वंद्वी रहे 22 ग्रैंडस्लैम विजेता नडाल टीम यूरोप के लिये टीम विश्व के फ्रांसिस टियाफो और जैक सॉक के खिलाफ खेलेंगे। फेडरर की प्रबंधन कंपनी ने बृहस्पतिवार को इसकी घोषणा की। एकल मैचों में कैस्पर रूड का सामना सॉक से, स्टेफानोस सिटसिपास का सामना डिएगो श्वार्त्जमैन से और एंडी मर्रे की टक्कर एलेक्स डि मिनाउर से होगी।

भारत ने 23 साल बाद इंग्लैंड में जीती एकदिवसीय श्रृंखला

कैंटरबरी, 22 सितंबर। भारत ने हरमनप्रीत कौर (143 नाबाद) के विशाल शतक के बाद रेणुका सिंह ठाकुर (57/4) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत इंग्लैंड को दूसरे महिला वनडे में 88 रन से हराकर 23 साल बाद ब्रिटिश सरजमीन पर एकदिवसीय शृंखला जीती। भारत ने बुधवार को खेले गये मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 333 रन बनाये, जिसके जवाब में इंग्लैंड 245 रन ही बना सकी।

इस जीत के साथ भारत ने तीन मैचों की एकदिवसीय शृंखला में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल की और 1999 के बाद पहली बार इंग्लैंड में एकदिवसीय सीरीज जीती। हरमनप्रीत ने भारत के लिये कप्तानी पारी खेलते हुए 111 गेंदों पर 18 चौकों और चार छक्कों की बदौलत 143 रन बनाये। उनका साथ देते हुए हरलीन देओल ने भी 58 रन जोड़े।

इंग्लैंड की ओर से डेनियल वायट ने 58 गेंदों पर छह चौकों के साथ 65 रन की जुझारू पारी खेली, लेकिन रेणुका की गेंद पर उनका विकेट गिरने के साथ ही इंग्लैंड की उम्मीदों पर पूर्ण विराम लग गया। रेणुका ने अपनी घातक गेंदबाजी की बदौलत 10 में 57 रन देकर चार विकेट चटकाये। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने के लिये बुलाये जाने पर भारत की शुरुआत अच्छी नहीं रही और सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा (08) एक बार फिर जल्दी पवेलियन लौट गयीं। स्मृति मंधाना ने अपनी शानदार फॉर्म को बरकरार रखते हुए 51 गेंदों पर 40 रन बनाये और यस्तिका भाटिया (26) के साथ दूसरे विकेट के लिये 54 रन की साझेदारी की। स्मृति और यस्तिका के आउट होने के बाद हरमनप्रीत ने मोर्चा संभाला और हरलीन के साथ चौथे विकेट के लिये 113 रन की विशाल साझेदारी की। हरलीन ने अपना पहला एकदिवसीय अद्धर्शतक जड़ते हुए 72 गेंदों पर पांच चौकों और दो छक्कों के साथ 58 रन बनाये।

हरलीन के पवेलियन लौटने के बाद हरमनप्रीत ने पारी की रफ्तार बदली और अपना पांचवां एकदिवसीय शतक पूरा किया। उनकी विस्फोटक बल्लेबाजी की बदौलत भारत ने अंतिम पांच ओवरों में 80 रन जोड़े और 50 ओवर में पांच विकेट के नुकसान पर 333 रन बनाये। पूजा वस्त्राकर ने 18(16) और दीप्ती शर्मा ने 15(09) रन का योगदान दिया।

इंग्लैंड की ओर से लौरेन बेल, केट क्रॉस, फ्रेया केंप, शारलोट डीन और सोफी एकलेस्टन ने एक-एक विकेट निकाला। केंप (10 ओवर, 82 रन) और बेल (10 ओवर, 79 रन) इंग्लैंड के लिये महंगी साबित हुईं।

इंग्लैंड ने 334 रन के बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए आवश्यक रनगति बनाये रखी लेकिन लगातार विकेट भी गंवाये। सलामी बल्लेबाज टैमी बोमॉन्ट (06) रन चुराने के प्रयास में हरमनप्रीत के थ्रो का शिकार हो गयीं। रेणुका ने सोफिया डंकली को एक रन के स्कोर पर बोल्ड किया, जबकि एमा लैंब (15) को पगबाधा करके पवेलियन लौटाया। एलिस कैपसी अच्छी शुरुआत को बड़ी पारी में नहीं बदल सकीं और 36 गेंदों पर छह चौकों के साथ 39 रन बनाकर आउट हो गयीं।

इंग्लैंड के 102 रन पर चार विकेट गिरने के बाद वायट और कप्तान एमी जोन्स ने 65 रन की बहुमूल्य साझेदारी की, लेकिन 30वें ओवर में वायट के आउट होते ही मैच इंग्लैंड की पकड़ से दूर हो गया। कुछ देर बाद जोन्स भी 39(51) रन बनाकर आउट हो गयीं। आखिरी दो विकेटों के लिये 62 रन जोड़ने के बाद भी इंग्लैंड को 88 रन के विशाल अंतर से हार मिली। रेणुका के चार विकेटों के अलावा भारत के लिये दयालन हेमलता ने दो विकेट लिये, जबकि शफाली वर्मा और दीप्ती शर्मा को एक-एक विकेट हासिल हुआ।

नदबई में बारिश बनी आफत

- भारी बारिश से ज्वार व बाजरे की फसल बर्बाद हो गई।
- गगवाना के सरपंच हरस्वरूप शर्मा ने सरकार से फसल खराबे के मुआवजे की मांग की।

नदबई, 22 सितम्बर (निस)। प्रदेश में गुरुवार को शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में हुई तेज अंधड़ व बारिश किसानों के लिए आफत बन गई।

ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश गांवों में बारिश होने से किसानों के खेत में रखी ज्वार व बाजरे की फसल नष्ट हो गई है। तेज बारिश से फसल बर्बाद होने की स्थिति में किसानों के चेहरे मायूस नजर आए।

ग्राम पंचायत गगवाना के गांव चैनपुरा, बसईया, गगवाना के किसानों की फसलें बारिश की वजह से पूरी तरह नष्ट हो गई। ग्राम पंचायत गगवाना के सरपंच हरस्वरूप शर्मा ने सरकार से किसानों की खराब हुई फसल का सर्वे कराकर मुआवजा दिलाने की मांग की है।

ज्वार व बाजरा की फसल खराब होने की स्थिति में किसानों को पशुओं के चारे को लेकर भी चिंता सताने लगी। बारिश से पहले जहां किसान फसल को देखते हुए अपनी खुशी जता रहे थे, वहीं अब बारिश में फसल खराब होने पर मायूस बने हुए है।

दूसरी ओर तकनीकी शिक्षा एवं आयुर्वेद राज्यमंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने क्षेत्र में पिछले दो दिनों से हो रही वर्षा के कारण खरीफ की फसलों को हुए नुकसान की विशेष गिरदावरी कराने के निर्देश जिला कलेक्टर को दिये हैं। इसी प्रकार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, कृषि मंत्री लालचन्द कटारिया एवं आपदा प्रबंधन व सहायता मंत्री गोविन्दराम मेघवाल को भी अलग-अलग पत्र लिखकर अतिवृष्टि के कारण खरीफ की फसलों के हुये नुकसान की किसानों को क्षतिपूर्ति के लिए आर्थिक सहायता स्वीकृत करने की भी मांग की है।

डॉ. गर्ग ने जिला कलक्टर आलोक रंजन को निर्देश दिये कि, वर्षा के कारण खरीफ की खेतों में खड़ी अथवा कटी हुई फसलों को हुए नुकसान के लिए तत्काल विशेष गिरदावरी शुरु करायें ताकि फसल खराबे वाले किसानों को नियमानुसार मुआवजा मिल सके।

नदबई में अचानक तेज बारिश के कारण खेत में सूखने के लिए पड़ी बाजरे की फसल भीग गई। ज्वार व बाजरे की फसल को हुये नुकसान के चलते किसानों के चेहरों पर भारी मायूसी नज़र आई।

'रूस की मिसाइलें सीधे लंदन में जाकर गिरेंगीं'

रूस के राष्ट्रपति पुतिन के पूर्व सलाहकार सेरगेई मारकोव ने ब्रिटेन को यह बड़ी धमकी दी

मॉस्को, 22 सितम्बर। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के पूर्व सलाहकार सेरगेई मारकोव ने यूक्रेन युद्ध में दखल के चलते ब्रिटेन को बड़ी धमकी दी है। मारकोव ने कहा कि यदि युनाइटेड किंगडम का ऐसा ही आक्रामक रवैया जारी रहा तो फिर मिसाइलों का निशाना लंदन हो सकता है। बुधवार को बी.बी.सी. के एक कार्यक्रम में मारकोव ने यह बात कही। उन्होंने ब्रिटेन को चेतावनी देते हुए कहा कि तुम्हारे शहरों को निशाना बनाय जाएगा। उन्होंने कहा कि यह सुबह सबके लिए अच्छी नहीं है। फिलहाल मारकोव मॉस्को यूनिवर्सिटी में इंटरनेशनल रिलेशंस के प्रोफेसर हैं। एक दौर में वह व्लादिमीर पुतिन के सलाहकार रहे हैं।

सेरगेई मारकोव ने कहा कि व्लादिमीर पुतिन ने आपको बता दिया है कि वे पश्चिमी देशों के खिलाफ परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने के लिए तैयार हैं। इसमें ग्रेट ब्रिटेन भी शामिल है। मारकोव ने कहा, यदि रूस के खिलाफ ब्रिटेन ने अपना आक्रमणकारी रवैया जारी रखा तो फिर ऐसा हो सकता है। यदि ब्रिटिश पी.एम. लिज ट्रस ने रूस को बर्बाद करने का अपना प्लान बंद नहीं किया तो फिर लंदन की जनता को समझना चाहिए कि वे भी परमाणु हथियारों की जद में हैं। पुतिन के पूर्व सलाहकार की इस चेतावनी को गंभीरता से लिया जा रहा है।

पश्चिमी देशों पर यूक्रेन को बड़े पैमाने पर हथियार देने के आरोप लगाते हुए मारकोव ने कहा कि यह युद्ध जो बाइडेन, ब्रिटेन के पूर्व पी.एम. बोरिस जॉनसन और मौजूदा प्रधानमंत्री लिज ट्रस की सनक के चलते हो रहा है। उन्होंने कहा कि इन देशों ने ही यूक्रेन को हथियार दिए हैं और उसे युद्ध के लिए उकसाया है।

बता दें कि यूक्रेन और रूस के बीच बीते 7 महीनों से जंग चल रही है। इस बीच रूस ने इस युद्ध को और आगे बढ़ाने के संकेत दिए हैं। पुतिन ने मंगलवार को ही 20 लाख की रिजर्व सेना में से 3 लाख सैनिकों को यूक्रेन भेजने का ऐलान किया था। इससे माना जा रहा है कि रूस की ओर से यूक्रेन पर हमलों को तेज किया जा सकता है।

उदयपुर से भी दो संदिग्ध गिरफ्तार

उदयपुर, 22 सितम्बर (कासं)। नैशनल इंवेस्टिगेशन एजेंसी की टीम ने देश भर में पी.एफ.आई. के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के दौरान इस संगठन से जुड़े उदयपुर के दो संदिग्धों को हिरासत में लिया है। एन.आई.ए. ने अभियान के दौरान उदयपुर के खांजीपीर

- एन.आई.ए. ने शहर के खांजीपीर क्षेत्र से ये गिरफ्तारियां की हैं।
- एन.आई.ए. को पता चला है कि, ये दोनों व्यक्ति टैरर फंडिंग व टैरर ट्रेनिंग में लिप्त रहे हैं।

क्षेत्र से दो संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया है। संदिग्धों की पहचान मोहम्मद इरफान व मोहम्मद सलीम के रुप में उजागर की गई है। सूत्रों से पता चला कि, एनआई को टैरर फंडिग व कैंप लगा कर बच्चों को टैरर ट्रैनिंग देने के इनपुट भी मिले हैं। इस अभियान में एनआईए के साथ साथ इन्फोर्समेड डायरेक्ट्रेट (ई.डी.) की टीम भी शामिल है। जो प्रदेश के जयपुर, कोटा, बारा, उदयपुर सहित विभिन्न स्थानों पर पीएफआई से जुड़े स्थानों पर दबीश दे रही है।

जयपुर में पीएफआई के कार्यालय पर एनआईए ने छापा मारा

- पुलिस सूत्रों के अनुसार, लाल कोठी के पास स्थित कार्यालय से सर्च के दौरान कई संदिग्ध दस्तावेज व अन्य सामान जब्त किया।

जयपुर, 22 सितम्बर। पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पी.एफ.आई.) और इससे जुड़े लोगों, संस्थानों पर पूरे देश में एक साथ छापेमारी की कार्रवाई की जा रही हैं। इसी के तहत जयपुर में बुधवार देर रात को जयपुर में लाल कोठी के पास पी.एफ.आई. कार्यालय में सर्च किया गया।

इस दौरान कई संदिग्ध दस्तावेज व अन्य सामान जब्त किये गये हैं। पुलिस सूत्रों के अनुसार राज्य के पांच शहरों में भी एन.आई.ए. से बुधवार देर रात से सुबह तक सर्च ऑपरेशन की कार्रवाई की है। इस दौरान जयपुर में एमडी रोड पर स्थित प्रदेश स्तरीय कार्यालय पर भी एन.आई.ए. ने रेड डाली।

सुबह नौ बजे तक चली रेड में संदिग्ध दस्तावेज, हार्ड डिस्क, झंडे, प्रतिबंधित साहित्य और किताबें मिली हैं। बताया जा रहा है कि, इस रेड में ईडी के अफसर भी साथ हैं। इस कार्रवाई से स्थानीय पुलिस को दूर रखा गया है। सीआरपीएफ और अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ ही यह रेड की गई है। जयपुर पुलिस को इस बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दी गई है। जयपुर में अभी 3 जगहों पर कार्रवाई की जा रही है।

गौरतलब है कि, दो साल पहले भी ईडी ने जयपुर में पी.एफ.आई. के दफ्तर पर छापा मारा था। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पी.एफ.आई. के खिलाफ टेरर फंडिग और कैम्प चलाने के इनपुट को मिले हैं। उसी के आधार पर यह कार्रवाई की गई है। सूत्रों के अनुसार दो दिन से एन.आई.ए. की टीमें राजस्थान के कोटा, बारां, उदयपुर, अजमेर और जयपुर में कार्रवाई करने में जुटी है।

उधर एन.आई.ए. की कार्रवाई के विरोध में जयपुर समेत कई शहरों में प्रदर्शन किया जा रहा है। हालांकि इस बीच संगठन से जुड़े कई बड़े नेता भूमिगत हो गए हैं। उनकी सर्च के लिए एनआईए लगातार प्रयासरत है।

शिंज़ो आबे

नई दिल्ली, 22 सिंतबर (वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे के राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए 27 सितंबर को जापान की एक दिन की यात्रा पर जाएंगे।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने यहां नियमित ब्रीफिंग में संवाददाताओं को यह जानकारी दी और कहा कि मोदी जापान के प्रधानमंत्री फूमियो किशिदा से भी मुलाकात करेंगे। आबे की आठ जुलाई को जापान के नारा शहर में उनके प्रचार भाषण के दौरान एक 41 वर्षीय शख्से ने बहुत नज़दीक से गोली मार कर हत्या कर दी थी। वह

- शिंज़ो आबे की अंत्येष्टि में शामिल होने जापान जायेंगे प्र.मंत्री मोदी।

दो बार जापान के प्रधानमंत्री रहे।

आबे को राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार देश में असाधारण घटना के रूप में देखा जा रहा है। इसमें कई विदेशी राजनेता भी शामिल होंगे जिनमें मोदी एवं श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे शामिल हैं। प्रधानमंत्री मोदी की श्रीलंका के राष्ट्रपति से मुलाकात की संभावना के बारे में पूछे जाने पर प्रवक्ता ने कहा कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी। चूंकि मोदी की यात्रा एक दिन की होगी और समय की कमी होगी।

एन.आई.ए ने आधी रात के बाद 11 राज्यों में एक साथ पी.एफ.आई. के ठिकानों पर छापे मारे

मुख्य रूप से पी.एफ.आई. को विदेशी सहायता प्राप्त होने के प्रमाण के आधार पर ये छापे डाले गये

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पी.एफ.आई.) के खिलाफ नैशनल इन्वैस्टिगेशन एजेंसी (एन.आई.ए.) ने देश के 11 राज्यों में एक साथ छापे मारे। पूरे देश भर में 106 लोगों की गिरफ्तारी हुई है। इस बीच एन.आई.ए. के ऑपरेशन को लेकर बड़ा खुलासा हुआ है। इस ऑपरेशन के लिए गृह मंत्रालय में कमांड सेंटर बनाया गया था। 6 कंट्रोल रूम के जरिए इस पूरे ऑपरेशन की निगरानी की गई। यह पूरा ऑपरेशन सुबह 1 बजे से लेकर सुबह 5 बजे तक चला। इस दौरान एन.आई.ए. के सभी बड़े अधिकारी मौजूद थे।

छापेमारी की इस पूरी कार्रवाई को पूरी तरह से गुप्त रखा गया। इस पूरे ऑपरेशन में एन.आई.ए. के 200 स्टाफ शामिल थे। के 4 आईजी, 1 ए.डी.जी. और 16 एस.पी. इस पूरे ऑपरेशन में शामिल रहे। इसका कमांड कंट्रोल संटेर गृह मंत्रालय में था। पी.एफ.आई. से जुड़े संदिग्धों के सभी डोजियर छापे वाली

- देश भर में 106 लोगों की गिरफ्तारी हुई, ऑपरेशन के लिए गृह मंत्रालय को कमाण्ड सैंटर बनाया गया।
- यह पूरा ऑपरेशन रात 1 बजे से लेकर सुबह 5 बजे तक चला। इस दौरान एन.आई.ए. के सभी बड़े अधिकारी मौजूद थे। छापेमारी की इस पूरी कार्रवाई को पूरी तरह से गुप्त रखा गया। इस पूरे ऑपरेशन में एन.आई.ए. के 200 स्टाफ शामिल थे।
- पी.एफ.आई. की केरल इकाई ने इन छापों के खिलाफ आज शुक्रवार को बंद एवं विरोध प्रदर्शन का आह्वान किया है।

टीम को दिए गए। सभी संदिग्धों की रेकी पिछले एक सप्ताह से ज्यादा समय से की जा रही थी। छापे में 200 से अधिक मोबाइल, 100 से अधिक लैपटॉप जब्त किए गए। इसके साथ ही कई आपत्तिजनक दस्तावेज, विजन दस्तावेज, नामांकन फॉर्म, बैंक डिटेल्स भी जब्त किए गए हैं।

पी. एफ.आई. ने नेताओं के घरों और अन्य परिसरों में छापेमारी के विरोध में 23 सितंबर को हड़ताल का आह्वान किया है। ये छापेमारी देश में आतंकी गतिविधियों का कथित तौर पर समर्थन करने के लिए की गई थी। भाजपा की प्रदेश इकाई ने हालांकि इस प्रस्तावित हड़ताल को "अनावश्यक" बताया और राज्य सरकार से इसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का आग्रह किया।

भाजपा की प्रदेश इकाई के प्रमुख के. सुरेंद्रन ने आरोप लगाया कि पी.एफ.आई. द्वारा पूर्व में आहूत सभी हड़ताल में दंगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य के प्राधिकारियों को लोगों के जीवन और संपत्ति की पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।

उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि पी.एफ.आई. बाहुबल के जरिये आतंकवाद के मामलों से निपटने की कोशिश कर रहा है और उसके नेतृत्व से यह ध्यान रखने को कहा कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है न कि एक धार्मिक राष्ट्र। सुरेंद्रन ने एक बयान में कहा कि अनावश्यक हड़ताल के खिलाफ उच्च न्यायालय के कड़े रूख के बावजूद राज्य में वामपंथी सरकार वोट बैंक पर नजर रखते हुए पी.एफ.आई. के प्रति नरम रुख दिखा रही है।

ओडिशा में कार से एक क्विंटल चांदी की ईटें व कैश मिला

कटक, 22 सितम्बर (वार्ता)। ओडिशा के कटक में आबकारी अधिकारियों की टीम ने टांगी टोल गेट के पास एक कार से 100 किलोग्राम से ज्यादा वजन की 47 चांदी की ईंटें, 19 पैकेट में चांदी के गहने और 14 लाख रुपये नकद जब्त किए।

आबकारी विभाग के सूत्रों ने बताया कि प्रतिबंधित गांजा की तस्करी की सूचना के आधार पर कार को रोका गया। तलाशी के दौरान उसमें छुपाकर रखी गयी चांदी की ईंटें, गहने, कुछ दस्तावेज और नकदी बरामद किये गये। चांदी की ईंटें कागज में लपेटकर रखी गई थीं। आबकारी अधिकारियों ने वाहन चालक सहित दो लोगों को गिरफ्तार किया है और पूछताछ की। उन्होंने आशंका जतायी है कि इस वाहन को सोने और चांदी की तस्करी करने के लिए डिजाइन किया गया है तथा संभवत: इसका उपयोग पहले भी तस्करी में किया गया होगा।

ऑल इंडिया इमाम ऑर्गनाइज़ेशन के प्रमुख से मुलाकात की मोहन भागवत ने

मुलाकात के बाद भागवत अचानक पास में ही चलने वाले एक मदरसे में पहुंच गये और वहां बच्चों से मुलाकात की

- कहा जा रहा है कि, मुस्लिम समुदाय से संपर्क साधने के अभियान के तहत मोहन भागवत का यह दौरा हुआ है। मोहन भागवत ने इमाम से करीब एक घंटे तक मुलाकात की। भागवत के साथ संघ के वरिष्ठ नेता कृष्ण गोपाल, राम लाल और इंद्रेश कुमार भी थे।

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के मुखिया मोहन भागवत गुरुवार को अचानक दिल्ली की कस्तूरबा गांधी मार्ग मस्जिद में पहुंचे तो हर कोई हैरान रह गया। इस दौरान उन्होंने ऑल इंडिया इमाम ऑर्गनाइजेशन के प्रमुख उमर अहमद इलियासी से मुलाकात की। यही नहीं इसके बाद मोहन भागवत मस्जिद के पास ही चलने वाले मदरसे में भी पहुंच गए और छात्रों से बात की। कहा जा रहा है कि मुस्लिम समुदाय से संपर्क साधने के अभियान के तहत मोहन भागवत का यह दौरा हुआ। इस दौरान मोहन भागवत ने इमाम से करीब एक घंटे तक मुलाकात की। मोहन भागवत के साथ संघ के वरिष्ठ नेता कृष्ण गोपाल, राम लाल और इंद्रेश कुमार भी थे।

मीटिंग के बाद इमाम उमर अहमद इलियासी ने तो मोहन भागवत को राष्ट्रपिता बता दिया और कहा कि आर.एस.एस. चीफ उनके निमंत्रण पर मदरसा तजवीदुल कुरान में आए थे। इस दौरान उन्होंने मदरसे में पढ़ने वाले बच्चों से बात भी की। इंद्रेश कुमार ने बताया कि मोहन भागवत से बच्चों की क्या बात हुई। उन्होंने कहा कि मोहन भागवत ने बच्चों से पूछा कि आखिर वे क्या पढ़ते हैं और जिंदगी में क्या बनना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि ज्यादातर बच्चों ने बताया कि वे डॉक्टर या इंजीनियर बनना चाहते हैं। इस दौरान इमाम उमर अहमद इलियासी ने भागवत को बताया कि बच्चों को यहां मजहबी शिक्षा देने के अलावा आधुनिक विषयों की पढ़ाई भी कराई जाती है।

आर.एस.एस. चीफ से मुलाकात के दौरान मदरसे के छात्रों ने जय हिंद और वंदे मातरम के नारे भी लगाए। मदरसे में पढ़ाने वाले महमूद हसन ने कहा कि बेहद सौहार्दपूर्ण माहौल में मोहन भागवत से बच्चों की मुलाकात हुई। उन्होंने कहा कि मोहन भागवत ने बच्चों से कहा कि वे इस्लामिक विषयों के अलावा कंप्यूटर के बारे में भी जानकारी हासिल करें।

एक हिजाब पर दो ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और अब तमिलनाडु के रामनाथपुरम में पिछले दिन वही हिजाब मुद्दा सामने आया, जहां स्कूल की प्रधानाध्यापिका ने दो बालिकाओं द्वारा हिजाब पहने जाने पर आपत्ति जताई तथा हिजाब पहनने वाली छात्राओं से कह दिया कि कक्षा-कक्षों में प्रवेश करने से पहले, वे अपने स्कॉर्फ (हिजाब) को उतार कर अपने-अपने बैगों में रख लिया करें।

अगर यह घटना दक्षिण में हिन्दुत्व की प्रयोगशाला में, यानी कर्नाटक में हुई होती तो अधिकारियों ने प्रधानाध्यापिका का समर्थन किया होता। लेकिन तमिलनाडु में ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि वहां हिजाब पर रोक नहीं है।

यह मुद्दा तुरंत ही समाप्त कर दिया गया। राज्य के शिक्षा विभाग ने संस्था प्रधानों तथा गलती करने वाली स्कूल प्रधानाध्यापिका को स्पष्ट कर दिया कि हिजाब पहनने तथा नहीं पहनने का चुनाव पूरी तरह से छात्राओं की मर्जी है। विभाग ने यह स्पष्ट घोषणा कर दी कि विद्यालय-प्रशासन ऐसे मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

दो पड़ोसी राज्यों-तमिलनाडु तथा कर्नाटक की सरकारों की इस मुद्दे पर सोच एवं संबंधित प्राथमिकताओं का विरोध पूरी तरह तथा साफ दिखाई दे रहा है। अगर हम इन दोनों सरकारों को बिल्कुल ताजा कदमों और पहलों पर नजर डालें तो हम पायेंगे कि तमिलनाडु ने जहां समाज के कमजोर वर्गों के स्कूली बच्चों को नि:शुल्क नाश्ता उपलब्ध कराने का कदम उठाया है, वहीं कर्नाटक सरकार अपनी ऊर्जा धर्मान्तरण विरोधी विधेयक पेश करने में खर्च कर रही है क्योंकि उसकी नजरें संभवत: आगामी विधानसभा चुनाव पर हैं।

'द तिरूमला...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अमीर धर्मस्थल की व्यवस्था देखता है। वैटिकन के लिए कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की मदद लेना शुरु कर दिया था। देश भर के विभिन्न मंदिरों में अब कमोबेश यह तकनीक इस्तेमाल हो रही है। रोजमर्रा के काम काज को आसान बनाने और आम समस्याओं के हल के लिए टैक्नॉलजी के इस्तेमाल के प्रति रुझान के चलते टी.टी.डी. ने एक मोबाइल ऐप्लीकेशन तैयार की है जो देश भर से आने वाले अलग-अलग भाषा वाले व्यक्तियों को भाषा की समस्या दूर कर देगी। सोमवार और मंगलवार को इस ऐप का सफल ट्रायल हुआ।

ऐप का नाम है "द तिरुमला गाइड" जो यहां आने वाले भक्तों के लिए फायदेमंद है। इसमें भक्तों की समस्त आवश्यक जानकारी, जैसे गैस्ट हाउस, लड्डू, काउंटर, वैकुण्ठम क्यू कॉम्प्लैक्स, सतर्कता ऑफिस, हॉस्पीटल, म्यूजियम, पुलिस, प्रशासन व अन्य सेवाओं की जानकारी दी गई है। टी.टी.डी. को भरोसा है यह सभी के लिए मददगार होगी।

'निर्धन सवर्णों को दिया गया...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

टी. का आरक्षण आठवें दशक में प्रवेश कर चुका है, जबकि ई.डब्ल्यु.एस. आरक्षण जनरल कैटेगरी के कमजोर तबके में आर्थिक मजबूती आने और उनके लिविंग स्टैण्डर्ड्स में सुधार आने के साथ ही कमज़ोर पड़ जाएगा। इस प्रकार से उन्होंने सुझाया कि ई.डब्ल्यु.एस. आरक्षण चिरस्थायी रहने वाला नहीं है।

इस तर्क का जवाब देते हुए ई.डब्ल्यु.एस. के 10 प्रतिशत आरक्षण में एस.सी., एस.टी. और ओ.बी.सी. के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को भी शामिल किया जाना चाहिए था अटॉर्नी जनरल वेणुगोपाल ने कहा कि इस प्रकार की समझ एक ऐसी स्थिति की ओर ले जाती, जहां एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी. और जनरल कैटेगरी के इकोनॉमिकली वीकर सैक्शन, चारों वर्गों को ई.डब्ल्यु.एस. के 10 प्रतिशत आरक्षण में से 2.5 प्रतिशत आरक्षण मिलता।

अटॉर्नी जनरल ने कहा कि इस प्रकार की स्थिति से एस.सी./एस.टी. तथा ओ.बी.सी. को दिये जा रहे 50 प्रतिशत आरक्षण की सीमा का अतिक्रमण हो जायेगा, जिसे 1992 में इन्द्रा साहनी फैसले में सर्वोच्च न्यायालय की नौ जजों की बैंच ने शुरु किया था।

यह दलील देते हुये कि असमानों को समान नहीं माना जा सकता, अटॉर्नी जनरल ने उन जबरदस्त लाभों का उल्लेख किया, जो एस.सी./एस.टी. को मिलते हैं। उन्होंने पंचायत, स्थानीय नियाय, राज्य-विधायिका तथा लोकसभा में इन्हें मिल रहे आरक्षण का उल्लेख किया।

अटॉर्नी जनरल ने कहा कि जहां तक ई.डब्ल्यु.एस. आरक्षण का प्रश्न है यह सिर्फ शिक्षा व सरकारी नौकरी में ही लागू होगा तथा गरीब आबादी की आर्थिक स्थिति सुधरने पर वे इस आरक्षण के दायरे से बाहर आ जाएंगे।

उन्होंने कहा कि ई.डब्ल्यु.एस. आरक्षण एक सकारात्मक कार्यवाही या और कुछ बताया जा सकता है लेकिन यह आरक्षण संसद की समझ में लाया गया था तथा इस बारे में सांख्यिकीय आँकड़े नहीं दिये गये थे।

एक और...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रदेश को कवर किया जाएगा।

उन्होंने कहा वर्तमान यात्रा यू.पी. में सिर्फ दो दिन रहेगी इसलिए एक पृथक यात्रा आयोजित की जाएगी जिसमें पूरे राज्य को कवर किया जाएगा।

वर्तमान यात्रा दक्षिण से उत्तर में कश्मीर तक की है। उन्होंने कहा पर इसका अर्थ यह नहीं है कि पूर्वी राज्यों, गुजरात और पूर्वोत्तर राज्यों को छोड़ दिया जाएगा।

'मैं किसी के नाम की न चर्चा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाने के फार्मूले पर भी बात हो रही है और यदि ऐसा हुआ तो इस दौड़ में सबसे आगे गोविंद सिंह डोटासरा और शांति धारीवाल का नाम बताया जाता है। वहीं यह भी कहा जा रहा है कि, प्रदेश अध्यक्ष पद पर किसी ब्राह्मण चेहरे को मौका दिया जाएगा इसके लिए महेश जोशी का नाम लिया जा रहा है। हालांकि, कांग्रेस में जब तक फैसला होकर लागू नहीं हो जाए तब तक नामों की चर्चाओं के कयास लगते रहते हैं।

इससे पहले राहुल गांधी ने मीडिया से कहा, "कांग्रेस अध्यक्ष सिर्फ एक संगठनात्मक पद नहीं है, यह एक वैचारिक पद और एक विश्वास प्रणाली है। जो भी कांग्रेस अध्यक्ष बनते हैं, उन्हें याद रखना चाहिए कि वे एक ऐतिहासिक स्थान ले रहे हैं। एक ऐसा स्थान जो भारत के एक विशेष दृष्टिकोण को परिभाषित करता है। कांग्रेस अध्यक्ष को विचारों के एक समूह, एक विश्वास प्रणाली और भारत के एक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करना होगा।"

मीडिया की ओर से, पायलट को मुख्यमंत्री बनाने के सवाल पर अशोक गहलोत ने कहा कि, जो हालात राजस्थान के अंदर हैं, हाईकमान उसकी स्टडी करेगा और देखेगा कि विधायकों की क्या भावना है। यह ध्यान रखना होगा कि, हम अगला चुनाव जीतें, क्योंकि अब कांग्रेस के पास बड़ा राज्य राजस्थान ही है। हमारे लिए यह फैसला बहुत नाजुक फैसला भी होगा और बहुत सोच-समझकर लेना पड़ेगा"। इसी के साथ मुख्यमंत्री गहलोत ने यह भी कहा कि, आज तक इतिहास में कोई कांग्रेस अध्यक्ष मुख्यमंत्री नहीं रहा है, इसलिए स्वाभाविक है कि जो प्रश्न उठते हैं, उसी आधार पर हम लोग भी फैसला करेंगे।

गहलोत ने कहा कि, राष्ट्रीय स्तर पर मुख्य विपक्षी पार्टी की भूमिका में कांग्रेस में फिर से जान डालने के लिए काम करना है, फिर आप दो पद कैसे रख सकते हैं। अब सवाल आता है कि एक व्यक्ति एक पद लागू नहीं होता, फिर भी अध्यक्ष बनने वाले को सोचना होगा कि वह दो पद कैसे रखेगा, वह अध्यक्ष पद को जस्टिफाई नहीं कर पाएगा।

'जो फैसला...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बसपा छोड़कर दूसरी बार कांग्रेस के साथ आने वाले ग्रामीण विकास राज्य मंत्री राजेंद्र सिंह गुढ़ा ने कहा कि हाईकमान जिसे सीएम बनाए वह मंजूर है। सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी जिसे भी मुख्यमंत्री बना दें, हम उस फैसले के साथ हैं। अगर भरोसीलाल जाटव को भी सीएम बनाएंगे तब भी हम साथ हैं।

बसपा से कांग्रेस में आने वाले राजेंद्र गुढ़ा ने कहा कि कांग्रेस में जो भी फैसले होते हैं, उसमें हाईकमान का फैसला मान्य होता है। कम से कम हम छह विधायक जो ग्रुप सिक्स में हैं, उनकी गारंटी है कि वह सभी हाईकमान के साथ हैं।

आखिर ऊंट पहाड़...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हैं, ने दिल्ली पहुँचने के बाद कहा कि सचिन के राजस्थान के मुख्यमंत्री बनने की संभावना है।

कल दिग्विजय सिंह ने कहा था कि कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव के लिये नामांकन पत्र दाखिल करने से पहले, अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ेगा।

यही बात आज राहुल ने दोहराई थी। कल सोनिया गांधी के साथ हुई मीटिंग में, सोनिया गांधी ने अशोक गहलोत से कह दिया था कि उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटना ही होगा तथा इस बात का निर्णय नेतृत्व ही करेगा कि मुख्यमंत्री कौन बनेगा।

कल सुबह गहलोत शिरडी रवाना हो जायेंगे। रोचक बात यह है कि इस "गेम ऑफ थ्रोन्स" में सचिन पायलट, अशोक गहलोत के कुछ कदम आगे ही दिखाई दे रहे हैं।

बताया जाता है कि राहुल गांधी से मिलने के लिये केरल जाने से पहले, सचिन सोनिया गांधी से मिले थे उनके साथ सारी स्थिति पर चर्चा की थी। केरल पहुँचने के बाद, वे पूरे दिन राहुल के साथ पद यात्रा करते रहे तथा उनके साथ चर्चा करते रहे।

अशोक गहलोत, जो जयपुर में अपने विधायकों से कह रहे थे कि इस साल का बजट वे ही पेश करेंगे, सोनिया गांधी से मिलने एक दिन देर से पहुँचे थे तथा राहुल गांधी से मिलने में भी उनसे एक बार पुन: देर हो गई थी।

और गहलोत के इस झाँसे की असलियत भी सामने आ गई है कि सरकार गिर जायेगी।

दरअसल, बसपा नेता राजेन्द्र गुढ़ा ने कह दिया है कि जो भी राजस्थान का मुख्यमंत्री बनेगा, वे उस का समर्थन करेंगे।

गहलोत ने नेतृत्व को एक प्रकार की धमकी दे दी थी कि अगर वे हटाये जाते हैं तो निर्दलियों तथा बसपा द्वारा समर्थन वापस ले लिये जाने से सरकार गिर जायेगी।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908